तृतीय संस्करण
वर्षः तृतीय

माहः
जनवरी 2022
अंक 1

Teachers of Bihar
The Change Makers

जनवरी 2022

दिवस ज्ञान

2022

विशेष संस्करण

शशिधर उज्ज्वल & मधुप्रिया

Teachers of Bihar
The Change Makers

'हम' बदलेंगे शिक्षा की तस्वीर...

टीचर्स ऑफ बिहार
संस्थापकः शिव कुमार
संपर्कः 7250818080
ई–मेलः teachersofbihar@gmail.com
वेबसाइटः www.teachersofbihar.org

प्रकाशनः
टीचर्स ऑफ बिहार

संस्करणः तृतीय
वर्ष : तृतीय
जनवरी, 2022
अंक 1

दिवस ज्ञान संपादकः
शशिधर उज्ज्वल

दिवस विशेष संपादिका :
मधुप्रिया

डिजाइन एवं आवरण :
शशिधर उज्ज्वल

©: बिना अनुमति के व्यावसायिक उपयोग हेतु प्रिंटिंग निषेध

टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा संकलित डिजिटल माध्यम से उपलब्ध निःशुल्क मासिक पत्रिका

दिवस ज्ञान से संबंधित रचनाओं/संकलन को प्रकाशित करने के लिए अथवा सलाह–सुझाव देने के लिए अथवा त्रुटियों की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए हमें संपर्क करें–

ईमेल– project.teachersofbihar@gmail.com
व्हाट्सएप्पः 7004859938

कंटेंट निर्माण सहयोगी टीम

1. शशिधर उज्ज्वल, रा. उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सहसपुर, प्रखण्ड– बारूण, जिला– औरंगाबाद संपर्क 7004859938
2. मो. नसीम अख्तर, राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय मुस्तफापुर उर्दू, प्रखण्ड – चेहराकलाँ, जिला – वैशाली, (बिहार) संपर्कः 9931570020
3. माला कुमारी, मध्य विद्यालय अजनिया, कुटुम्बा (औरंगाबाद) मोबाइलः 9430838807
4. सलमा परवीन, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, रामपुर भभुआ (कैमूर), बिहार
5. केशव कुमार, राजकीय बुनियादी विद्यालय बखरी, प्रखण्ड– मुरौल, जिला– मुजफ्फरपुर, मोबाइल नंबर– 8969900475
6. विवेक कुमार नायक , प्राथमिक विद्यालय, जौनापुर उत्तर टोल , प्रखंड– मोहनपुर (समस्तीपुर) , मोबाइल संख्या– 8084268553
7. मुकेश कुमार, प्राथमिक विद्यालय पथरघट्टी प्रखंड– दिघलबैंक, जिला– किशनगंज मोबाईल– 9931828452
8. रंजेश कुमार, प्राथमिक विद्यालय छुरछुरिया, प्रखंड –फारबिसगंज, जिला अररिया, संपर्कः 8789609259
9. निधि कुमारी (शिक्षिका) , राजकीय मध्य विद्यालय, तेतरिया, प्रखंड–तेतरिया, जिला–पूर्वी चम्पारण, मोबाइलः 6205462062
10. सुरेश कुमार गौरव, उ. मा. विद्यालय, रसलपुर अंचल– फतुहा, जिला– पटना मोबाइल– 7991152858
11. मधुप्रिया, मध्य विद्यालय रामपुर बीएमसी, फारबिसगंज, अररिया, मोबाइल– 8709632006
12. देवकांत मिश्र 'दिव्य' भागलपुर, बिहार मोबाइल– 8298720254
13. धीरज कुमार, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सिलौटा प्रखंड–भभुआ, (कैमूर) मो. न.–9431680675
14. अशोक कुमार, न्यू प्राथमिक विद्यालय, भटवलिया प्रखंड–नुआंव, कैमूर, मोबाइल न.– 7464030618
15. ब्यूटी कुमारी, मध्य विद्यालय मराँची, बछवाड़ा, बेगूसराय, मोबाइल न.– 9472059652
16. मो. सरफराज आलम, प्रा0 विद्यालय नौआखाप, रफीगंज, औरंगाबाद मो. न.– 9504673068

दो शब्द...

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्रानि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत्।।

नववर्ष की 2022 शुभकामनायें! यह वर्ष आपके जीवन में खुशहाली, समृद्धि, उन्नति और शान्ति लाये, आप स्वस्थ रहें, ऐसी हम कामना करते हैं। पूरा विश्व कोविड–19 के कहर से अछूता नहीं है। कोविड–19 ने हमारी दैनिक जीवन को काफी हद तक प्रभावित किया है। कई व्यक्तियों के रोजगार छीन गये, महँगाई आसमान छूने लगी। गरीबों के घर खाने के लाले पड़ गये। वहीं दूसरी तरफ बच्चों की शिक्षा भी पिछड़ते जा रही है। हम सभी ने कोरोना की पहली और दूसरी लहर को झेला है। उससे बहुत कुछ सीख भी ली है। डिजिटल लेन–देन, डिजिटल शिक्षा, कठिन परिस्थितियों में नये रास्ते ढुँढने की क्षमता का विकास भी हुआ है। कई नये शब्द हमारे 'डिक्शनरी' में जुड़ गये हैं जिसे हम नहीं जानते थे।

इसी दौरान बच्चों की शिक्षा बाधित न हो, इसके लिये शिक्षकों ने भी काफी सराहनीय योगदान दिया है। यु–ट्युब, चैनल, दुरदर्शन, ई–मैग्जीन, टेलीग्राम, व्हाट्सअप, गुगल मीट, जूम आदि का उपयोग कर शिक्षक ऑनलाइन कक्षा संचालन की कला में भी पारंगत हो चुके है। यानि जब मुश्किलें आती हैं तो हमारे लिए नए रास्ते तलाशने की दरवाजे भी खोल देती हैं। इन कठिन परिस्थितियों में भी कई लोगों ने अपने अथक प्रयास से कई खोज, अविष्कार और नवाचार किया है। हम उनके जज़्बे को सलाम करते हैं।

टीचर्स ऑफ बिहार ने भी इस कठिन समय में बच्चों की शिक्षा में निरंतरता बनाये रखने के लिए कई नये प्रयास किये है। स्कूल ऑन मोबाइल, ज्ञान दृष्टि, लॉकडाउन में लर्निंग, मैं हूँ योगदूत, कहानियों का पिटारा, गद्य गुँजन, पद्य पंकज, बाल मंच इसी समय की मांग पर प्रारंभ की गई है। दिवस ज्ञान भी बच्चों को नित्य नये ज्ञान से अवगत कराने की एक कड़ी के रूप में भूमिका अदा करता है। दुनिया भर में हर दिन–हर पल एक नया इतिहास रचा जाता है, जो हमारे जीवन को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है और समय इसका साक्षी होता है। ये हर घटनायें हमें कुछ न कुछ शिक्षा प्रदान करती हैं। ये अलग बात है कि हम उनमें से कुछ को ही अपने जीवन में चरितार्थ कर पाते हैं। 'दिवस ज्ञान' उनमें से कुछ प्रमुख प्रेरक, ज्ञानवर्द्धक घटनाओं, महापुरूषों की जीवनी, जन्मदिन, स्मृति, पर्व–त्योहारों की याद दिलाता है।

'दिवस ज्ञान' केवल दिनवार ऐतिहासिक सूचनाओं का संग्रह नहीं है बल्कि हर दिन के महत्त्व को हमारी पाठ्यचर्या एवं पाठ्यपुस्तकों के साथ जोडकर देखने की व्यवस्थित मार्गदर्शिका है। जरा सोंचिये, अगर हर दिन की खासियत को हम अपने विभिन्न विषयों के पाठ्यपुस्तकों से जोड़ दें तों उन्हें बताना कितना रोचक हो जायेगा। साथ ही, यह हमारे पाठ्यपुस्तकों के ज्ञान को एक अनोखे अंदाज में बच्चों के समक्ष प्रस्तुत करने का नवाचारी तरीका भी होगा।

'दिवस ज्ञान' का प्रयोग चेतना सत्र में एक भाग के तौर पर तथा कक्षा–अधिगम के दौरान चर्चा के तौर पर किया जा सकता है। दिवस ज्ञान के साथ बच्चों को उस दिन से जुड़ी गतिविधियां, कार्यक्रम, सम्मेलन, फिल्म प्रदर्शन, प्रतियोगिता आदि की योजना तैयार करने तथा उसे मूर्त रूप प्रदान करने में सहायता प्राप्त होगी।

इस कार्य में बिहार के कई शिक्षकों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप हमें सहयोग प्रदान किया है। हम उनके सहयोग के लिए दिल से आभार व्यक्त करते हैं। आशा है यह अंक पाठकों के लिए संग्रहणीय होगा। साथ ही पाठक त्रुटियों के लिए हमें क्षमा प्रदान करेंगे और अपना बहुमूल्य सुझाव भी देंगे।

शशिधर उज्ज्वल,
संपादक
दिवस ज्ञान

अन्दर के पन्नों में

1 जनवरी — नववर्ष का स्वागत (पृ. 5), कैलेण्डर का इतिहास (पृ. 6), सत्येन्द्र नाथ बोस (पृ. 7), विश्व व्यापार संगठन (पृ. 7), आर्मी मेडिकल कोर स्थापना दिवस (पृ. 8), नागालैण्ड दिवस (पृ. 9), दरभंगा स्थापना दिवस (पृ. 9), चेक गणराज्य (पृ. 10), स्लोवाकिया (पृ. 10), ब्रूनेई (पृ. 10), कैमरून (पृ. 10), हैती (पृ. 10),

2 जनवरी — अलाउद्दीन खिलजी (पृ. 11), मौलाना मजहरूल हक (पृ. 12), कवि जैनेन्द्र (पृ. 13), भारत रत्न (पृ. 13)

3 जनवरी — सावित्रीबाई फूले (पृ. 14)

4 जनवरी — लुई ब्रेल (पृ. 15), सर आइजक न्यूटन (पृ. 16), म्यांमार (पृ. 16),

5 जनवरी — शाहजहाँ (पृ. 17), कागज की मुद्रा (पृ. 18), खाजवा की लड़ाई (पृ. 18)

6 जनवरी — ए. आर. रहमान (पृ. 19), कपिलदेव (पृ. 19), छत्रपति शिवाजी का सूरत पर हमला (पृ. 20)

7 जनवरी — जार्ज ग्रियर्सन (पृ. 21), इरफान खान (पृ. 21), निकोला टेस्ला (पृ. 21)

8 जनवरी — स्टीफन हॉकिंग (पृ. 22), मोहन राकेश (पृ. 22), आशापूर्णा देवी (पृ. 23), सोमनाथ मंदिर (पृ. 23), गैलीलियो गैलिली (पृ. 24), बोरेक्स की खोज (पृ. 24)

9 जनवरी — सुन्दरलाल बहुगुणा (पृ. 25), डॉ. हरगोविन्द खुराना (पृ. 26), प्रवासी भारतीय दिवस (पृ. 26)

10 जनवरी — ताशकन्द समझौता (पृ. 27), विश्व हिन्दी दिवस (पृ. 27), ऋतिक रौशन (पृ. 28), सीमेन्ट का आविष्कार (पृ. 28)

11 जनवरी — लाल बहादुर शास्त्री स्मृति दिवस (पृ. 29)

12 जनवरी — स्वामी विवेकानन्द (पृ. 30), राष्ट्रीय युवा दिवस (पृ. 30), क्रांतिकारी सूर्यसेन को फाँसी (पृ. 30), माँ का सम्मान करें (पृ. 31),

13 जनवरी — राकेश शर्मा (पृ. 32), लोहड़ी का त्यौहार (पृ. 33)

14 जनवरी — अबुल फ़जल (पृ. 34), पानीपत का तृतीय युद्ध (पृ. 34), अंतर्राष्ट्रीय पतंग दिवस (पृ. 34), किशनगंज (पृ. 35), अररिया (पृ. 35), महापर्व मकर संक्राति (पृ. 36), पर्व एक रूप अनेक (पृ. 36), मकर संक्राति (पृ. 37), पोंगल (पृ. 38),

15 जनवरी — थल सेना दिवस (पृ. 39), सैफूद्दीन किचलू (पृ. 40), एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना (पृ. 40), भारतीय खाद्य निगम (पृ. 40)

16 जनवरी — शरतचंद्र चट्टोपाध्याय का निधन (पृ. 41), रामनरेश त्रिपाठी का निधन (पृ. 41)

17 जनवरी — बेंजामिन फ्रैंकलिन (पृ. 42), डी. आर कापरेकर (पृ. 42)

18 जनवरी — जर्मनी का एकीकरण (पृ. 43), महादेव गोबिन्द रानाडे (पृ. 44), हरिवंश राय बच्चन (पृ. 44)

19 जनवरी — जेम्स वॉट (पृ. 45)

20 जनवरी — एम्पीयर (पृ. 46), खान अब्दुल गफ़्फार खान का निधन (पृ. 46), भारत की पहली परमाणु भट्टी 'अप्सरा' (पृ. 46)

21 जनवरी — त्रिपुरा स्थापना दिवस (पृ. 47), मेघालय स्थापना दिवस (पृ. 47), मणिपुर स्थापना दिवस (पृ. 48), रास बिहारी बोस का निधन (पृ. 48), लेनिन की मृत्यु (पृ. 48)

22 जनवरी — ठाकुर रोशन सिंह (पृ. 49), वांडिवाश का युद्ध (पृ. 49), खूनी रविवार (पृ. 49)

23 जनवरी — सुभाष चन्द्र बोस (पृ. 50), अहमदशाह अब्दाली द्वारा दिल्ली में भयंकर लूट–पाट (पृ. 52), अलेक्जॅन्डर कनिंघम (पृ. 52),, हैंडराइटिंग डे (पृ. 52), जनता पार्टी का गठन (पृ. 52)

24 जनवरी — कर्पूरी ठाकुर (पृ. 53), राष्ट्रीय बालिका दिवस (पृ. 54), राष्ट्रगान का अंगीकार (पृ. 55), जन–गण–मन का इतिहास (पृ. 56),

25 जनवरी — राष्ट्रीय मतदाता दिवस (पृ. 57), हिमाचल प्रदेश (पृ. 58), राष्ट्रीय पर्यटन दिवस (पृ. 58)

26 जनवरी — गणतंत्र दिवस (पृ. 59), राष्ट्रीय चिन्हः अशोक स्तंभ (पृ. 59), राष्ट्रीय पक्षीः मोर (पृ. 60), राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार (पृ. 60), अंतर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस (पृ. 60), औरंगाबाद जिला स्थापना दिवस (पृ. 61), नवादा जिला स्थापना दिवस (पृ. 61), ऑस्ट्रेलिया की स्वतंत्रता दिवस (पृ. 61)

27 जनवरी — अंतर्राष्ट्रीय प्रलय स्मरण दिवस (पृ. 62), एडिसन द्वारा बल्ब का पेटेंट (पृ. 62)

28 जनवरी — लाला लाजपत राय (पृ. 63), डाटा संरक्षण दिवस (पृ. 63)

29 जनवरी — महाराणा प्रताप का निधन (पृ. 64), भारत का पहला समाचार पत्र (पृ. 64), बीटिंग द रिट्रीट (पृ. 65), चंदेरी का युद्ध (पृ. 65),

30 जनवरी — जयशंकर प्रसाद (पृ. 66), चिदम्बरम सुब्रह्मण्यम (पृ. 66), शहीद दिवस (पृ. 67), अमृता शेरगिल (पृ. 67), कुष्ठ निवारण दिवस (पृ. 67)

31 जनवरी — श्री कृष्ण सिंह स्मृति दिवस (पृ. 68), नौरू की स्वतंत्रता दिवस (पृ. 68), अंतर्राष्ट्रीय जेब्रा दिवस (पृ. 69)

9 जनवरी (विशेष) — गुरू गोविन्द सिंह जयंती (पृ. 69)

सुरक्षित शनिवार

पहला शनिवार : शीतलहर से बचाव (पृ. 70),

दूसरा शनिवार : रेल/सड़क सुरक्षा के उपाय (पृ. 71), पतंगबाजी करते समय ध्यान दें (पृ. 72)

तीसरा शनिवारः भूकंप के दौरान क्या करें? (पृ. 73)

चौथा शनिवारः बाल शोषण एवं छेड़छाड़, (पृ. 73)

पाँचवां शनिवारः स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, कोविड–19 से बचाव (पृ. 74),

1 जनवरी

नववर्ष का स्वागत

1 जनवरी ग्रेगोरियन कैलेण्डर का पहला दिन होता है। कुछ लोग इसे ईसाई नववर्ष भी कहते हैं, क्योंकि इसका संबंध ईसाई जगत व ईसा मसीह से है। 1 जनवरी ईसा मसीह के जन्म के आठवें दिन होने वाला संस्कार का दिन है।

अमेरिका में लोग 1 जनवरी को पार्टियां करके नववर्ष के आगमन का उत्सव मनाते हैं। इटली में नए साल पर चर्च की घंटियां बजाई जाती है, स्विट्जरलैंड में ड्रम बजाए जाते हैं और उत्तरी अमेरिका में सायरन बजाए जाते हैं। डेनमार्क में लोग नए साल के अवसर पर बड़ा सा केक काटते हैं। स्पेन के लोग नए साल पर 12 अंगूर खाते हैं ताकि साल के 12 महीने उनके लिए भाग्यशाली साबित हो। ग्रीक में नये साल के दिन को सेंट बेसिल महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। ग्रीक में नए साल के अवसर पर लोग अपने दरवाजे पर प्याज लटकाते हैं। इसे सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। बेल्जियम में बच्चे नए साल की शुरूआत पर अपने पैरेंट्स को खास पत्र लिखते हैं। वहीं जापान के लोगों का मानना है कि इस दिन नववर्ष के देवता धरती पर आते हैं। इस दिन बौद्ध मंदिरों में तोशिगामी देवता के स्वागत के लिए 108 बार घंटियां बजायी जाती है। नये साल पर बच्चों को उपहार दिया जाता है। एस्टोनिया में लोग नववर्ष की पूर्व संध्या पर 12 बार खाना खाते हैं। अर्जेन्टीना में लोग नववर्ष की पूर्व संध्या पर बीन्स खाते हैं जो अगले वर्ष में कैरियर के लिए भाग्यशाली माना जाता है। दुनिया में सबसे पहले समोआ द्वीप पर नया साल आता है। इसके बाद न्यूजीलैंड के मोरिओरी चैटहैम द्वीप, रूस और ऑस्ट्रेलिया में नए साल का उत्सव शुरू होता हैं सबसे अंत में अमेरिका के एक छोटे से इलाके बेकर द्वीप में नया साल आता है।

पूरे विश्व में कुल 70 बार नववर्ष मनाया जाता है। केवल हमारे देश भारत में ही करीब 14 बार नववर्ष मनाया जाता है। हिन्दू नववर्ष का प्रारंभ चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से माना जाता है। पंजाब में नववर्ष वैशाखी पर्व के रूप में मनाया जाता है। सिक्ख नानकसाही कैलेण्डर के अनुसार होला मोहल्ला (होली के दूसरे दिन) नया साल होता है। सिन्धी नववर्ष चेटीचंड उत्सव से शुरू होता है जो कि चैत्र शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है। सिंधी मान्यताओं के अनुसार, इस दिन भगवान झूलेलाल का जन्म हुआ था, जो वरूणदेव के अवतार थे। जैन नववर्ष दीपावली के अगले दिन होता है। भगवान महावीर स्वामी की मोक्ष प्राप्ति के अगले दिन यह शुरू होता है। असम में नववर्ष बीहू, केरल में पूरम विशु, तमिलनाडु में पुत्थांडु, आन्ध्रप्रदेश में उगादी, महाराष्ट्र में गुड़ी–पड़वा के रूप में मनाया जाता है।

जनवरी महीने का नाम रोमन देवता 'जेनस' के नाम पर पड़ा, जो प्रारंभ या श्री गणेश के देवता थे।

कैलेण्डर का इतिहास

मानव सभ्यता के विकास के शुरूआती दिनों में कैलेण्डर नहीं थे। वर्ष की शुरूआत के लिए किसी महत्वपूर्ण घटना को आधार माना गया। कहीं किसी राजा की गद्दी पर बैठने की घटना से (विक्रमी संवत्) गिनती शुरू हुई तो कहीं शासकों के नाम से जैसे रोम, यूनान, शक आदि।

2000बी.सी. के समय बेबीलोन में नववर्ष वसंत के पहले दिन मनाया जाता था। बेबीलोन के निवासी 11 दिनों तक लगातार इस त्योहार को मनाते थे। हर दिन का उत्सव अलग होता था। नये साल का इस प्रकार मनाना रोम में जारी रहा। किंतु समस्या यह थी कि हर शासक कैलेण्डर में फेर–बदल कर दिया करता था। कैलेण्डर को ठीक करने के लिए 153 बी.सी. में रोमन सीनेट ने '1 जनवरी' को नये साल की शुरूआत का दिन घोषित किया। हालांकि फेर–बदल जारी रहा।

प्राचीन यूनानी सभ्यता में कैलेंड्स का अर्थ है–'चिल्लाना'। उन दिनों एक आदमी मुनादी पीटकर बताया करता था कि कल कौन–सी तिथि,त्यौहार, व्रत आदि होगा। इस चिल्लाने वाले के नाम पर ही 'कैलेण्डर' नाम पड़ा।

रोमन सम्राट जूलियस सीजर द्वारा तैयार किया गया कैलेण्डर आज विश्व भर में इस्तेमाल हो रहा है। इस कैलेण्डर की शुरूआत 1 जनवरी मानी गयी है। उन्होनें वर्षों की गिनती ईसा के जन्म से की। ईसा के जन्म से पूर्व के वर्ष बी.सी. (बिफोर क्राइस्ट) और बाद के ए.डी. (आफ्टर डेथ) या 'अन्नो डोमिनी' कहलाये।

वर्ष 1582 में अष्टम पोप ग्रेगोरी ने जूलियन कैलेण्डर में सुधार करते हुए ग्रेगोरियन कैलेण्डर में भी '1 जनवरी' को ही नया वर्ष घोषित किया। ब्रिटेन में 1752 से ग्रेगोरियन कैलेण्डर को माना जाने लगा। 1752 से पहले ईस्वी सन् 25 मार्च से प्रारंभ होता था किन्तु 18वीं सदी से इसकी शुरूआत 1 जनवरी से होने लगी। भारत में भी ईस्वी सन् का प्रचलन अंग्रेजी शासकों ने 1752 में किया।

अलग–अलग कैलेण्डर– कई कैलेण्डर सूर्य पर आधारित होते हैं तो कई चन्द्रमा पर आधारित। **हिन्दू कैलेण्डर** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से शुरू होता है। यह सूर्य–चन्द्र की गति पर आधारित है। 11 दिनों की कमी जो सूर्य एवं चन्द्र वर्ष के बीच विभिन्नता पर उत्पन्न होता है, प्रत्येक तीन वर्ष पर समायोजित किया जाता है, जब एक ''अधिक मास'' बढ़ा दिया जाता है। **इस्लामी कैलेण्डर** के अनुसार मोहर्रम महीने की पहली तारीख को मुसलमानों का नया साल हिजरी शुरू होता है। इस्लामी कैलेण्डर चन्द्रमा पर आधारित है। इस कैलेण्डर का प्रारंभ 622ई. में जब पैगम्बर मुहम्मद ने मक्का से मदीना प्रस्थान किया था, माना जाता है। इस्लामी कैलेण्डर 12 चन्द्र महीनों का होता है। तीस वर्षों का एक चक्र होता है जिसमें दूसरा, पाँचवां, सातवां, तेरहवां, सोलहवां, अट्ठारहवां, इक्कीसवां, चौबीसवां, छब्बीसवां एवं उन्तीसवां अधिवर्ष होता हैं जिसमें 355 दिन होते हैं जबकि अन्य सामान्य वर्ष 354 दिनों का होता है।

हमारा देश भारत भी कैलेण्डर के मामले में कम समृद्ध नहीं है। भारत में विक्रम संवत्, शक संवत्, हिजरी संवत्, फसली संवत्, बांग्ला संवत्, बौद्ध संवत, जैन संवत्, खालसा संवत्, तमिल संवत्, मलयालम संवत्, तेलुगु संवत् आदि कई तरह के कैलेण्डर प्रचलित हैं।

भारत का राष्ट्रीय कैलेण्डर– भारत का राष्ट्रीय कैलेण्डर शक संवत् पर आधारित है, जिसमें सामान्य वर्ष 365 दिनों का होता है। शक संवत् का प्रारंभ 78 ई. को हुआ था। उसने इस संवत् का प्रारंभ अपनी शक्ति एवं प्रतिष्ठा स्थापित करने के लिए 78 ई. में किया था। राष्ट्रीय कैलेण्डर 22 मार्च 1957 ई. से लागू है।

(गणित के पाठ्यपुस्तक में 'समय ' पाठ से जोड़े तथा 'ज्ञान दृष्टि' का कैलेण्डर विशेषांक पढें।)

100 में से 110 अंक

जन्मदिन विशेष (1 जनवरी) – सत्येन्द्र नाथ बोस

क्वांटम सांख्यिकी के जनक सत्येन्द्र नाथ बोस भारत के महान वैज्ञानिक थे जिनके नाम पर सांख्यिकी में प्रयुक्त होने वाले कणों के नाम 'बोसोन' रखा गया। बोस–आइंसटीन सांख्यिकी के विकास का श्रेय सत्येन्द्र नाथ बोस को जाता है ।

सत्येन्द्र नाथ बोस का जन्म 1 जनवरी 1894 को कोलकाता में हुआ था। वैज्ञानिक एस. एन. बोस के पिता का नाम सुरेन्द्र नाथ बोस था। वे रेलवे के अधिकारी थे। बचपन से ही सत्येन्द्र बड़े प्रतिभाशाली थे। उनका सदैव एक ही ध्येय रहता था कि वे कक्षा में प्रथम आएं।

एक बार गणित की परीक्षा में उन्हें अध्यापक ने 100 में से 110 अंक प्रदान किए। वह इसलिए क्योंकि उन्होने सवालों को एक से अधिक विधियों से हल किया था। मजे कि बात यह है कि इनके सहपाठियों में यह भ्रम फैल गया कि सत्येन्द्र के होते कोई भी विश्वविद्यालय में कभी भी प्रथम स्थान प्राप्त नहीं कर सकता। लिहाजा हुआ यह कि कुछ ने अपने विषय बदल लिये तो कुछ ने उस परीक्षा से अनुपस्थित रहना बेहतर समझा। सन् 1915 में सत्येन्द्र ने पूरे कोलकाता विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सन् 1916 में स्नातकोत्तर के बाद ढाका यूनिवर्सिटी में भौतिकी के प्राध्यापक बन गए। फिर सन् 1923 में माल्ट के समीकरण से संबंधित अपने शोध कार्य को एक ब्रिटिश पत्रिका में प्रकाशन के लिए भेजा। उसने शोध पत्र प्रकाशन से अस्वीकृत कर दिया। प्रकाशक के इस निर्णय से वे निराश नहीं हुए और अपना शोध पत्र तत्कालिन विश्वप्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंसटीन के पास भेज दिया। आइंस्टीन ने उनके शोध कार्य की सराहना की और उसका जर्मन भाषा में अनुवाद कर प्रकाशित भी किया।

एक मजेदार बात और है कि एक बार सत्येन्द्र ने ढाका यूनिवर्सिटी में भौतिकी के प्रोफेसर पद के लिए आवेदन दिया तो वहाँ के अधिकारियों ने यह कहकर अर्जी खारिज कर दिया की सत्येन्द्र के पास उपयुक्त योग्यता और उपाधि नहीं है। और तो और उन्हें कहा गया कि आप आइंस्टीन से यह प्रमाणपत्र लेकर आएं कि आपका कार्य इस स्तर का है। जब आइंस्टीन को इस बात का पता लगा तो उन्होंने जवाब भेजा कि आपका कार्य उपाधि से भी उच्च कोटि का है।

फिर 1924 में सत्येन्द्र नाथ पेरिस चले गए। वहाँ मैडम क्यूरी के अधीन 10 माह तक कार्य किया। इसके बाद पेरिस से वे बर्लिन चले गए जहाँ आइंस्टीन ने उनका भव्य स्वागत किया। उन्होंने आइंस्टीन को सदा अपना गुरू माना। बर्लिन से ढाका लौटकर भौतिकी के विभागाध्यक्ष और प्रोफेसर नियुक्त हुए। सन् 1945 में कोलकाता यूनिवर्सिटी में साइंस कॉलेज के प्रोफेसर बने। विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए उन्होंने अपनी मातृभाषा बांग्ला का सहारा लिया। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय प्रोफेसर के रूप में मान्यता मिली और पद्म विभूषण से नवाजे गए। 4 फरवरी, 1974 को बोस ने आखिरी सांस ली।

विश्व व्यापार संगठन–

विश्व व्यापार संगठन की स्थापना 1 जनवरी, 1955 को हुआ था। यह विश्व की अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करने, मुक्त और अधिक पारदर्शी तथा अधिक अनुमान्य व्यापार व्यवस्था स्थापित करता है। इसका मुख्यालय जेनेवा, स्वीट्जरलैण्ड में है।

इतिहास के पन्नों में 1 जनवरी का दिन

- 1583– हॉलैंड और फ्लैंडर्स में ग्रेगोरियन कैलेंडर का पहला दिन।
- 1600– स्कॉटलैंड में 25 मार्च के बजाए 1 जनवरी से नये साल की शुरूआत।
- 1804– **हैती देश की स्वतंत्रता** दिवस। राजधानी– पोर्ट–औ–प्रिंस। महाद्वीप– उत्तरी अमरीका।
- 1808– अमरीका में दास व्यापार निषेध कानून पारित हुआ।
- 1862– 'भारतीय दंड संहिता' लागू किया गया।
- 1877– इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया भारत की साम्राज्ञी बनीं।
- 1880– भारत में मनीऑर्डर प्रणाली की शुरूआत हुई।
- 1915– महात्मा गांधी को दक्षिण अफ्रीका में उनके कार्यों के लिए वायसरॉय ने 'केसर–ए–हिन्द' से सम्मानित किया।
- 1928– अमरीका में पहला एयर कंडीशंड कार्यालय सेन एंतानियों में खुला।
- 1948– इटली का संविधान अस्तित्व में आया।
- 1949– भारतीय रिजर्व बैंक का राष्ट्रीयकरण हुआ।
- 1955– भूटान ने पहला डाक टिकट जारी किया।
- 1955– शान्ति स्वरूप भटनागर (भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक) का निधन।
- 1956– सुडान को ब्रिटेन से स्वतंत्रता मिली। राजधानी– खार्तुम। मुद्रा– सुडानी दिनार।
- 1959– क्यूबा में स्पेनिश शासन का अंत।
- 1960– **कैमरून** को फ्रांस से स्वतंत्रता मिली। राजधानी– याओन्डे।
- 1971– टेलीविजन पर सिगरेट विज्ञापनों का प्रसारण प्रतिबंधित किया गया।
- 1984– **ब्रुनोई** का स्वतंत्रता दिवस।
- 1993– चेकोस्लोवाकिया के विभाजन के फलस्वरूप **चेक गणराज्य** तथा स्लोवाकिया **गणराज्य** की स्थापना हुई।
- 1995– विश्व व्यापार संगठन अस्तित्व में आया।
- 1997– भारत–बांग्लादेश के बीच जल बँटवारे की संधि प्रभावी हुई।

इसे भी जानें–

'वर्ष' से हमारा अभिप्राय है साल, है न? तो बताइए कि इससे जुड़े वर्षांक, वर्षांग, वर्षबोध, वर्षवृद्धि, वर्षागम तथ वर्षाधिपति शब्दों का सही अर्थ क्या है?

- **वर्षांकः** वर्ष का संख्याक्रम, यथा इस वर्ष का वर्षांक है 2020।
- **वर्षांगः** इसका अर्थ है महीना।
- **वर्षांतः** इसका अर्थ है साल का अंतिम दिन।
- **वर्षबोधः** हर वर्ष प्रकाशित होने वाली पुस्तक यानी वार्षिकी।
- **वर्षवृद्धिः** जन्मदिन या सालगिरह।
- **वर्षागमः** नये वर्ष का आगमन अथवा वर्षा का आगमन।
- **वर्षाधिपतिः** इन्द्र अथवा वर्ष का अधिपति/शासक ग्रह।

आर्मी मेडिकल कोर स्थापना दिवस (1 जनवरी)– आर्मी मेडिकल कोर स्थापना दिवस प्रतिवर्ष 1 जनवरी को मनाया जाता है। इसकी शुरूआत 1 जनवरी, 1764 में बंगाल मेडिकल सर्विस के रूप में हुई थी। कोर का निर्माण इसलिए हुआ था ताकि सैनिकों, पूर्व सैनिकों एवं उनके आश्रितों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जा सकें। इंडियन आर्मी मेडिकल कोर तीन अप्रैल 1943 को वजूद में आया। यह इंडियन मेडिकल सर्विस, इंडियन मेडिकल डिपार्टमेंट और इंडियन हॉस्पीटल कोर को मिलाकर बना था।

नागालैंड दिवस (1 जनवरी)–

'नागालैंड' का अर्थ है 'नागा लोगों की भूमि'। सन् 1957 ईस्वी में इसे केंद्रशासित प्रदेश बनाकर असम के राज्यपाल के अधीन कर दिया गया था। इसे असम राज्य का 'नागा हिल्स' जिला नाम दिया गया। पुनः 1961 में इस क्षेत्र का नाम बदलकर 'नागालैंड' रखा गया। दिसंबर 1963 में इसे पूर्ण राज्य (16वाँ राज्य) का दर्जा दे दिया गया। नागालैंड का राज्य दिवस 1 जनवरी को मनाया जाता है।

नागा लोग मूलतः आदिवासी हैं। इस प्रदेश में पायी जाने वाली नाग जाति का वर्णन कालिदास तथा बाणभट्ट आदि कवियों ने किया है जिनमें उन्होंने नाग कन्याओं का सौंदर्य का बखान किया है। महाभारत में भी नाग राजाओं का उल्लेख मिलता है। अनुश्रुति के अनुसार अर्जुन ने इसी प्रदेश में आकर नागकन्या उलुपी (एरावत वंश के कौरव्य नाग की पुत्री) से विवाह किया था। कोहिमा के पास हनुमान गांव में आज भी उस युग के खंडहर मिलते हैं। जब यहाँ अहोम वंश का राज्य 12वीं–13वीं शताब्दी में स्थापित हुआ तो इनकी स्थिति में परिवर्तन आया। 19वीं शताब्दी में अंग्रेजों के आने पर नागाओं के इतिहास में बदलाव आया।

नागालैंड की राजधानी कोहिमा है। इसका क्षेत्रफल 16,579 वर्ग किमी. है। इसके पश्चिम तथा उत्तर में असम, उत्तर तथा पूरब में अरुणाचल प्रदेश, पूर्व में म्यांमार और दक्षिण में मणिपुर है। नागालैंड की राजकीय पक्षी दुकुल और राजकीय पशु बादली तेंदुआ है। इस राज्य का उच्च न्यायालय गुवाहाटी में स्थापित है। नागालैंड में आवो, कोन्याक, अंगामी, सेमा, लोहता, ऐंगमा आदि जनजातियां पायी जाती है। लेचाम यहाँ की प्रमुख झील है। नागालैंड राज्य में एकमात्र रेलवे स्टेशन तथा हवाई अड्डा दीमापुर शहर में है, जिसे 'राज्य का प्रवेश द्वार' भी कहा जाता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान भारत की पूर्वी सीमा तक बढ़ आई जापानी सेना की ब्रिटिश सेना के हाथों कोहिमा में हार हुई थी। जादुनांग के खंपाई कबीले की नेता गैंडिलियु ने अंग्रेजों के साथ संघर्ष किया था जिसके लिये उन्हें 1933 ई. मे गिरफ्तार किया गया था। 1946 में गैंडिलियु को जेल से मुक्ति मिली थी। उनके संघर्ष को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा मानते हुए कांग्रेस ने उन्हें 'रानी' की उपाधि दी थी।

(रेडियंस भाग 3, पाठ 9 के संदर्भ में)

दरभंगा स्थापना दिवस (1 जनवरी)–

दरभंगा देश के प्राचीन नगरों में से एक है। यहाँ से मिथिला का शासन तंत्र संचालित होता था। दरभंगा जिला की स्थापना एक जनवरी 1875ई. को हुई थी। इसके पूर्व यह मुजफ्फरपुर का भाग था।

'दरभंगा' नामकरण के पीछे अनेक तथ्य एवं जनश्रुतियां हैं। ईसा की 9वीं–10वीं शताब्दी में 84 बौद्ध सिद्धों की चर्चा मिलती है, जिनके नाम पर 'दरभंगा' नामकरण की मान्यता है। विद्वानों का मानना है कि इन्हीं सिद्धों में से एक थे–दरीपा, जिनके नाम पर दरभंगा का नामकरण हुआ। आज भी पुराने लोग इसे दरिभंगा कहते हैं। कुछ लोग इसे 'दर्प' यानी कुश से भरे अंगों वाली नगरी दर्पाभंगा से दरभंगा कहते हैं तो कुछ दर यानी डर को भंग करने वाली नगरी भी मानते है। एक और मान्यता है– महाराज माधव सिंह ने दरभंगी खाँ नामक व्यक्ति से जमीन खरीद कर यहाँ राजधानी बनायी थी। बंगाल का प्रवेश–द्वार होने के कारण भी यह क्षेत्र दरभंगा कहलाया। बिहार पहले बंगाल के अंतर्गत था। प्राचीन दरभंगा नेपाल को छूता था। तब के बंगाल में प्रवेश करने पर सबसे पहले दरभंगा पड़ता था। जिससे 'द्वार बंग' कहा जाने लगा, जो बाद में दरभंगा हो गया।

दरभंगा जिला के उत्तर में मधुबनी, दक्षिण में समस्तीपुर, पूरब में सहरसा, पश्चिम में सीतामढ़ी और मुजफ्फरपुर जिले हैं। इसका क्षेत्रफल 2,279 वर्ग किलोमीटर है। दरभंगा जिला में कुल 18 प्रखंड है। कमलाबलान, बागमती और तिलजुग यहाँ की प्रमुख नदी है। दरभंगा राज की स्थापना मैथिल ब्राह्मण जमींदारों ने 16 वीं सदी के शुरुआत में की थी। भारत के रजवाड़ों में दरभंगा राज का अपना खास स्थान था। दरभंगा महाराज संगीत और अन्य ललित कलाओं के बहुत बड़े संरक्षक थे। 18 वीं सदी से ही दरभंगा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का बड़ा केंद्र बन गया था। ध्रुपद गायन में दरभंगा घराना का आज भी खास स्थान है।

चेक गणराज्य का स्वतंत्रता दिवस (1 जनवरी)–

चेक गणराज्य यूरोप महाद्वीप में स्थित एक देश है। जिसका आधिकारिक नाम चेस्का गणराज्य है। इसकी राजधानी प्राग है। यहाँ अधिकांशतः ईसाई धर्मावलंबी रहते हैं। यहाँ की भाषा चेक और मुद्रा चेक क्रॉउन है। 1918 में चेक क्षेत्रों को मिलाकर चेकोस्लोवाकिया बना। 1938–39ई. तक इस पर जर्मनी का अधिकार रहा। 1 जनवरी, 1969 को चेकोस्लोवाक समाजवादी गणराज्य की स्थापना हुई थी। चेकोस्लोवाकिया मध्य यूरोप का एक ऐसा देश था जहाँ 64 प्रतिशत चेक और 31 प्रतिशत स्लोवाक समुदाय के लोग रहते थे। जून, 1992 में चेकोस्लोवाकिया संघ के चेक और स्लोवाक गणराज्य के अलग होने पर सहमत हो गए। 1 जनवरी, 1993 को चेकोस्लोवाकिया के विघटन के बाद चेक और स्लोवाक दो स्वतंत्र राष्ट्र अस्तित्व में आये।

स्लोवाकिया का स्वतंत्रता दिवस (1 जनवरी)–

स्लोवाकिया का अधिकृत नाम स्लोवेन्सका रिपब्लिका है। इसकी राजधानी ब्राटिस्लावा है। 1960 ईस्वी में स्लोवाक लोगों ने अपनी अलग पहचान के लिए प्रयास आरंभ किया। 1 जनवरी, 1993 ईस्वी को एक नए स्वतंत्र स्लोवाक गणतंत्र का उदय हुआ। यह देश कार्पेथियन पर्वत से घिरा हुआ है। यहाँ की भाषा स्लोवाक है। यहाँ की मुद्रा न्यू क्राउन है। रोन तथा द्नूबी भी यहाँ की प्रमुख नदियां हैं।

ब्रूनेई का स्वतंत्रता दिवस (1 जनवरी)–

ब्रूनेई एशिया महाद्वीप में स्थित एक देश है, जिसका अधिकृत नाम नेगारा ब्रूनेई दारुस्लाम है। इसकी राजधानी बंदर सेरी बेगावान है। इसका क्षेत्रफल 5,765 वर्ग किलोमीटर है। यहाँ की 88 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर है। यहाँ पर मलय चीनी और अंग्रेजी भाषा बोली जाती है। मुख्यतः यह एक इस्लामिक देश है। यहाँ की शासन व्यवस्था राजतंत्रात्मक (सल्तनत) है। यहाँ की मुद्रा का नाम ब्रूनेई डॉलर है। यह देश 1888 से ही ब्रिटिश संरक्षण में था। 1941 में जापान सरकार द्वारा इस पर अधिकार कर लिया गया। ब्रिटिशों ने इसे 1945ई. में स्वतंत्र करा कर पुनः अपने संरक्षण में ले लिया। अंग्रेजों द्वारा इसे अपने साम्राज्य का अंग बनाने के बाद 1971ई. में इसे पूर्ण आंतरिक स्वायत्तता मिली। 1 जनवरी, 1984ई. को इसे पूर्ण स्वतंत्रता मिली। ब्रूनेई की जलवायु उष्ण कटिबंधीय प्रकार की है। दिन का तापमान अधिक रहता है किंतु रातें ठंडी होती है। भारी वर्षा के कारण मौसम शुष्क नहीं होता। इसका तटीय भाग पहाड़ी तथा पूर्वी भाग वनों से युक्त है।

कैमरून का स्वतंत्रता दिवस (1 जनवरी)–

कैमरून अफ्रीका महाद्वीप का एक देश है जिसका अधिकृत नाम कैमरून गणराज्य है। इसकी राजधानी याओंडे है। यहाँ पर कबीलाई धर्म इस्लाम एवं ईसाई धर्म के लोग रहते हैं। यहाँ की भाषा फ्रैंक और अंग्रेजी है। पश्चिमी अफ्रीकी देश कैमरून प्रारंभ में जर्मन औपनिवेशिक साम्राज्य का एक भाग था। 1 जनवरी, 1960 ई. को इसे स्वतंत्रता प्राप्त हुआ। ब्रिटिश कैमरून के 1961 ई. में इसमें सम्मिलित होने से कैमरून एक संघीय गणराज्य बन गया। 1972 ई. में संघीय स्वरूप को त्याग कर इसका नाम 'यूनाइटेड रिपब्लिक ऑफ कैमरून' रखा गया। 1984 में पुनः नाम बदलकर 'रिपब्लिक ऑफ कैमरून' रखा गया। कैमरून की जलवायु विषुवतीय प्रकार की है। यहाँ का तापमान बहुत उच्च रहता है तथा वर्षा भी बहुत अधिक होती है। यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्यता कृषि प्रधान है। यहाँ लघु उद्योगों की प्रधानता है। एलुमिनियम तथा रसायन पूर्वी कैमरून के प्रसिद्ध उद्योग हैं।

हैती का स्वतंत्रता दिवस (1 जनवरी)–

हैती उत्तरी अमरीका महादेश का एक छोटा सा देश है। हैती वेस्टइंडीज का एक भाग है जो कि अटलांटिक महासागर में स्थित है। इसकी राजधानी पोर्टओ–प्रिंस है। हैती का खोज कोलंबस ने 1492 ई0 किया था। 1697 में फ्रांस ने इस पर अपना कब्जा कर लिया था। 1804 में फ्रांस से इसे स्वतंत्रता मिली था। हैती की आधिकारिक भाषा फ्रेंच और हैतियन क्रेओल है। हैती का राष्ट्रीय खेल फुटबॉल है। कॉफी यहाँ का सर्वप्रमुख उत्पाद है।

2 जनवरी

अलाउद्दीन खिलजी (1266ई.–1316ई.)

2 जनवरी, 1316 ई. को अलाउद्दीन खिलजी का निधन दिल्ली में जलोदर रोग से हुआ था। अलाउद्दीन, खिलजी वंश का दूसरा शासक था। अलाउद्दीन खिलजी को खिलजी वंश का सबसे ताकतवर शासक माना जाता है। उसका साम्राज्य अफगानिस्तान से लेकर उत्तर–मध्य भारत तक फैला था। इसके बाद इतना बड़ा भारतीय साम्राज्य अगले तीन सौ सालों तक कोई भी शासक स्थापित नहीं कर पाया। उसके समय में उत्तर–पूर्व से मंगोल आक्रमण भी हुए। उसने उसका भी डट कर सामना किया।

अलाउद्दीन खिलजी का वास्तविक नाम 'अली गुरशास्प' उर्फ 'जूना खान खिलजी' था। 16 वीं–17वीं शताब्दी के इतिहासकार हाजी–उद–दबीर के मुताबिक, अलाउद्दीन का जन्म कलात, जाबुल प्रान्त, अफगानिस्तान में हुआ था।

अलाउद्दीन खिलजी के पिता का नाम शिहाबुद्दीन मसूद था। खिलजी वंश के प्रथम शासक जलालुद्दीन खिलजी रिश्ते में उनके चाचा थे। अलाउद्दीन खिलजी के पिता की मृत्यु के बाद उनके चाचा जलालुद्दीन खिलजी ने अलाउद्दीन खिलजी का पालन–पोषण अपने बेटे की तरह किया था और अपनी बेटी का निकाह भी उससे करवाया, लेकिन वह जलालुद्दीन की बेटी से शादी कर के खुश नहीं थे, क्योंकी जलालुद्दीन के सुल्तान बनने के बाद उनकी पत्नी एक राजकुमारी बन गई थी, और उनके बर्ताव में अचानक से अभिमान आ गया था।

वर्ष 1291 ई. में, कारा के राज्यपाल मलिक छज्जू ने सुल्तान के राज्य में विद्रोह कर दिया था, इस समस्या को अलाउद्दीन ने बहुत अच्छे से संभाला, जिसके बाद उन्हें कारा का राज्यपाल बना दिया गया। मलिक छज्जू ने जलालुद्दीन को एक अप्रभावी शासक माना और दिल्ली के सिंहासन को हड़पने के लिए अलाउद्दीन को उकसाया। जलालुद्दीन के साथ विश्वासघात करना आसान काम नहीं था, क्योंकि इसके लिए उन्हें एक बड़ी सेना और हथियारों के लिए पैसे की आवश्यकता थी। इस योजना में लगने वाले धन की कमी को पूरा करने के लिए अलाउद्दीन ने आसपास के साम्राज्यों में लूट–पाट शुरू कर दी।

वर्ष 1293 में, अलाउद्दीन ने भिलसा जो मालवा के परमार राज्य में एक अमीर शहर था, में लूट–पाट की और सुल्तान का विश्वास जीतने के लिए, अलाउद्दीन ने पूरी लूटी गई वस्तु को जलालुद्दीन को सौंप दी। इससे खुश हो कर जलालुद्दीन ने उन्हें 'अरीज–ए– ममालिक जिसे युद्ध का सेनापति भी कहा जाता है, नियुक्त किया और उन्हें सेना को मजबूत बनाने के लिए अधिक राजस्व बढ़ाने के लिए अन्य विशेषाधिकार भी दे दिया।

20 जुलाई, 1296ई. को जब जलालुद्दीन ने गंगा नदी के किनारे अलाउद्दीन से मुलाकात की तब अलाउद्दीन ने जलालुद्दीन को गले लगाते समय उनकी पीठ पर चाकू से वार कर दिया और उनकी मृत्यु के बाद खुद को दिल्ली का नया सुल्तान घोषित कर दिया।

जुलाई, 1296 ई. को कारा में अलाउद्दीन ने अपने आप को औपचारिक रूप से 'अलाउद्दीन मुहम्मद शाह–सुल्तान' की उपाधि के रूप में नया सुल्तान घोषित किया। अलाउद्दीन ने अपने अधिकारियों को यथासंभव कई सैनिकों की भर्ती करने और अपने आप को एक उदार सुल्तान के रूप में पेश करने का आदेश दिया। इसके बाद उन्होंने कारा में अपने मुकुट के साथ–साथ 5 मन (लगभग 35 किलोग्राम) सोना वितरित किया। भारी बारिश और नदियों में बाढ़ की स्थिति के कारण, उन्होंने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। 21 अक्तूबर,

1296 ई. को अलाउद्दीन खिलजी ने औपचारिक रूप से खुद को दिल्ली का सुल्तान घोषित किया। अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली की गद्दी पर बैठते ही अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार करना शुरू कर दिया।

अलाउद्दीन खिलजी एक साम्राज्यवादी शासक था, जिसने आक्रामकता के साथ साम्राज्य का विस्तार दक्षिण भारत के मदुरै तक किया। अत्यधिक महत्वकांक्षी होने के कारण उसे "सिकन्दर–ए–सानी" का खिताब मिला था जिसका अर्थ था "दूसरा सिकन्दर"। उसने अपने शासनकाल के दौरान शराब पर पूर्णतः प्रतिबन्ध लगा दिया था।

चित्तौड़ किले पर किया गया, आक्रमण अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में किए गए आक्रमणों में सबसे अधिक सुर्खियों में रहा। चूँकि चित्तौड़ का किला सामरिक दृष्टि से बेहद सुरक्षित स्थान पर बना हुआ था। इसलिए अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया और महाराजा रतन सिंह को हराया। अन्ततः 28 जनवरी 1303 ई. को सुल्तान चित्तौड़ के किले पर अधिकार करने में सफल हुआ।

अलाउद्दीन के दरबार में अमीर खुसरो तथा हसन निजामी जैसे उच्च कोटी के विद्वान थे। अलाउद्दीन के शासन काल की प्रमुख विशेषता बाजार व्यवस्था थी। उसने अपने राज्य में बेइमानी को रोकने के लिए कम तौलने वाले व्यापारियों के शरीर से मांस काट लेने का आदेश जारी किया था। उसने 'मूल्य नियंत्रण प्रणाली' को दृढ़ता से लागू किया था। अलाई दरवाजा का निर्माण अलाउद्दीन खिलजी ने ही किया था।

(संदर्भः बच्चों को **अतीत से वर्तमान भाग 2, अध्याय 3** के संदर्भ में अलाउद्दीन खिलजी के बारे में बतायें।)

✍मो. नसीम अख्तर
शिक्षक
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय मुस्तफापुर उर्दू
प्रखण्ड – चेहराकलाँ, जिला – वैशाली, बिहार
संपर्कः 9931570020

मौलाना मजहरूल हक का निधन (2 जनवरी)–

मौलाना मजहरूल हक का जन्म बिहार के पटना जिले के मनेर के पास बाहपुरा गांव में एक धनी जमींदार परिवार में 22 दिसम्बर, 1866 को हुआ था। 1986 में मजहरूल हक मैट्रीक पास करने के बाद पटना कॉलेज में प्रवेश लिया, लेकिन अध्यापक से बहस के कारण कॉलेज छोड़ दिये। इसके बाद बैरिस्ट्री की पढ़ाई के लिए वे इंग्लैंड गये। वहाँ भारतीय छात्रों में एकता स्थापित करने के लिए अंजुमन इस्लामिया संस्था स्थापित किया। उन दिनों गांधी जी भी वहाँ छात्र थे। तभी से दोनों में मित्रता हुई और जीवन भर दोस्ती बनी रही। बैरिस्टर बनने के बाद मौलाना मजहरूल हक ने पटना में वकालत प्रारंभ किया। कुछ दिन उत्तरप्रदेश न्यायिक सेवा के तहत मुंसिफ के पद पर कार्य किया। इस पद से त्याग पत्र देने के बाद वे छपरा में पुनः वकालत शुरू किया। उसी समय छपरा में भयंकर अकाल पड़ा। हक ने तन–मन–धन से लोगों की सेवा की।

मौलाना मजहरूल हक एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रखर शिक्षाविद् और लेखक थे। 1906 ई. में मुस्लिम लीग के गठन के बाद वे ढाका गये थे। उन्होंने 1917 ई. के महात्मा गांधी के चम्पारण सत्याग्रह में भाग लिया। हक ने असहयोग आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभायी। वे खिलाफत आंदोलन और होमरूल लीग आंदोलन के भी समर्थक रहे। इनका सबसे बड़ा योगदान होमरूल आंदोलन के दौरान हिन्दू–मुस्लिम एकता को बढ़ावा देना रहा। उन्होंने 'मदरलैंड' नाम की अखबार का प्रकाशन किया। उनकी मृत्यु 2 जनवरी, 1930 ई. को हुआ।

(संदर्भः बच्चों को **अतीत से वर्तमान भाग 3, अध्याय 12, पृष्ठ 200** के संदर्भ में बतायें।)

जैनेन्द्र का जन्म (2 जनवरी)–

कवि जैनेन्द्र का जन्म 2 जनवरी, 1905 में अलीगढ़ के एक मध्यम परिवार में हुआ था। बाल्यावस्था में ही इनके पिता का देहान्त हो गया। इनकी शिक्षा जैन गुरूकुल ऋषि ब्रह्मचर्याश्रम, हस्तिनापुर से आरंभ हुई। मैट्रिक पास करने के बाद ये हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी में दाखिला लिये। किन्तु महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के क्रम में इनका पढ़ाई छुट गया। उन्हें आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण कई बार जेल भी जाना पड़ा।

जैनेन्द्र बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। 'कल्याणी', 'परख', 'सुनीता', 'त्यागपत्र' आदि इनके प्रमुख उपान्यास हैं। 'एक रात', 'स्पर्धा', 'जय सन्धि', 'ध्रुव यात्रा', 'नीलम देश की राजकन्या', 'दो चिड़िया' आदि इनके प्रमुख कहानियां हैं। इसके अतिरिक्त जैनेन्द्र ने कुछ निबंध भी लिखे हैं।

राष्ट्रीय पुरस्कार : भारत रत्न

भारत रत्न भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। यह सम्मान राष्ट्रीय सेवा के लिए दिया जाता है। इन सेवाओं में कला,साहित्य, विज्ञान या सार्वजनिक सेवा शामिल है। इस सम्मान की स्थापना तत्कालिन राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद के द्वारा 2 जनवरी 1954 को किया गया था।

मूल रूप से इस सम्मान के पदक का डिजाइन 35 मिमी0 गोलाकार स्वर्ण मेडल था जिसमें सामने सूर्य बना था। ऊपर हिन्दी में भारत रत्न लिखा था और नीचे पुष्पाहार था। पीछे की तरफ राष्ट्रीय चिन्ह और मोटो था। फिर इस पदक के डिजाइन को बदल कर ताँबे के बने पीपल के पत्ते पर प्लैटिनम का चमकता सूर्य बना दिया गया। जिसके नीचे चाँदी में लिखा रहता है 'भारत रत्न' और यह सफेद फीते से गले में पहना जाता है।

शुरूआत में इसे मरणोपरांत देने का प्रावधान नहीं था (इसलिए महात्मा गांधी को यह सम्मान कभी नहीं दिया गया)। यह प्रावधान 1955 में जोड़ा गया। यह पुरस्कार 10 व्यक्तियों को मरणोंपरांत प्रदान किया गया। ऐसा कोई लिखित प्रावधान नहीं है कि यह पुरस्कार सिर्फ भारतीय नागरिकों को ही दिया जाय। भारत रत्न पुरस्कार मदर टेरेसा और दो अन्य गैर–भारतीय खान अब्दुल गफ्फार खान और नेल्सन मंडेला को भी दिया गया है।

पहली बार यह उपाधि सन् 1954 में तीन लोगों को दी गई थी। वे थे डॉ0 एस. राधाकृष्णन, सी. राजगोपालाचारी और डॉ0 सी. वेंकटरमण। सबसे पहला भारत रत्न पुरस्कार डॉ0 सी. वेंकटरमण को प्राप्त होने को गौरव है। सन् 1954 में यह उपाधि पहली बार सर्वपल्ली डॉ0 राधाकृष्णन को दी गई थी, तभी विवाद हुआ था कि डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की उपेक्षा करके उप–राष्ट्रपति को यह उपाधि जान–बुझ कर दी गई। आरोप लगा कि यह काम राजेन्द्र बाबू को नीचा दिखाने के लिए किया गया है। 1954 के भारत रत्न से सम्मानित व्यक्तियों में सी. राजगोपालाचारी ऐसी हस्ती थे जिन्हें जवाहरलाल नेहरू 1950 में डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद की जगह राष्ट्रपति बनवाना चाहते थे, पर वे सफल नहीं हो सके थे। हालांकि बाद में खुद डॉ0 राधाकृष्णन ने इस गलती को सुधरवाया। जब 1962 में डॉ0 राधाकृष्णन खुद राष्ट्रपति बने तो उन्होंने डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद को भारत रत्न से सम्मानित करने का निर्णय लिया। उस साल सिर्फ एक ही व्यक्ति को भारत रत्न मिला।

3 जनवरी

जन्मदिन विशेष (3 जनवरी) – सावित्रीबाई फूले

सावित्रीबाई फूले भारत की प्रथम महिला शिक्षिका, समाज सुधारिका एवं मराठी कवयित्री थीं। उन्होंने अपने पति ज्योतिराव फूले के साथ मिलकर स्त्री अधिकारों एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया।

सावित्रीबाई फूले

क्या थीं– सावित्रीबाई फूले भारत के पहले बालिका विद्यालय की पहली प्रिसिंपल और पहले किसान स्कूल की संस्थापक थीं। उनको महिलाओं और दलित जातियों को शिक्षित करने के प्रयासों के लिए जाना जाता है। 1852 में उन्होंने बालिकाओं के लिए एक विद्यालय की स्थापना की। आज से 170 साल पहले बालिकाओं के लिए स्कूल खोलना पाप समझा जाता था। सावित्रीबाई फूले का जन्म 3 जनवरी 1831 ई0 को हुआ था।

वे स्कूल जाती थी तो विरोधी लोग पत्थर मारते थे। उनपर गंदगी फेंक देते थे। सावित्रीबाई एक साड़ी अपने थैले में लेकर चलती थीं और स्कूल पहुँचकर गंदी कर दी गई साड़ी बदल लेती थी। उनके लिए विद्यालय चलाना कितनी मुश्किल रहा होगा, इसकी कल्पना शायद आज भी नहीं कि जा सकती।

एक बार सावित्रीबाई फूले के पिता ने उन्हें अंग्रेजी की किसी किताब के पन्ने पलटते देख लिया। वे दौड़कर आये और किताब हाथ से छीनकर घर से बाहर फेंक दी। इसके पीछे वजह यह थी की शिक्षा का हक केवल उच्च जाति के पुरूषों को ही है। दलित और महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करना पाप समझा जाता था। बस उसी दिन वो किताब वापस लायीं और प्रण कर बैठीं कि कुछ भी हो जाए वो एक न एक दिन पढ़ना जरूर सीखेंगी।

क्या हुई– सावित्रीबाई फूले ने 1848 में पुणे में अपने पति के साथ मिलकर विभिन्न जातियों की नौ छात्राओं के साथ एक विद्यालय की स्थापना की। सावित्रीबाई विधवा विवाह करवाने, छुआछुत मिटाने के क्षेत्र में भी कार्य किया। 28 जनवरी 1853 को गर्भवती बलात्कार पीड़ितों के लिए एक बाल हत्या प्रतिबंधक गृह की स्थापना की। सावित्रीबाई ने आत्महत्या करने जाती हुई एक विधवा ब्राह्मण महिला काशीबाई की अपने घर में डिलीवरी करवा उसके बच्चे यशवंत को अपने दत्तक पुत्र के रूप में गोद लिया। दत्तक पुत्र यशवंत राव को पाल–पोसकर इन्होने डॉक्टर बनाया। सावित्रीबाई फूले और ज्योतिबा फूले ने 24 सितम्बर 1873 को सत्यशोधक समाज की स्थापना की। इस संस्था के द्वारा पहला पुर्नर्विवाह 25 दिसम्बर, 1873 को कराया गया।

10 मार्च, 1897 ई. को प्लेग के कारण उनका निधन हो गया। प्लेग महामारी के दौरान वे मरीजों की सेवा करती थी। एक प्लेग संक्रमित बच्चे की सेवा करने के दौरान ये खुद संक्रमित हो गयीं और इनकी मृत्यु हो गयी। सावित्रीबाई फूले की जीवनी से अपने पथ पर चलते रहने की प्रेरणा मिलती है। उस दौर में वे न सिर्फ खुद पढ़ी, बल्कि दूसरी लड़कियों को भी पढ़ने का बंदोबस्त किया।

*(संदर्भः सावित्रीबाई फूले की जीवनी **अतीत से वर्तमान भाग 3, पृष्ठ 130** के संदर्भ से जोड़कर बच्चों को बतायें।)*

✍माला कुमारी, शिक्षिका
मध्य विद्यालय अजनिया, (औरंगाबाद)

4 जनवरी

लुई ब्रेल (1809 ई.–1852ई.)

ब्रेल लिपि के अविष्कारक लुई ब्रेल को दुनिया में 'नेत्रहीनों का मसीहा' माना जाता है। इनका जन्म 4 जनवरी, 1809 ई. मे फ्रांस के छोटे से गाँव कुप्रे में हुआ था। इनके माता का नाम मोनिक ब्रेल था। इनके पिता साइमन रेले ब्रेल शाही घोड़ों के लिए काठी और जीन बनाने का काम किया करते थे। लुई ब्रेल अपने पिता के साथ उनके द्वारा कार्य में लायी जाने वाली वस्तुएं, जिनमें अधिकतर कठोर लकड़ी, रस्सी, लोहे के टुकड़े, घोड़े की नाल, चाकू आदि होते थे, के साथ खेला करते थे।

तीन वर्ष की उम्र में एक दिन काठी के लिए लकड़ी काटते समय इस्तेमाल किया जाने वाला लोहे का एक सूजा लुई ब्रेल की आँखों में घुस गया। उनके आँख से खून बहने लगा। परिवार ने उनकी चोट को साधारण समझ कर उसकी पट्टी कर दी। कुछ दिनों बाद लुई ब्रेल की अपनी दूसरी आँख से भी कम दिखाई देने की शिकायत की परन्तु उसके पिता ने आर्थिक अभाव और लापरवाही के कारण अनदेखा कर दिया। इस वजह से मात्र आठ वर्ष की उम्र मे लुई ब्रेल पूरी तरह से दृष्टिविहीन हो गए।

लुई ब्रेल की दुनिया में पूरी तरह से अँधेरा छा जाना, उनके परिवार और स्वयं उनके लिए एक बड़ा आघात था। लेकिन आठ साल के बालक लुई ने इससे हारने के बजाय चुनौती के रूप मे लिया। परिवार ने लुई की जिज्ञासा को देखते हुए फ्रांस के एक मशहूर पादरी वेलेंटाइन की मदद से 1819 ई. मे दस वर्षीय बालक को 'रॉयल इंस्टिट्यूट फॉर ब्लाइंड्स' नामक अंधविद्यालय मे दाखिला करा दिया। इस विद्यालय में एक बार फ्रांस के एक सेना के अधिकारी कैप्टन चार्ल्स बार्वियर एक प्रशिक्षण देने के लिए आये। उन्होंने सैनिकों द्वारा अंधेरे में पढ़ी जाने वाली 'नाइट राइटिंग' या 'सोनोग्राफी' के बारे में बताया। यह लिपि कागज पर अक्षरों को उभार कर लिखी जाती थी। लेकिन इसमें 12 बिन्दुओं को छह–छह की दो पंक्तियों में रखा जाता था और इसमें विरामचिह्न, गणितीय चिह्न,, संख्या नहीं होते थे। लुई ब्रेल ने इसी के आधार बनाकर उसमें संशोधन कर उस लिपि को 6 बिंदुओं मे बदलकर 'ब्रेल लिपि' का अविष्कार किया। 1829 में लुई ब्रेल छह बिन्दुओं पर आधारित ब्रेल लिपि बनाने में सफल हुए। लेकिन तत्कालिन शिक्षाशास्त्रीयों ने इसे मान्यता नहीं दिया। सेना तथा विद्वानों ने उनका माखौल उड़ाया। लुई ब्रेल ने हार नहीं मानी और पादरी बैलेन्टाइन की मदद से अपनी अविष्कार की गयी लिपि को दृष्टिहीन व्यक्तियों के मध्य लगातार प्रचारित करते रहे।

1852 ई. में, 43 वर्षों की अवस्था में टी. वी. की बीमारी से अंततः उनकी मृत्यु हो गयी। लुई ब्रेल की छः बिंदुओं वाली अविष्कारित लिपि उनकी मृत्यु के बाद भी लोकप्रिय होती गयी। मृत्यु के बाद शिक्षाशास्त्रीयों ने भी उनके किये गए काम को गंभीरता से समझा। अंततः लुई ब्रेल की मृत्यु के एक सौ साल बाद फ्रांस मे 20 जून, 1952 के दिन उनके गृह ग्राम कुप्रे मे सौ वर्ष पूर्व दफनाये गए उनके पार्थिव शरीर के अवशेष को पुरे राजकीय सम्मान के साथ बाहर निकला गया। सेना के द्वारा बजायी गयी शोक धुन के बीच राष्ट्रीय ध्वज मे उन्हें पुनः लपेटा गया और अपने ऐतिहासिक भूल के लिए उनके नश्वर शरीर के अंश के सामने समूचे राष्ट्र ने उनसे माफी मांगी और राष्ट्रीय सम्मान के साथ उन्हें पुनः दफनाया गया। आज पूरा विश्व लुई ब्रेल को उनके इस योगदान के लिए सदा आभारी रहेगा। भारत सरकार ने भी सन् 2009 में उनकी जन्म के 200 वर्ष के उपलक्ष्य में डाक टिकट जारी किया।

*(**संदर्भः पर्यावरण और हम भाग 3 और विज्ञान भाग 3 पृष्ठ 152 के पाठ 12** के संदर्भ में बच्चों को लुई ब्रेल के जीवनी के बारे में बतायें।)*

✍सलमा परवीन
उत्क्रमित मध्य विद्यालय, रामपुर
भभुआ (कैमूर), बिहार

जन्मदिन विशेष (4 जनवरी) – सर आइज़क न्यूटन

आइज़क न्यूटन का जन्म 4 जनवरी 1643 को वुल्सथोर्प, लिंकनशायर, इंग्लैंड में हुआ था। न्यूटन के जन्म के समय इंग्लैंड ने ग्रेगोरियन कैलेण्डर को नहीं अपनाया था और इसलिए उनके जन्म की तिथि को क्रिसमस दिवस 25 दिसंबर 1642 के रूप में दर्ज किया गया। खैर, न्यूटन का जन्म उनके पिता के मृत्यु के तीन माह के बाद हुआ। उनके पिता का नाम भी आइज़क न्यूटन था। वे एक समृद्ध किसान था। जब न्यूटन तीन वर्ष के थे कि उनकी मां ने दुबारा शादी कर ली और न्यूटन को नानी के पास छोड़ दी। न्यूटन बचपन में हकलाया करते थे। इसलिए 12 वर्ष की अवस्था में स्कूल जाना शुरू किया। 12 वर्ष की उम्र में वे पढ़ने के लिए ग्रंथन के किंग स्कूल में प्रवेश लिया और वहाँ एक फार्मासिस्ट के घर रहने लगें जिसका नाम क्लार्क था। क्लार्क एक फार्मासिस्ट था इसलिए उसके पास रसायन और प्रायोगिक किताबें बहुत ज्यादा थी। न्यूटन उन्हीं सारी किताबों को पढ़ा करते थे और उनके प्रयोगों को भी किया करते थे। बचपन में वे प्रतिभाशाली छात्र नहीं थे। चित्रकारी और मशीनरी में उनकी विशेष रूचि जरूर थी।

क्या थे–एक दिन न्यूटन एक पेड़ के नीचे बैठे थे और अचानक ऊपर से एक सेब गिरा तभी न्यूटन सोचने लगे यह सेब नीचे क्यों गिरा, ऊपर क्यों नहीं गया। वह काफी देर से बैठकर यही सोच रहे थे। बहुत देर तक सोचने और विचारने के बाद उन्होंने प्रयोग करके पता लगाया कि जब तक गुरूत्वाकर्षण बल रहेगा तब तक जो चीज ऊपर है वह नीचे आएगी। जब गुरूत्वाकर्षण बल खत्म हो जाएगा तो वो चीज वहीं तैरने लगेगी। इस प्रकार न्यूटन ने गुरूत्वाकर्षण के नियम की खोज की।

सन् 1665 में ट्रिनिटी कॉलेज से स्नातक की शिक्षा पूरी की। उनके प्रोफेसर आइज़क बैरो ने उनकी विलक्षण प्रतिभा को देखते हुए अपना पद त्याग कर दिया ताकि वे वहां प्रोफेसर बन सकें। इस प्रकार, महज 27 वर्ष के उम्र में न्यूटन ट्रिनिटी कॉलेज में गणित के प्रोफेसर पद पर नियुक्त हुए। सन् 1705 में ब्रिटेन की महारानी ऐन ने कैम्ब्रिज में एक विशेष समारोह में न्यूटन को 'सर' पदवी से सम्मानित किया।

क्या हुए– न्यूटन ने प्रकृति के अनेक अनजाने रहस्यों को पता लगाया। उन्होंने बताया कि सूर्य का सफेद दिखने वाला प्रकाश वास्तव में सात रंगो से बना है। इन सात रंगों को प्रिज़्म की सहायता से अलग किया जा सकता है। न्यूटन ने गति के तीन नियम प्रतिपादित किये। उन्होंने गणित में कैलकुलस की नींव डाली। वे एक दार्शनिक भी थे। उन्होने अपने जीवनकाल में कई पुस्तकें लिखी।

85 साल की उम्र में न्यूटन रॉयल सोसायटी की एक मीटिंग की अध्यक्षता करके लौटते समय बीमार पड़ गए और 20 मार्च, 1727 को उनका देहान्त हो गया। क्या आप जानते हैं कि बल का एक मात्रक 'न्यूटन' भी है।

(विज्ञान भाग 3, पृष्ठ 60 के पाठ 12 के संदर्भ में बच्चों को बतायें। बड़े बच्चों के साथ न्यूटन के नियमों की चर्चा करें।)

म्यांमार का स्वतंत्रता दिवस (4 जनवरी)–

म्यांमार (बर्मा) एशिया महाद्वीप में स्थित एक देश है। प्रारंभ में इसका नाम बर्मा था तथा ब्रिटिश भारत का एक अंग हुआ करता था। अप्रैल, 1937 में यह ब्रिटिश राष्ट्रमंडल का एक पृथक राज्य बन गया। 4 जनवरी, 1948 को बर्मा स्वतंत्र हुआ। इसके बाद इसका नाम बदलकर 'यूनियन ऑफ बर्मा' रखा गया। मई, 1989 में इसका नाम बदलकर 'यूनियन ऑफ म्यांमार' रखा गया। 9 अप्रैल, 1994 को म्यांमार में संविधान लागू किया गया और तब से इसे म्यांमार गणतंत्र के नाम से जाना जाता है। इसका अधिकृत नाम 'म्यांमार नैनंग्गनदाव' है। इसकी राजधानी रंगून (यंगून) है। यहाँ पर बौद्ध धर्मावलंबियों की जनसंख्या अधिक हैं। यहाँ की भाषा बर्मी और कबिलाई है। म्यांमार की मुद्रा क्यात है। यहाँ की संसद का नाम 'पियुदांग्सू हलूताव' है। म्यांमार को 'पैगोडा का देश' भी कहा जाता है।

5 जनवरी

मुगल बादशाह शाहजहाँ (1592– 1666ई.)

मुगल वंश का पाँचवां शासक शाहजहाँ का जन्म 5 जनवरी, 1592 ई. को लाहौर में हुआ था। शाहजहाँ के पिता जहाँगीर और माता जगत गोसाईं (जोधाबाई) थी, जो जोधपुर के राजा उदय सिंह की पुत्री थी। शाहजहाँ के बचपन का नाम खुर्रम (शाब्दिक अर्थ– आनंददायक) था। जहाँगीर के शासनकाल में शाहजहाँ ने दक्षिण को विजित किया, जिससे प्रसन्न होकर जहाँगीर ने खुर्रम को 'शाहजहाँ' की उपाधि प्रदान की। 1612 ई. में शाहजहाँ का विवाह आसफ ख़ाँ की पुत्री अरजुमन्द बानो बेगम से हुआ था। इसे शाहजहाँ ने मल्लिका–ए–जमानी (मुमताज महल) की उपाधि प्रदान की थी। शाहजहाँ अपनी पत्नी मुमताज महल से बेइंतहां मुहब्बत करता था। अपनी बेगम की मृत्यु के बाद शाहजहाँ ने उसके शव को आगरा में दफनाकर उसकी याद में 'ताजमहल' नामक विश्वविख्यात मकबरा उसकी कब्र पर बनवाया।

1627ई. में जब जहाँगीर की मृत्यु हो गई तो उसकी पत्नी नूरजहाँ ने अपने दामाद शाहजादा शहरयार को गद्दी पर बिठाना चाहा, जबकि आसफ खाँ ने शाहजहाँ का पक्ष लिया। शाहजहाँ उस समय दक्षिण में था तथा शीघ्र वहाँ नहीं पहुँच सकता था। परिणामस्वरूप, आसफ खाँ ने खुसरों के दूसरे पुत्र दावरबख्श को सिंहासन पर बैठा दिया। नूरजहाँ ने सार्वजनिक जीवन से अवकाश प्राप्त कर लिया तथा शहरयार को बंदी बना लिया गया। 1628 ई. में शाहजहाँ के आगमन पर उसका राज्याभिषेक किया गया और दावरबख़्श को फारस भेज दिया गया। 24 फरवरी, 1628 ई. को शाहजहाँ 'अबुल मुजफ्फर शहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब किरन–ए–सानी' की उपाधि धारण कर सिंहासन पर आसीन हुआ। शाहजहाँ के मशहूर 'मयूर सिंहासन' में विश्व का सबसे महँगा कोहिनूर हीरा जड़ा था। शाहजहाँ का शासनकाल 'स्थापत्यकला का स्वर्णयुग' माना जाता है। शाहजहाँ द्वारा बनवायी गयी प्रमुख इमारतें दिल्ली का लालकिला, ताजमहल, दीवान–ए–आम, दीवान–ए–खास, दिल्ली का जामा मस्जिद, आगरा का मोती मस्जिद, लाहौर का किला, शीश महल, नौलखा महल आदि प्रमुख हैं। शाहजहाँ ने 'इलाही संवत्' के स्थान पर 'हिजरी संवत्' चलाया था।

सितम्बर, 1657 ई. में शाहजहाँ गंभीर रूप से बीमार पड़ गया और उसकी मृत्यु की अफ़वाह फैल गयी और उसके पुत्रों के बीच उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ गया। शाहजहाँ के चारों पुत्र (दाराशिकोह, शाहशुजा, औरंगजेब तथा मुरादबक्श) आपस में लड़ने लगे। इसी क्रम में 5 जनवरी, 1659 ई. को इलाहाबाद के पास खाज़वाह नामक स्थान पर शाहजहाँ के दूसरे पुत्र शाह शूजा और तीसरे पुत्र औरंगजेब के बीच युद्ध हुआ। इसमें शूजा पराजित होकर अराकान भाग गया जहाँ उसकी मृत्यु हो गयी। यद्यपि शाहजहाँ ने अपने प्रथम पुत्र दाराशिकोह को अपनी गद्दी सौंपनी चाही थी क्योंकि चारों संतानों में वह सर्वाधिक विद्वान, शिक्षित और सभ्य था। लेकिन औरंगजेब ने बलपूर्वक अपने तीनों भाइयों को मार डाला और गद्दी का बलपूर्वक वारिस बन गया।

औरंगजेब ने 8 जून, 1658 ई. को अपने पिता शाहजहाँ को बंदी बना लिया। आगरा के किले के शाहबुर्ज में एक बन्दी के रूप में शाहजहाँ ने अपने कैदी जीवन में आठ वर्ष बिताए। इस दौरान उसकी बड़ी पुत्री जहाँआरा ने साथ रहकर उसकी सेवा की। 22 जनवरी, 1666 ई. को 74 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। उसकी मृत्यु के बाद साधारण नौकरों द्वारा ताजमहल में उसकी पत्नी की कब्र के बगल में उसे दफना दिया गया। शाहजहाँ की जीवनी 'शाहजहाँनामा' के लेखक इनायत खाँ हैं।

(संदर्भः अतीत से वर्तमान भाग 2, पाठ 4 अथवा पृष्ठ 74 के संदर्भ में बच्चों को बतायें।)

कागज़ी मुद्रा की कहानी

बच्चों, यूरोप में पहली बार 1691 ई. में कागज़ी मुद्रा स्वीडन के बैंक ने जारी किया था। आज इस अवसर पर हम भारत में कागजी मुद्रा के सफ़र की कहानी तुम्हें बताते हैं।

भारत की सबसे पहली कागजी मुद्रा कलकत्ता के 'बैंक ऑफ हिंदोस्तान' ने 1770 ई. में जारी की थी। इन ब्रिटिश कंपनियों का व्यापार जब बंगाल से बढ़कर बॉम्बे, मद्रास तक पहंच गया, तब इन जगहों पर अलग–अलग बैंकों की स्थापना शुरू हुई। वर्ष 1773 में 'बैंक ऑफ बंगाल एंड बिहार' की स्थापना हुई। वहीं 1886 ई. में प्रेसीडेंसी बैंक की स्थापना हुई। अब जब देश में बैंक बढ़े, तो कागजी मुद्रा का चलन भी आम हो गया। बैंक ऑफ बंगाल द्वारा तीन सीरीज में नोट छापे गये। पहली सीरीज एक स्वर्ण मुद्रा के रूप में छापी गयी यूनिफेस्ड सीरीज थी। यही सीरीज कलकत्ता में सिक्सटीन सिक्का रूपये के तौर पर छापी गयी। दूसरी सीरीज कॉमर्स सीरीज थी, जिस पर एक तरफ नागरी, बंगाली और उर्दू में बैंक का नाम लिखने के साथ ही एक महिला की तस्वीर भी छपी थी और दूसरी तरफ बैंक का नाम लिखा था। तीसरी सीरीज 19 वीं सदी के अंत में छापी गयी, जिसे 'ब्रिटैनिका सीरीज' कहा गया। उसके पैटर्न में बदलाव होने के साथ ही कई रंगों का प्रयोग किया गया।

वर्ष 1861 में तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने विक्टोरिया पोर्ट्रेट सीरीज के तहत अपना कागजी मुद्रा जारी करना शुरू किया। सभी नोटों पर महारानी विक्टोरिया की छोटी सी तस्वीर लगी होती थी। बाद में यही मुद्रा भारत सरकार की अधिकारिक मुद्रा बनी। वर्ष 1923 में ब्रिटिश सरकार की कागजी मुद्रा पर किंग जॉर्ज पंचम का चित्र भी छपा। वर्ष 1935 में ब्रिटिश सरकार ने रूपये जारी करने का अधिकार रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया को दे दिया। इसके बाद रिजर्व बैंक द्वारा 1938 में पहली बार नोट जारी किया गया।

1928 में नासिक में भारत का पहला प्रिंटिंग प्रेस लगाये जाने के पहले तक सारी कागजी मुद्राएं बैंक ऑफ इंग्लैंड से छप कर आती थी। चार सालों के भीतर सभी भारतीय नोट इसी जगह से छापे जाने लगे थे। वर्ष 1944 में जापानियों द्वारा नकली नोट बनाये जाने के डर से रिजर्व बैंक ने नोटों में पहली बार सुरक्षा धागे और वाटरमार्क का प्रयोग हुआ।

आजाद भारत का पहला नोट एक रूपये का था, जिसे 1949 ई. में जारी किया गया था। इस नोट पर सारनाथ का अशोक स्तंभ अंकित था। वर्ष 1953 में भारत सरकार द्वारा जो नोट छापा गया उस पर हिन्दी भाषा में भी लिखा गया। असाक्षर लोगों के सहूलियत के लिये 1960 के दशक में अलग–अलग रंगों में नोट छापे जाने लगे। 1996 में नोट पर महात्मा गांधी की फोटो छपनी शुरू हो गयी। इसके बाद रूपये की नकल रोकने के लिए उसमें कई सारे फीचर्स डाले गये। दृष्टिहीनों की सहुलियत के लिए भी आज के नोट में कई फीचर्स डाले गये हैं।

वर्ष 2011 में नोटों पर रूपये का नये चिह्न (₹) का प्रयोग प्रारंभ किया गया। वर्ष 2017 में जारी 2000 और 500 के नोटों पर 'स्वच्छ भारत' अभियान का चिह्न है। पाँच सौ के भूरे नोट पर लाल किला और दो हजार के गुलाबी नोट पर मंगलयान मुद्रित है। बाद में 200, 100, 50, 20, और 10 रूपये के नये नोट छापे गए। 200 रूपये के नारंगी रंग के नोट पर साँची स्तूप, 100 रूपये के नीले रंग के नोट पर रानी की वाव, 50 रूपये के हरे रंग के नोट पर हम्पी, 20 रूपये के लेमन पीले रंग के नोट पर एलोरा की गुफाएं और 10 रूपये के चॉकलेटी रंग के नोट पर सूर्य मंदिर कोणार्क के चित्र मुद्रित है।

(गणित के पाठ्यपुस्तक में मुद्रा पाठ से जोड़ें और 'ज्ञानदृष्टि' का मुद्रा विशेषांक पढ़ें।)

खाज़वा की लड़ाई– 5 जनवरी, 1659 ई. को खाज़वा (खजुहा, इलाहाबाद में फतेहपुर–हसवा) के पास लड़ी गई थी। यह लड़ाई शाहजहाँ के दो बेटों औरंगजेब और शाहशुजा के बीच उत्तराधिकार के लिए लड़ा गया था। इस युद्ध में औरंगजेब विजयी हुआ और शाहशुजा अराकान भाग गया जहाँ मघों ने उसकी हत्या कर दी।

6 जनवरी

जन्मदिन विशेष (6 जनवरी) – ए. आर. रहमान

ए. आर. रहमान प्रसिद्ध भारतीय संगीतकार हैं। देश–विदेशों के लोग उनके संगीत के धुन के कायल हैं।

क्या थे– ए. आर. रहमान का जन्म 6 जनवरी, 1967 को चेन्नई, तमिलनाडु, भारत में हुआ। जन्मतः उनका नाम 'अरूणाचलम शेखर दिलीप कुमार मुदलियार' था। रहमान जब नौ साल के थे तब उनके पिता की मृत्यु हो गयी थी और परिस्थितियां इतनी बिगड़ गयी थी कि पैसों के लिए घरवालों ने रहमान के पिता के वाद्ययंत्रों को भी बेच दिया। इसी बीच उनके परिवार ने इस्लाम धर्म अपना लिया। धर्मपरिवर्तन के पश्चात् उनका नाम अल्लाह रक्खा रहमान (ए. आर. रहमान) हुआ। 11 वर्ष की आयु में बैंड ग्रुप (आर्केस्ट्रा) में काम किया।

क्या हुए– ए. आर. रहमान गोल्डन ग्लोब पुरस्कार (2009) से सम्मानित होने वाले प्रथम भारतीय हैं। फिल्म स्लमडॉग मिलेनियर में संगीत के लिए दो ऑस्कर पुरस्कार जीतने वाले प्रथम भारतीय हैं। इसी फिल्म के गीत 'जय हो' के लिए सर्वश्रेष्ठ साउंडट्रेक कंपाइलेशन और सर्वश्रेष्ठ फिल्मी गीत की श्रेणी में दो ग्रेमी पुरस्कार भी जीते।

ए. आर. रहमान को की–बोर्ड, पियानो, हारमोनियम, गिटार बजाया करते हैं। वे भारत के मशहूर संगीतकार हैं और कई सुपरहिट फिल्मों में अपनी संगीत को कंपोज किया है। ए. आर. रहमान कर्नाटकी, पाश्चात्य शास्त्रीय संगीत, हिन्दुस्तानी संगीत में महारथ हासिल है।

वर्ष 2000 में पद्म श्री और वर्ष 2010 में पद्म विभूषण से भारत सरकार ने सम्मानित किया। ये 15 बार फिल्म फेयर पुरस्कार विजेता बने।

जन्मदिन विशेष (6 जनवरी) – कपिल देव

भारत के पूर्व क्रिकेट खिलाड़ी और भारतीय कप्तान, कपिल देव रामलाल निखंज की गिनती भारत के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट खिलाड़ियों में की जाती है। वर्ष 1983 का क्रिकेट विश्व कप भारत ने उनके नेतृत्व में जीतने का गौरव प्राप्त किया है। कपिल देव का जन्म 6 जनवरी, 1959 को चंडीगढ़ में हुआ था।

उन्होंने अपने जीवन का पहला अंतर्राष्ट्रीय मैच पाकिस्तान के खिलाफ फैसलाबाद में 16 अक्टूबर, 1978 को खेला था। कपिलदेव अपने क्रिकेट जीवन में एक दिवसीय क्रिकेट में 225 और टेस्ट क्रिकेट में 131 मैच खेले। उन्होंने गेंदबाजी करते हुए एक दिवसीय तथा टेस्ट क्रिकेट में क्रमशः 253 और 434 विकेट लिए। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय टेस्ट क्रिकेट में 5,248 तथा एकदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में 3,783 रन बनाए हैं। कपिलदेव एक ऑलराउंडर खिलाड़ी थे जो कि दाएं हाथ से बल्लेबाजी एवं तेज गेंदबाजी भी करते थे। 1983 के विश्व कप में फाइनल में जिम्बाब्वे के विरुद्ध उनकी 138 गेंदों पर 175 रन की नाबाद पारी के कारण भारत क्रिकेट विश्व कप पहली बार जीता था। अपने कैरियर की अंतिम अंतर्राष्ट्रीय मैच मोहम्मद अजहरुद्दीन की कप्तानी में 1992 के विश्व कप में खेला था।

वर्ष 1999 में उन्हें भारतीय क्रिकेट टीम का प्रशिक्षक भी चुना गया। लेकिन भारतीय टीम कुछ बेहतर नहीं कर सकी। 24 सितंबर, 2008 को उन्होंने भारतीय प्रादेशिक सेना में भाग लिया और उन्हें लेफ्टिनेंट कर्नल के रूप में चुना गया। कपिल देव को वर्ष 1979 में अर्जुन पुरस्कार, 1982 में पद्मश्री और 1991 में पद्म भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। 'वी द सिख अराउंड द वर्ल्ड' पुस्तक कपिलदेव द्वारा लिखी गई है।

छत्रपति शिवाजी का सूरत पर हमला (6 जनवरी 1664)–

सन् 1661 से 1663 तक मुगल फ़ौज ने शाइस्ता खाँ के नेतृत्व में छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्य को बहुत नुकसान पहुँचाया था। गाँव के गाँव जला दिये थे और कई लोगों की हत्या कर दी थी। शिवाजी ने अप्रैल 1663 की एक रात को शाइस्ता खाँ पर अपने 400 साथियों के साथ हमला करके उसे वापस जाने पर मजबूर कर दिया पर इतने से मराठों का गुस्सा ठंडा नहीं हुआ। शिवाजी ने अपने राज्य के आर्थिक नुकसान की भरपाई के लिए सूरत पर हमला करने की योजना बनाई जो कि उस समय मुगल साम्राज्य का एक बहुत अमीर शहर था।

शिवाजी द्वारा सूरत की लूट एक साहसिक कारनामा था क्योंकि ये उस मुगल सल्तनत का शहर था जिसकी कुल सेना शिवाजी की अपनी सेना से पचास गुनी थी। हालांकि शिवाजी के लिए यह फायदेमंद रहा कि सूरत शहर की सुरक्षा के प्रति मुगल गंभीर नहीं थे और वहां एक नाम मात्र की छोटी सी फौज थी। इस मुगल फौज का कमांडर और शहर का गर्वनर इनायत खान था जो शिवाजी के आने की खबर सुनकर किले में छिप गया था।

जिस दिन शिवाजी सूरत पहुँचे थे उससे नौ दिन पहले वे मुम्बई के आस–पास थे। वहाँ से वे अपने चार हजार सैनिको के साथ इतनी तेजी से और गुप्त ढंग से सूरत पहुँचे कि वहाँ के लोगों को एक दिन के बाद उनके आने का पता चला। सूरत पहुँचकर उन्होंने शहर के पूर्वी द्वार के पास अपना डेरा डाल दिया। शिवाजी ने सूरत शहर में पहुँचते ही ऐलान कर दिया था कि वे किसी को नुकसान पहुँचाने नहीं आये हैं बल्कि औरंगजेब से उनके राज्य पर हमला करने और उनके कुछ रिश्तेदारों के कत्ल का बदला लेने आये हैं। उन्होंने शहर के गर्वनर इनायत खान के पास अपने संदेशवाहक भेजे कि वो शिवाजी को बिना किसी हिंसा के धन दे दें परन्तु उनको कोई उत्तर नहीं मिला। हालांकि अगले दिन अपना एक साथी शिवाजी के पास भेजा।

इनायत खान ने जिस संदेशवाहक को शिवाजी के पास भेजा था वह शिवाजी से बिल्कुल बेकार सी शर्तों की बात करने लगा। शिवाजी उसकी बातों से तंग आकर उसे डांटने लगे कि तभी उसने खंजर निकाल कर शिवाजी पर वार किया। वार शिवाजी पर लगता उससे पहले ही मराठा अंगरक्षक ने हमलावर का हाथ काट दिया। हमलावर इतनी तेजी से आगे बढ़ा था कि हाथ कटने के बाद भी वह शिवाजी से टकरा गया। लेकिन जल्दी ही हमलावर की खोपड़ी के दो टुकड़े कर दिए गये।

शिवाजी पर हमले से मराठा सैनिक गुस्से में आ गए। उन्होंने सूरत शहर के प्रबंधक मुगलों और अमीरों को लूटना शुरू कर दिया। पूरे शहर को लूटने में चार दिन लगे थे। 6 जनवरी से 10 जनवरी, 1664 तक लूट हुई।

शिवाजी ने यह नियम बना रखा था कि वे लूट में मस्जिदों, धर्म–ग्रन्थों और स्त्रियों को हाथ न लगायें। उन्हे जब कभी कुरान की पुस्तक मिलती वे आदरसहित अपने किसी मुसलमान साथी को दे दिया करते। सूरत हमले से शिवाजी को एक करोड़ से ज्यादा की रकम मिली थी। एक यूरोपियन व्यापारी ने सूरत की लूट के बारे में कहा है कि मराठे चाँदी, सोना, हीरे–जवाहरात, अन्य कीमती वस्तुओं के अलावे अन्य किसी वस्तुओं को हाथ भी नहीं लगाया। सूरत की लूट के समय मोहनदास पारेख नामक व्यक्ति की संपत्ति को नहीं लूटा गया था क्योंकि वह एक धार्मिक व्यक्ति था।

सूरत की लूट ने औरंगजेब को हैरान करके रख दिया। मराठों के जाने के बाद इनायत खान जब किले से बाहर निकला, तो लोगों ने उसकी हाय–हाय की। औरंगजेब ने इसके बाद राजपूत राजा जयसिंह को शिवाजी को काबू में करने के लिए भेजा जो अपने उद्देश्य में सफल रहा।

क्या आप जानते हैं?

मदर टेरेसा का भारत आगमन– 6 जनवरी, 1929 को सिस्टर टेरेसा अन्य सिस्टरों के साथ आयरलैंड से एक जहाज में बैठकर कोलकाता के 'लोरेटो' कॉन्वेंट' पहुँची थीं। भारत में गरीब और बीमार लोगों के बीच उन्होंने सेवा कार्य किया।

7 जनवरी

जन्मदिन विशेष (7 जनवरी) – जार्ज ग्रियर्सन

जार्ज ग्रियर्सन, प्रसिद्ध ब्रिटानी इतिहासकार और भाषाविज्ञानी का जन्म डबलिन, आयरलैंड में हुआ था। वे ब्रिटिश शासन काल में 'इंडियन सिविल सर्विस' के कर्मचारी थे। भाषा विज्ञान के क्षेत्र में एवं 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' के प्रणेता के रूप में अमर स्थान है। 1880 में 'इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल्स', बिहार और 1869 तक पटना के 'एडिसनल कमिश्नर और औपियम एजेंट', बिहार के रूप में कार्य किया। वे अपना अधिकतर समय संस्कृत, प्राकृत, पुरानी हिन्दी, बिहारी और बांग्ला भाषाओं का अध्ययन में लगाते थे।

जार्ज ग्रियर्सन को भारतीय संस्कृति और यहाँ के निवासियों के प्रति अगाध प्रेम था। इन्होंने बिहारी भाषाओं का अध्ययन किया और 'बिहारी भाषाओं के सात व्याकरण' 1883 से 1887 ई. तक प्रकाशित किया।

जन्मदिन विशेष (7 जनवरी) – इरफान खान

साहबजादे इरफ़ान अली खान फिल्म जगत के जानेमाने अभिनेता थे। उनका जन्म 7 जनवरी, 1967 ई. को राजस्थान के टोंक में हुआ था। वे बचपन में क्रिकेट खेलने में काफी अच्छे थे। उनका सेलेक्शन प्रथम श्रेणी क्रिकेट में हुआ था लेकिन धनाभाव के कारण वे भाग नहीं ले सके। बाद में उन्होंने नई दिल्ली में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में अभिनय में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने बॉलीवुड फिल्मों जैसे अंग्रेजी मिडियम, हिन्दी मिडियम, द लंच बॉक्स, मदारी, पीकू, बिल्लू बारबर, पान सिंह तोमर, मक़बूल, पार्टीशन, के साथ–साथ हॉलीवुड फिल्मों जैसे स्लमडॉग मिलिनेयर, लाइफ ऑफ पाई, द अमेजिंग स्पाइडर मैन आदि में भी काम किया था। वर्ष 2011 में उन्हें भारत सरकार द्वारा 'पद्म श्री' से सम्मानित किया गया। 'पान सिंह तोमर' में अभिनय के लिए उन्हें वर्ष 2012 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्रदान किया गया था। वर्ष 2017 में प्रदर्शित फिल्म 'हिंदी मिडियम' के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता चुना गया था।

बच्चों को क्या बतायें? आज आप बच्चों को उनकी बेहतरीन फिल्में जैसे स्लमडॉग मिलेनियर, द लंच बॉक्स, हिन्दी मिडियम, पान सिंह तोमर, लाइफ ऑफ पाई जैसी फिल्में दिखा सकते हैं।

निकोला टेस्ला का निधन (7 जनवरी)

निकोला टेस्ला अपने समय के मशहूर वैज्ञानिक थे। उनका जन्म 10 जुलाई, 1856 को क्रोशिया देश में हुआ। टेस्ला ने प्रत्यावर्ती धारा का अविष्कार किया। बिना तार के बिजली भेजने का फॉमूला अर्थात् वायरलेस कम्युनिकेशन, रिमोट कंट्रोल, रेडियो ट्रांसमीटर और फ्लोरोसेन्ट लैम्प का अविष्कार भी टेस्ला ने किया था। अमेरिका के नियाग्रा फॉल पर पहला हाइड्रो–इलेक्ट्रिक प्लांट भी उन्हीं की देन है। उन्होंने एडिसन के साथ भी काम किया लेकिन एक वैचारिक मतभेद के कारण उन्होंने अलग टेस्ला इलेक्ट्रिक कंपनी स्थापित किया।

उन्हें करीब आठ भाषाओं का ज्ञान था। निकोला टेस्ला अपने प्रयोग का पूर्ण विवरण डायरी में नहीं लिखते थे। उन्हें अपने स्मरण शक्ति पर ज्यादा भरोसा था। अतः 7 जनवरी, 1943 में उनकी मौत के बाद उनके अधूरे कार्य रहस्य बन कर रह गये।

(संदर्भः बच्चों को **विज्ञान भाग 1 के पाठ 14** में एडीसन के कहानी के साथ अथवा **विज्ञान भाग 2 के पृष्ठ 142 फ्लोरोसेन्ट लैम्प** के संदर्भ में बतायें।)

❖ 7 जनवरी, 1930– फ्रैन्शियम (Fr) नामक तत्व, (अणु संख्या 87) की खोज मार्गेट पियरे ने की।

8 जनवरी

जन्मदिन विशेष (8 जनवरी) – स्टीफन हॉकिंग

स्टीफन हॉकिंग का जन्म 8 जनवरी, 1942 को ऑक्सफोर्ड, इंग्लैंड में हुआ था। स्टीफन के पिता फ्रैंक एक चिकित्सकीय शोधकर्ता थे जबकि उनकी माँ मेडिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट के सचिव के रूप में कार्य करती थी।

क्या थे– 1963 में स्टीफन हॉकिंग जब 21 साल के थे तब उन्हें Amyotrophic Lateral Sclerosis (ALS) नामक बीमारी हो गयी। इसके चलते उनका दिमाग छोड़कर शरीर के अधिकतर अंगों ने धीरे–धीरे काम करना बंद कर दिया था। इस बीमारी से पीड़ित लोग आमतौर पर 2–5 साल तक ही जिंदा रह पाते हैं। लेकिन इस बीमारी के साथ इतने लंबे समय तक जिंदा रहकर स्टीफन हॉकिंग ने रिकार्ड बना दिया।

इतना ही नहीं इस बीमारी से जुझने के बावजूद उन्होंने हार नहीं माना और पढ़ाई जारी रखा और कई चौकाने वाले शोध किये। उन्होंने 1965 में पी.एच.डी. की डिग्री हासिल की। स्टीफन हॉकिंग एक व्हीलचेयर के सहारे चल पाते थे और एक कम्प्यूटर सिस्टम के जरिए पूरी दुनिया से जुड़ते थे।

क्या हुए– दुनिया भर में मशहूर भौतिक विज्ञानी और कॉस्मोलॉजिस्ट स्टीफन हॉकिंग को ब्लैक होल पर उनके काम के लिए जाना जाता है। उनकी पहली पुस्तक 'ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइमः फ्रॉम द बिग बैंग टु ब्लैक होल्स' थी जो सबसे ज्यादा चर्चित हुई थी। इसके बाद कॉस्मोलॉजी पर आई उनकी पुस्तक की दो करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिकी थी और यह सबसे ज्यादा बिकने वाली वैज्ञानिक शोधपत्र माना जाता है। मौत से दो हफ्ते पहले वे दुनिया के खत्म होने की थ्योरी दे गये। उन्होंने बताया की सितारों की ऊर्जा समाप्त होने के साथ ब्रह्मांड अंधेरे की ओर बढ़ती चली जाएगी। उनका निधन 14 मार्च, 2018 ई. को हुआ।

जन्मदिन विशेष (8 जनवरी) – मोहन राकेश

मोहन राकेश का जन्म 8 जनवरी, 1925 ई. को अमृतसर में हुआ था। इनके पिता श्री करमचंद गूगलाली पेशे से वकील होते हुए भी साहित्य और संगीत में विशेष रूचि रखने वाले एक सहृदय व्यक्ति थे। उन्होंने लाहौर के ओरिएंटल कॉलेज से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद संस्कृत और हिंदी दोनों में स्नातकोत्तर किया था। शिक्षा समाप्ति के बाद इन्होंने जीविका के लिए अध्ययन कार्य आरंभ किया। मुंबई, शिमला, जालंधर और दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करने के बाद उन्होंने अनुभव किया कि अध्यापन का पेशा इनकी प्रवृत्ति के अनुकूल नहीं है।

सन् 1962 में इन्होंने सारिका (हिंदी की प्रसिद्ध कहानी पत्रिका) के संपादक का दायित्व संभाला किंतु कार्यालय की यांत्रिक कार्य पद्धति से ऊबकर इन्होंने यह कार्य भी छोड़ दिया। सन 1963 से 72 तक जीवन के अंत तक स्वतंत्र लेखन को भी जीविका का आधार बनाया। नाटक की भाषा पर कार्य करने के लिए इन्होंने इनको नेहरू फेलोशिप भी प्रदान की गई किंतु असामयिक निधन के कारण यह कार्य पूरा न हो सका।

मोहन राकेश एक उत्कृष्ट नाटककार के रूप में विख्यात हैं। किंतु इन्होंने उपन्यास, कहानी, निबंध, यात्रावृतांत, आत्मकथा को भी समृद्ध किया। इनकी रचनाएं निम्नांकित है– (1) नाटक–आषाढ़ के एक दिन, आधे–अधूरे, अंडे के छिलके, लहरों के राजहंस (2) उपन्यास– अंधेरे बंद कमरे में, ना आने वाला कल, अंतराल (3) कहानियां– वारिस, क्वार्टर, पहचान (4) निबंध संग्रह– परिवेश (5) यात्रा विवरण– आखिरी चट्टान तक (6) जीवन संकलन–समय सारथी आदि।

जन्मदिन विशेष (8 जनवरी) – आशापूर्णा देवी

ज्ञानपीठ पुरस्कार (1976ई.) से सम्मानित पहली महिला आशापूर्णा देवी बंगाल की प्रसिद्ध उपन्यासकार और कवियत्री हैं। उनका जन्म 8 जनवरी, 1909 को कोलकाता में हुआ था। उनके पिता हरेंद्र नाथ गुप्त एक कलाकार थे। माँ का नाम सरोला सुंदरी था। उनकी दादी पुराने रीति–रिवाजों और रूढ़िवादी आदर्शों की कट्टर समर्थक थीं। उनकी दादी ने घर की लड़कियों के स्कूल जाने तक पाबंदी लगा लगा रखी थी। लेकिन आशापूर्णा देवी बचपन में अपने भाइयों के पढ़ने के दौरान उन्हें सुनती और देखती थी। इस प्रकार उनकी प्रारंभिक शिक्षा हुई। जब उनके पिता अपने परिवार के साथ दूसरी जगह आ गए तो वहाँ उनकी पत्नी और बेटियों को स्वतंत्र माहौल मिला। उन्हें पुस्तकें पढ़ने का मौका मिला।

वर्ष 1976 में उन्हें 'प्रथम प्रतिश्रुति' के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। आशापूर्णा देवी ने कई बाल साहित्य भी लिखे। उनका पहला उपन्यास 'प्रेम और प्रयोजन' था जो वर्ष 1944 में प्रकाशित हुआ। उपन्यासकार और लघु कथाकार के रूप में योगदान के लिए उन्हें साहित्य अकादमी द्वारा वर्ष 1994 में सर्वोच्च सम्मान 'साहित्य अकादमी फेलोशिप' से सम्मानित किया गया। वर्ष 1964 में 'टैगोर पुरस्कार' और 1976 में उन्हें 'पद्मश्री' से भी सम्मानित किया गया था। आशापूर्णा देवी का निधन 13 जुलाई, 1995 को हुआ था।

सोमनाथ मंदिर, गुजरात

हिन्दु मान्यता के अनुसार, चंद्र देवता सोमराज ने यहाँ पर सोने का मंदिर बनवाया था। तभी से यह सोमनाथ मंदिर के नाम से जाना जाता है। सोमनाथ मंदिर भारत के पश्चिमी तट पर गुजरात में समुद्र तट पर स्थित है। भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक सोमनाथ मंदिर पर 8 जनवरी, 1026 ई. को मुहम्मद ग़ज़नवी ने करीब 5000 साथियों के साथ हमला कर उसे ध्वस्त कर दिया था। इस हमले में ग़ज़नवी ने मंदिर की संपत्ति लूटी और हजारों लोग मारे गये थे। इसके बाद गुजरात में राजा भीम और मालवा के राजा भोज ने इसका पुनर्निर्माण कराया। हालांकि ग़ज़नवी से पहले भी सोमनाथ मंदिर पर कई हमले हो चुके थे और उसके बाद भी मंदिर पर हमले किये गए। अत्यंत वैभवशाली होने के कारण कई बार यह मंदिर तोड़ा गया और पुनर्निर्मित किया गया।

कहा जाता है कि सबसे पहले एक मंदिर ईसा के पूर्व में अस्तित्व में था जिस जगह पर दूसरी मंदिर का पुनर्निर्माण सातवीं सदी में वल्लभी के मैत्रक राजाओं ने किया। आठवीं सदी में सिन्ध के अरबी गर्वनर जुनायद ने इसे नष्ट करने के लिए अपनी सेना भेजा। प्रतिहार राजा नागभट्ट ने 815 ई. में इसका तीसरी बार पुनर्निर्माण किया। मंदिर का बार–बार खंडन और जीर्णोद्धार होता रहा।

साल 1297 में जब दिल्ली सल्तनत ने गुजरात पर कब्जा कर लिया तो इसे फिर गिराया गया। मुगल बादशाह औरंगजेब ने पुनः 1706 ई. में गिरा दिया। इस समय जो मंदिर खड़ा है उसे भारत के पूर्व मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने 1951 में बनवाया था।

*(**संदर्भः** बच्चों को **अतीत से वर्तमान भाग 2, पृष्ठ 28** के संदर्भ में विशेष रूप से सोमनाथ मंदिर के इतिहास के बारे में बतायें।)*

गैलीलियो गैलिली का निधन (8 जनवरी)–

गैलीलियो गैलिली एक इतालवी खगोलशास्त्री, भौतिक विज्ञानी और गणितज्ञ थे। गैलीलियो पहले व्यक्ति थे जिन्होंने चन्द्रमा पर क्रेटरों व पहाड़ों, वृहस्पति ग्रह के चार उपग्रहों का खोज किया था। प्रकाश की गति नापने का सबसे पहला प्रयास गैलीलियो ने ही किया था। उसने खगोलिय अध्ययन के लिए शक्तिशाली दूरबीन स्वयं बना ली थी जिसे आज भी गैलीलियो टेलीस्कोप कहा जाता है।

गैलीलियो गैलिली ने चर्च के विचारों को खंडन किया था, इसलिए उन्हें न्यायिक जाँच और कई अन्य यातनाओं का सामना करना पड़ा। गैलीलियो ने सर्वप्रथम लोगों को बताया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। जबकि उस समय मान्यता यह थी की पृथ्वी स्थिर है और सूर्य इसकी चक्कर लगाती है। जब कैथोलिक चर्च को गैलीलियो के कार्यों के बारे में पता चला तो उन्होंने इसे ईसाई धर्म की आस्था पर चोट माना। उन्हें चेतावनी दी गई कि वे इस विचार का प्रचार बंद करें। इसके बाद उन्होंने अपनी पुस्तक 'डाइलॉग्स कन्सर्निंग दि टू प्रिंसिपल सिस्टम ऑफ दि वर्ल्ड' प्रकाशित करवाई जो बड़ी प्रसिद्ध हुई। इस पुस्तक में उन्होंने अपने विचारों का खुलकर प्रतिपादन किया जिससे गैलीलियो को रोम में पदरियों के सम्मुख उपस्थित होना पड़ा। अधिकारियों द्वारा दबाव डाला गया कि यदि वे अपने विचारों का झूठा मान लें तो उन्हें माफ किया जा सकता है लेकिन उन्होंने कहा कि 'पृथ्वी ही सूर्य के चारों ओर घुमती है और यह सत्य है।' गैलीलियो को उम्रकैद की सजा सुना दी गई, पर बाद में उन्हें घर पर नज़रबंद कर दिया गया। घर में नज़रबंद रहने के बावजूद गैलीलियो ने लिखना जारी रखा पर उनके आखरी कुछ सालों में (1637 में) आँखों की रोशनी चली गई और वे अंधे हो गये। 8 जनवरी, 1642 ई. को 78 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। उनके मरने के तीन सौ साल बाद 31 अक्टूबर, 1992 को पोप जॉन पॉल ने माना कि उस समय चर्च गलत था और गैलीलियो सही थे।

बोरेक्स की खोज–

'सोने पर सुहागा' कहावत तो आपने सुना होगा। डॉ. जॉन वीच ने 8 जनवरी, 1856 ई. को 'बोरेक्स' की खोज की थी। बोरेक्स को आयुर्वेद में टंकण भस्म, रासायनिक भाषा में हाइड्रेटेड सोडियम बोरेट तथा व्यापारिक भाषा में सुहागा के नाम से जाना जाता है। यह एक क्रिस्टलीय ठोस पदार्थ है। यह बाजार में प्रायः मुलायम सफेद पाउडर के रूप में मिलता है जो पानी में आसानी से घुल जाता है। सुहागा तिब्बत, पेरू, कनाडा, अर्जेंटिना, चिली, इटली, रूस, लद्दाख और कश्मीर में बहुत मिलता है। यह सोना गलाने के काम में, फफूँदनाशी के रूप में, कीटनाशक के रूप में, अग्निरोधी के रूप में तथा औषधि के काम में आता है। बोरेक्स का रासायनिक सूत्र $Na_2[B_4O_5(OH)_4].8H_2O$ है।

इतिहास के पन्नों में 8 जनवरी का दिन

- 1026– सुल्तान महमूद ग़ज़नवी ने सोमनाथ मंदिर को लूट कर उसे नष्ट कर दिया।
- 1790– अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति जॉर्ज वॉशिंगटन ने पहली बार देश को संबोधित किया।
- 1856– 'बोरेक्स' (हाइड्रेटेड सोडियम बोरेट) की खोज डॉ. जॉन वीच ने कैलिफोर्निया, यू.एस. ए. में की। बोरेक्स एक बोरॉन का यौगिक, एक द्रव व बोरिक एसिड का साल्ट है।
- 1909– आशापूर्णादेवी, उपन्यासकार का जन्म।
- 1912– अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस का गठन हुआ।
- 1925– मोहन राकेश, साहित्यकार का जन्म।
- 1942– स्टीफन हॉकिंग का जन्म।

जन्मदिन विशेष (9 जनवरी) – सुन्दरलाल बहुगुणा

पर्यावरण की सुरक्षा में अपना जीवन समर्पित करने वाले सुंदरलाल बहुगुणा का जन्म 9 जनवरी, 1927 को उत्तराखण्ड के टिहरी में 'मरोड़ा' नामक गाँव में हुआ था। अपनी प्राथमिक शिक्षा के बाद वे लाहौर चले गए और वहीं से बी. ए. किए। सन 1949 में मीराबेन व ठक्कर बाप्पा के सम्पर्क में आने के बाद ये दलित वर्ग के विद्यार्थियों के उत्थान के लिए प्रयासरत हो गए तथा उनके लिए टिहरी में ठक्कर बाप्पा होस्टल की स्थापना भी किए। दलितों को मन्दिर प्रवेश का अधिकार दिलाने के लिए उन्होंने आन्दोलन छेड़ दिया।

सुन्दरलाल बहुगुणा भारत के एक महान पर्यावरण–चिन्तक एवं चिपको आन्दोलन के प्रमुख नेता थे। उन्होंने हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में वनों के संरक्षण के लिए संघर्ष किया। उनकी पत्नी भी उनके आन्दोलन से जुड़ी हुईं थीं। 1970 के दशक में पहले वे चिपको आन्दोलन से जुड़े रहे और 1990 के दशक से 2004 तक के दशक में टिहरी बाँध के निर्माण के विरुद्ध आन्दोलन से। वे भारत के आरम्भिक पर्यावरण प्रेमियों में से एक हैं।

अपनी पत्नी श्रीमती विमला नौटियाल के सहयोग से इन्होंने सिलयारा में ही पर्वतीय नवजीवन मण्डल की स्थापना भी की। सन 1971 में शराब की दुकानों को खोलने से रोकने के लिए सुन्दरलाल बहुगुणा ने सोलह दिन तक अनशन किया। चिपको आंदोलन के कारण वे विश्वभर में 'वृक्षमित्र' के नाम से प्रसिद्ध हो गए। उन्होंने नारा दिया था–

क्या हैं जंगल के उपकार, मिट्टी पानी और बयार।
मिट्टी पानी और बयार, जिंदा रहने के आधार।।

उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से भेंट की और उनसे 15 सालों तक के लिए पेड़ों के काटने पर 15 साल के लिए रोक लगाने का आग्रह किया। इसके बाद पेड़ों को काटने पर 15 साल के लिए रोक लगा दी गई। 1980 की शुरूआत में बहुगुणा ने हिमालय की 5000 किमी. की यात्रा की। उन्होंने लोगों के बीच पर्यावरण सुरक्षा का संदेश फैलाया। भारत सरकार ने उन्हें वर्ष 2009 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया। उन्होंने नोबेल शांति पुरस्कार और वर्ष 1981 में पद्म श्री पुरस्कार लेने से इस लिये मना कर दिया कि 'जब तक पेड़ों की कटाई जारी है मैं अपने को इस सम्मान के योग्य नहीं समझता।'

बहुगुणा के कार्यों से प्रभावित होकर अमेरिका की फ्रेण्ड ऑफ नेचर नामक संस्था ने 1980 में इनको पुरस्कृत भी किया। इसके अलावा उन्हें कई सारे पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। पर्यावरण को स्थाई सम्पति माननेवाले ये महापुरुष 'पर्यावरण गाँधी' भी कहलाते हैं। 21 मई, 2021 को 94 वर्ष की आयु में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश में उनका निधन हो गया।

(संदर्भः बच्चों को **विज्ञान भाग 3 पाठ 12** के संदर्भ में बतायें।)

✍**केशव कुमार**
प्राथमिक शिक्षक
राजकीय बुनियादी विद्यालय बखरी
प्रखण्ड– मुरौल, जिला– मुजफ्फरपुर
मोबाइल नंबर– 8969900475

जन्मदिन विशेष (9 जनवरी) – डॉ0 हरगोबिंद खुराना

पेड़ के नीचे पढ़ाई करने वाले एक छोटे से गाँव के लड़के से नोबेल विजेता बनने तक का सफ़र की दास्तान...

हरगोविन्द खुराना का जन्म अविभाजित भारत में मुल्तान जिले (पंजाब) के रायपुर नामक गाँव में हुआ था। वे जब 12 वर्ष के थे, तभी उनके पिता लाला गणपतराय का निधन हो गया। इससे परिवार का बोझ इनकी माँ कृष्णा देवी पर आ गया। वे विद्यार्थी जीवन से ही प्रतिभावान थे। वे अकसर पढाई में इतने मगन हो जाते कि भूख–प्यास तक बिसरा देते थे। हरगोबिन्द को बचपन से ही गणित में विशेष रूचि थी। वे खाना बनाते समय माँ के सामने शर्त लगाते कि– 'पहले उनके गणित के सवाल हल होते हैं या फिर माँ की रोटी उतरती है' और इस शर्त में अकसर वे ही सफल होते। वे सभी परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी में उर्तीण हुए। पंजाब विश्वविद्यालय से सन् 1943 में स्नातक करने के पश्चात् 1945 में रसायन विज्ञान से स्नातकोत्तर की परीक्षा पास की। भारत सरकार से छात्रवृति प्राप्त कर इंग्लैंड गए। सन् 1948 में उन्हें डाक्टरेट की उपाधि प्राप्त हुई।

इसी बीच भारत आजाद हो चुका था। देश के बँटवारे के कारण उनका परिवार मुल्तान से आकर दिल्ली बस गया। उनके बड़े भाई नंदलाल उन दिनों दिल्ली के एक स्कूल में अध्यापक थे। हरगोविन्द अपनी पढ़ाई पूरी करके अपने भाई के पास आ गये। उन्होंने दिल्ली और बेंगलुरू सहित देश के कई प्रयोगशालाओं में नौकरी के लिए आवेदन दिया किंतु काम न मिला। इससे उन्हें निराशा हुई और वे वापस इंग्लैंड चले गये। डॉ0 खुराना कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में शोध कार्य करने लगे। 1952 में उनके पास कोलम्बिया विश्वविद्यालय से बुलावा आया। वे वहाँ चले गये और जैव रसायन विभाग के अध्यक्ष चुन लिये गये। वहाँ पर रहकर उन्होंने आनुवांशिकी में शोध करने का निश्चय किया। सन् 1960 में डॉ0 खुराना अमेरिका चले गये और उनका मन वहीं लग गया। सन् 1966 में उन्होंने अमेरिका की नागरिकता ग्रहण कर ली। अमेरिका में उन्होंने विस्कॉसिन विश्वविद्यालय के एंजाइम शोध संस्थान के सहायक निदेशक नियुक्त हुए। आगे चलकर वे संस्थान के महानिदेशक भी बने। डॉ0 खुराना ने एंजाइम शोध संस्थान में रहते हुए प्रोटीन संश्लेषण में जेनेटिक कोड की भूमिका पर शोध किया। उनके इस शोध में अमेरिकी वैज्ञानिक मार्शल निरेनबर्ग और डॉ0 रॉबर्ट डब्ल्यू. रैले ने सहयोग दिया। उनका यह शोध बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ, जिस पर उन्हें वर्ष 1968 का चिकित्सा विज्ञान का नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन् 1969 में डॉ0 खुराना भारत आए। उस समय भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण से अलंकृत किया।

प्रवासी भारतीय दिवस (9 जनवरी)

महात्मा गांधी के दक्षिण अफ्रीका से स्वदेश वापस आने के स्मृति में भारत सरकार द्वारा 9 जनवरी को प्रवासी भारतीय दिवस दिवस मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने की शुरूआत 2003 में हुई थी। इस अवसर पर विशेष उपलब्धियों को हासिल करने वाले प्रवासी भारतवंशियों को सम्मानित किया जाता है। महात्मा गांधी को सबसे बड़ा प्रवासी माना जाता है जिन्होने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के ऊपर हो रहे नस्लवादी अन्याय, भेदभाव और हीनता को देखकर उन्होने अन्याय के खिलाफ विरोध प्रारम्भ कर दिया। उन दिनों भारत से दक्षिण अफ्रीका पहुँचे मजदूरों और व्यापारियों को मत देने का अधिकार नहीं था तथा उन्हें पंजीकरण कराना होता था। उनको गंदी बस्तियों में रहना होता था जो उनके लिए निर्धारित थी। गांधी जी इन स्थितियों में विरोध में चलने वाले संघर्ष के शीघ्र ही नेता बन गये।

प्रवासी भारतीय दिवस कार्यक्रम प्रत्येक दो वर्ष पर आयोजित किया जाता है।

(संदर्भः अतीत से वर्तमान भाग 3, पृष्ठ 142 के संदर्भ में बच्चों को बताएं।)

10 जनवरी

ताशकन्द समझौता

अगस्त, 1965 के पहले सप्ताह में पाकिस्तान के 30–40 हजार सैनिकों ने कश्मीर से लगी भारतीय सीमा में घुसने के लिए 'ऑरेशन जिब्राल्टर' चलाया था। इसका लक्ष्य कश्मीर के चार ऊँचाई वाले क्षेत्र गुलमर्ग, पीरपंजाल, उरी और बारामूला पर अधिकार कब्जा करना था ताकि यदि भारी लड़ाई छिड़े तो पाकिस्तान की सेना ऊँचाई पर बैठकर भारतीय सेना की दाँत खट्टे कर सके और अंत में कश्मीर पर कब्जा कर सके।

भारत को पाकिस्तान के इस चाल की जानकारी लग गई और 1965 में दोनों देशों के बीच युद्ध छिड़ गया। पाकिस्तान को चीन पूरा समर्थन दे रहा था लेकिन इस समय चीन की रूस और अमेरिका के साथ अच्छे संबंध नहीं थे इसी कारण चीन सीधे तौर पर युद्ध में नहीं था। भारत की सेना ने पाकिस्तान की सेना को लाहौर के बाहर तक खदेड़ दिया। 10 सितम्बर, 1965 की रात को भारत ने पाकिस्तान पर ऐसा जबरदस्त हमला किया कि पाकिस्तानी सेना अपनी 25 तोपों को छोड़कर भाग गयी। भारतीय सेना के हवलदार वीर अब्दुल हमीद ने पाकिस्तान के कई टैंक बर्बाद कर दिये।

20 सितम्बर, 1965 को भारतीय प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने अपनी आर्मी चीफ जयंतो नाथ चौधरी से पूछा कि अगर जंग कुछ दिन और चले तो क्या फायदा होगा? सेना प्रमुख ने कहा कि आर्मी के पास गोला–बारूद खत्म हो रहा है। इसीलिए अब और जंग लड़ पाना भारत के लिए ठीक नहीं है। उन्होंने प्रधानमंत्री को सलाह दी कि भारत को रूस और अमेरिका की पहल पर संघर्ष विराम का प्रस्ताव मंजूर कर लेना चाहिए और शास्त्री जी ने ऐसा ही किया। इन स्थितियों में भारत को सिर्फ सोवियत संघ पर ही भरोसा था। इसलिए सोवियत ने जनवरी 1966 के पहले हफ्ते में समझौते की शर्तों पर विचार करने के लिए भारत और पाकिस्तान को ताशकंद में बुलाया। ताशकंद, उज्बेकिस्तान में आता है और उस समय सोवियत संघ का हिस्सा था।

10 जनवरी, 1966 की तारीख को लाल बहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान ने ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर किये। समझौते में तय हुआ कि जंग से पहले दोनों देशों कि जो स्थिति थी वही बनी रहेगी। भारत ने स्वीकार कर लिया कि वह पाकिस्तान से जीते सारे उसे इलाके लौटा देगा।

विश्व हिन्दी दिवस (10 जनवरी)

विश्व हिन्दी दिवस प्रतिवर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है। विश्व हिन्दी दिवस का उद्देश्य विश्वभर में हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए वातावरण निर्मित करना है और हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है।

हिन्दी दुनिया भर में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली 5 भाषाओं में से एक है। नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश, अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, न्यूजीलैंड, संयुक्त अरब अमीरात, युगांडा, त्रिनिदाद, मॉरिशस, गुयाना, सुरीनाम और दक्षिण अफ्रीका समेत कई देशों में हिन्दी बोली जाती है।

विश्व हिन्दी दिवस मनाने की शुरूआत पूर्व प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी 2006 को की थी। दुनिया भर में हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में आयोजित किया गया था।

जन्मदिन विशेष (10 जनवरी) – ऋतिक रोशन

ऋतिक रोशन का जन्म 10 जनवरी, 1974 को मुंबई में बॉलीवुड के एक पंजाबी परिवार में हुआ था। जन्म से ही उनके दाहिने हाथ पर एक अतिरिक्त अँगूठे थे। वे छह साल की उम्र में भी हकलाया करते थे जिससे उन्हें स्कूल में बहुत समस्याएं हुई। ऋतिक ने छह साल की उम्र में पहली बार फिल्म 'आशा' (1980) में काम किया था। वे कई प्रसिद्ध फिल्मों में काम कर चुके हैं जैसे– यादें, कभी खुशी कभी गम, कोई मिल गया, क्रिश, धूम 2, गुजारिश, अग्निपथ, जोधा अकबर, काबिल, सुपर 30 आदि।

सीमेन्ट का अविष्कार

सीमेन्ट का अविष्कार ईसा से लगभग ढ़ाई सौ वर्ष पहले रोम में हुआ था। रोम के लोग ज्वालामुखी से निकली हुई राख, चुना और बालू का मिश्रण भवन–निर्माण में प्रयुक्त करते थे। 'पोत्स्वालाना' नामक स्थान से यह सामग्री प्राप्त होने के कारण लोग इस मिश्रण को 'पोत्स्वालाना' कहते थे। इसके बाद जान स्टीमन नामक व्यक्ति ने चूना–पत्थर और मिट्टी के मिश्रण से सीमेंट बनाया था, जो 'पोत्स्वालाना' सीमेंट से कहीं बेहतर था।

सन् 1824 में इंग्लैंड के एक मिस्त्री, जिसका नाम जोसेफ एस्पडिन था, ने पोर्टलैंड पत्थर का प्रयोग कर सीमेंन्ट का निर्माण किया। यह सीमेन्ट स्लेटी रंग का पाउडर होता है जो नमी या पानी के सम्पर्क में आकर पत्थर जैसा कड़ा हो जाता है।

सीमेन्ट बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में कैल्शियम, सिलिकॉन, लोहा और ऐलुमिनियम का उपयोग होता है। चुना पत्थर के अंदर कैल्शियम होता है और सिलिकॉन, लोहा और ऐलुमिनियम रेत के अंदर होता है। फिर इनको साफ करके अच्छी तरह पीसा जाता है और एक पाउडर तैयार किया जाता है। आमतौर पर चूनापत्थर और रेत का अनुपात 80:20 होता है।। फिर इस चूर्ण को 1600 डिग्री सेल्सियस पर गर्म किया जाता हैं। रासायनिक प्रतिक्रिया के फलस्वरूप सीमेंन्ट का निर्माण होता है।

पोर्टलैंड पॉजोलाना सीमेंट (PPC) घर बनाने के लिए सबसे अच्छा सीमेंट माना जाता है। भारत में पहला सीमेंट कारखाना वर्ष 1904 में मद्रास (चेन्नई) में खोला गया था जो असफल रहा। इसके बाद 1912–13 में इंडियन सीमेण्ट कम्पनी लिमिटेड पोरबंदर (गुजरात) में तथा अन्य दो फैक्ट्री कटनी (मध्यप्रदेश) और लाखेरी में स्थापित की गई। वर्तमान में आंध्र प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, गुजरात और केरल सीमेण्ट के महत्वपूर्ण उत्पादक राज्य हैं। विश्व भर में सीमेण्ट उत्पादन में अग्रणी देश चीन है।

बच्चों को क्या बतायें? बच्चों से पूछें कि पक्का घर बनाने में किन–किन चीजों का इस्तेमाल होता है। सीमेंट का इस्तेमाल और कहाँ–कहाँ किया जाता है?

इतिहास के पन्नों में 10 जनवरी का दिन

- 1616– ब्रिटिश राजदूत सर टॉमस रो ने अजमेर में जहाँगीर से मुलाकात की। सर टॉमस रो मुगल दरबार में पहले अंग्रेज राजदूत नियुक्त किये गये थे।
- 1824– ब्रिटेन के रसायनशास्त्री जोसेफ एस्पडिन ने सीमेंट का आविष्कार किया।
- 1836– प्रोफेसर मधुसूदन गुप्ता ने अपने चार छात्रों के साथ मिलकर पहली बार मानव शरीर का विच्छेदन कर आंतरिक संरचना का अध्ययन किया।
- 1863– विश्व की प्रथम भूमिगत रेलवे लाइन का शुभारम्भ लन्दन में हुआ। यह ट्रेन लंदन की पैडिंग्टन से फैरिंग्टन स्ट्रीट के बीच चली थी।
- 1946– लंदन में संयुक्त राष्ट्र महासभा में पहली बैठक आयोजित की गई जिसमें 51 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- 1966– ताशकन्द समझौता पर हस्ताक्षर।

11 जनवरी

लाल बहादुर शास्त्री स्मृति दिवस (11 जनवरी)

छोटे कद के विशाल हृदय वाले महामानव लाल बहादुर शास्त्री अपने अल्पावधि के प्रधानमंत्रित्व काल में जो कर गए, वह भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखे गए हैं। प्रधानमंत्री बनाए जाने के बाद लाल किले की प्राचीर से उन्होंने कहा था– ''हम रहे या ना रहे, लेकिन यह झंडा रहना चाहिए और देश रहना चाहिए। मुझे विश्वास है कि यह झंडा रहेगा। हम और आप रहे या ना रहे लेकिन भारत का सिर ऊँचा रहेगा।''

नेहरू जी के निधन के बाद सर्वसम्मति से उन्हें राष्ट्र का प्रधानमंत्री बनाया गया। जबकि 1962 में चीन के हाथों पराजय की ग्लानि से राष्ट्र अपमान का घूँट पी रहा था। हालांकि शास्त्री जी का प्रधानमंत्रित्व काल मात्र डेढ़ वर्ष का रहा था और इस स्वल्प काल में अनेकानेक समस्याएं मुँह बाए खड़ी थी। शास्त्री जी किंचित भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने इन सभी समस्याओं को चुनौती के रूप में स्वीकार किया और उनके अनुकूल ही अपने को ढ़ालते हुए दृढ़ता और साहस का अपूर्व परिचय दिया। जब भारत खाद्य और वित्तीय संकट के विकराल परिस्थिति का सामना कर रहा था तब शास्त्री जी ने दृढ़ता और आत्मविश्वास से अमेरिका के प्रतिमाह अन्न देने के प्रस्ताव पर कहा था– ''पेट पर रस्सी बाँधो, साग सब्जी ज्यादा खाओ, सप्ताह में एक बार शाम को उपवास रखो। हमें जीना है तो इज्जत से जिएंगे वरना भूखे मर जाएंगे। बेइज्जती की रोटी से इज्जत की मौत अच्छी रहेगी।''

भारत–पाक युद्ध में उन्होंने विजय श्री का सेहरा पहनाकर भारतवासियों को चीन से हार की ग्लानि से मुक्त कर दिया। युद्ध विराम के बाद उनके शब्द थे.... ''हमने पूरी ताकत से लड़ाई लड़ी। अब हमें शांति के लिए पूरी ताकत लगानी है।''

सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति शास्त्री जी को ताशकंद जाते समय चूड़ीदार पजामा और अचकन पहन ने का अनुरोध किया गया था किंतु उन्होंने भारतीय स्वदेशी परिधान बंद गले के कोट और धोती का परित्याग नहीं किया।

10 जनवरी, 1966 की रात करीब 9:30 बजे ताशकंद समझौता का पूरा कार्यक्रम समाप्त हो चुका था। अयूब खान और शास्त्री जी ने आखिरी बार हाथ मिलाकर विदा लिया। इसके बाद वे दोनों अपने–अपने कमरे में चले गए। रात करीब 1:30 बजे लाल बहादुर शास्त्री को दिल का दौरा पड़ा। उनकी वहीं मृत्यु हो गई। ताशकन्द में समझौते की रात भारत के तत्कालिन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के निधन ने कई सवाल खड़े कर दिये। कोई कहता उन्हें जहर दे दिया गया, कोई कहता अमेरिका का हाथ है तो कोई पाकिस्तान का हाथ कहता और भी कई तरह के षड्यंत्र की धारणाएं हैं।

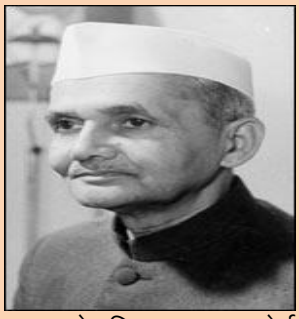

साधारण परिवार में जन्में लाल बहादुर शास्त्री को काफी गरीबी और मुश्किलों का सामना करना पड़ा। पैसे नहीं होने के कारण लाल बहादुर शास्त्री तैरकर नदी पार कर स्कूल जाया करते थे। काशी विद्यापीठ से शास्त्री की उपाधि मिलने के बाद उन्होंने जन्म से चला आ रहा जातिसूचक शब्द 'श्री वास्तव' हमेशा के लिए हटा दिया और अपने नाम के आगे 'शास्त्री' लगा दिया। 1966 में मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत–रत्न' से नवाजा गया।

(विशेष तौर पर देखें– फिल्म 'द ताशकंद फाइल्स')

12 जनवरी

जन्मदिन विशेष (12 जनवरी) – स्वामी विवेकानन्द

'क्या आपने भगवान को देखा है....?

बचपन में एक बालक हर किसी से यह सवाल करता था–'क्या आपने भगवान को देखा है?, क्या आप मुझे भगवान की दर्शन करवा सकते हैं?' लोग इस बालक के ऐसे सवालों को सुनकर न केवल हँसने लगते बल्कि निरूत्तर भी हो जाते। नरेन्द्र का सवाल भी हँसी–बौछारों के बाद भी वही रहता। यह बालक कोई और नहीं बल्कि नरेन्द्र थे। एक बार नरेन्द्र की मुलाकात स्वामी रामकृष्ण परमहंस से हुई और उनसे भी वही सवाल किया– 'क्या आपने भगवान को देखा है?, क्या आप मुझे भगवान की दर्शन करवा सकते हैं?' रामकृष्ण परमहंस ने नरेन्द्र को माँ काली के दर्शन करवाये और नरेन्द्र ने माँ काली से तीन वरदान माँगे– ज्ञान, भक्ति और वैराग्य। यहीं से नरेन्द्र के मन में समाज परिवर्तन और धर्म का बीज अंकुरित हुआ।

नरेन्द्रनाथ दत्त का जन्म 12 जनवरी, 1863 में कलकत्ता के सम्पन्न परिवार में हुआ था। उनके पिता विश्वनाथ दत्त कलकत्ता के जाने–माने वकील थे और माता भुवनेश्वरी एक धर्मपरायण महिला थी। नरेन्द्र बचपन से कुशाग्र बुद्धि के और नटखट थे। उनके परिवार में नियमपूर्वक रोज पूजा–पाठ होता था। परिवार के धार्मिक और आध्यात्मिक वातावरण के कारण बचपन से ही उनके धार्मिक संस्कार गहरे होते गये। बचपन से ही ईश्वर को जानने और प्राप्त करने की लालसा थी। कभी–कभी वे ऐसा प्रश्न पूछ देते कि माता–पिता और पण्डित जी चक्कर में पड़ जाते। वे धर्म, दर्शन, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, कला और साहित्य के उत्साही पाठक थे। इनकी वेद, पुराण, उपनिषद्, गीता, रामायण आदि धर्म ग्रन्थों में गहन रूचि थी। ये नियमित रूप से शारीरिक व्यायामों और खेल–कूद में भाग लेते थे।

नरेन्द्र ने देश के कोने–कोने में गुरू स्वामी रामकृष्ण परमहंस के आर्शीवाद से धर्म और संस्कृति का प्रचार–प्रसार किया। राजस्थान के महाराजा अजीत सिंह ने उन्हें 'विवेकानन्द' नाम दिया और सिर पर स्वाभिमान की केसरिया पगड़ी पहनाकर अमेरिका के शिकागो में 1883 में आयोजित विश्व धर्म परिषद् में सनातन धर्म (हिन्दू धर्म) व भारतीय संस्कृति का शंखनाद करने के लिए भेजा। अमेरिका में स्वामी विवेकानन्द के भाषण सुनकर तथा वाक् शैली से विद्वान चकित हो उठे।

राष्ट्रीय युवा दिवस (12 जनवरी)– स्वामी विवेकानन्द का जीवन, सिद्धांत तथा दर्शन युवकों के लिए प्रेरणा दायक हो सकता है। उनके ये विचार और आदर्श युवाओं में नई शक्ति और ऊर्जा का संचार कर सकते हैं। ऐसा विचार करते हुए भारत सरकार ने 1984 से स्वामी विवेकानन्द के जन्मदिन, 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाने के निर्णय किया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी वर्ष 1984 को अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष घोषित किया था। 1985 में पहली बार राष्ट्रीय युवा महोत्सव का आयोजन भोपाल में किया गया था। राष्ट्रीय युवा महोत्सव का आयोजन 5 दिनों तक किया जाता है।

विवेकानन्द के अनुसार, व्यक्ति को तब तक मेहनत करनी चाहिए जब तक वह अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच जाता। अगर कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य को पाने के लिए कड़ी लग्न और मेहनत करेगा तो वो जरूर कामयाब होगा।

क्रांतिकारी सूर्यसेन को फाँसी–

12 जनवरी, 1934 में भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी सूर्यसेन को चटगांव (वर्तमान बांग्लादेश) में फाँसी दी गई। उन्होंने इंडियन रिपब्लिकन आर्मी की स्थापना की और चटगांव विद्रोह का सफल नेतृत्व किया था। वे नेशनल हाईस्कूल में सीनियर ग्रेजुएट शिक्षक के रूप में कार्यरत थे और लोग प्यार से उन्हें ''मास्टर दा'' कहकर सम्बोधित करते थे।

- **बच्चों को क्या दिखायें?** विशेष तौर पर अभिषेक बच्चन की **फिल्म– 'खेलें हम जी जान से'** देखें।

माँ का सम्मान करें...

स्वामी विवेकानन्द वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु थे। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् 1893 में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। स्वामी विवेकानंद युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। उनके जन्मदिन के मौके पर 'राष्ट्रीय युवा दिवस' 12 जनवरी को देशभर में मनाया जाता है।

विवेकानंद जी के जीवन से जुड़ी दो प्रेरणादायक कहानियां:

1. दूसरों के पीछे मत भागो

एक व्यक्ति विवेकानंद से बोला, 'मेहनत के बाद भी मैं सफल नहीं हो पा रहा।' इस पर उन्होंने उससे अपने कुत्ते को सैर करा लाने के लिए कहा। जब वह वापस आया तो कुत्ता थका हुआ था, पर उस व्यक्ति का चेहरा चमक रहा था। इसका कारण पूछने पर उसने बताया, 'कुत्ता गली के कुत्तों के पीछे भाग रहा था, जबकि मैं सीधे रास्ते चल रहा था।' स्वामी बोले, 'यही तुम्हारा जवाब है। तुम अपनी मंजिल पर जाने की जगह दूसरों के पीछे भागते रहते हो। अपनी मंजिल खुद तय करो।'

2. माँ का सम्मान करें

एक बार स्वामी विवेकानंद विदेश गये, जहाँ उनके स्वागत के लिए कई लोग आये हुए थे। उन लोगों ने स्वामी विवेकानंद की तरफ हाथ मिलाने के लिए हाथ बढाया और अंग्रेजी में **HELLO** कहा जिसके जवाब में स्वामी जी ने दोनों हाथ जोड़कर **नमस्ते** कहा... उन लोगों को लगा की शायद स्वामी जी को अंग्रेजी नहीं आती है तो उन लोगो में से एक ने हिंदी में पूछा **'आप कैसे हैं?'** तब स्वामी जी ने कहा **'I am fine, thank you'** उन लोगो को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। उन्होंने स्वामी जी से पूछा की जब हमने आपसे अंग्रेजी में बात की तो आपने हिंदी में उत्तर दिया और जब हमने हिंदी में पूछा तो आपने अंग्रेजी में कहा। इसका क्या कारण है ? तब स्वामी जी ने कहा..... ''जब आप अपनी माँ (मातृभाषा) का सम्मान कर रहे थे तब मैं अपनी माँ का सम्मान कर रहा था और जब

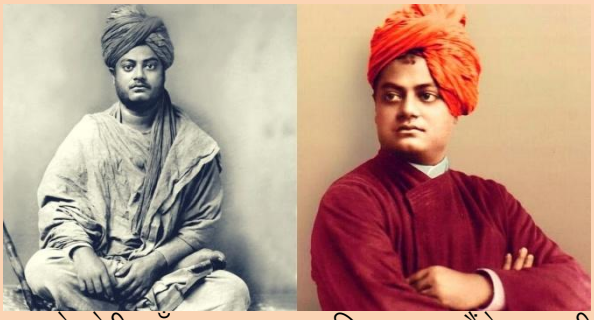

आपने मेरी माँ का सम्मान किया तब मैंने आपकी माँ का सम्मान किया। यदि किसी भी भाई–बहन को अंग्रेजी बोलना या लिखना नहीं आता है तो उन्हें किसी के भी सामने शर्मिंदा होने की जरुरत नहीं है। बल्कि शर्मिंदा तो उन्हें होना चाहिए जिन्हें हिंदी नहीं आती है, क्योंकि हिंदी ही हमारी राष्ट्रभाषा है। हमें तो इस बात पर गर्व होना चाहिए की हमें हिंदी आती है.....''

दुनिया भर में भारतीय आध्यात्म का झंडा बुलंद करने वाले स्वामी विवेकानंद 31 बीमारियों से पीड़ित थे। शायद यही वजह रही कि इस विद्वान का महज 39 साल की उम्र में देहावसान हो गया। स्वामी विवेकानंद 1887 में अधिक तनाव और भोजन की कमी के कारण काफी बीमार हो गए थे। उसी दौरान वह पित्त में पथरी और दस्त से भी पीड़ित हुए। कई बीमारियों से लड़ते हुए चार जुलाई 1902 को विवेकानंद का 39 साल की उम्र में निधन हो गया। उनके निधन की वजह तीसरी बार दिल का दौरा पड़ना था।

जब कोई आदर्शों से भरा जीवन जीता है तो प्रेरणा का पुँज बन जाता है। स्वामी विवेकानंद ने भी जीवन को इसी तरह जिया। खासतौर पर युवाओं के लिए उनकी बातें और सीखें अनमोल हैं। उनके बताए रास्ते पर चलकर न सिर्फ सफलता प्राप्त की जा सकती है बल्कि देश और दुनिया के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाने की प्रेरणा भी विवेकानंद देते हैं।

✍**विवेक कुमार नायक**
पंचायत शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय जौनापुर उत्तर टोल
प्रखंड– मोहनपुर (समस्तीपुर)
मोबाइल संख्या– 8084268553

13 जनवरी

जन्मदिन विशेष (13 जनवरी) – राकेश शर्मा

भारत के प्रथम और विश्व के 138वें अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा का जन्म 13 जनवरी, 1949 ई. को पंजाब के पटियाला में हुआ था। वे बचपन से ही विज्ञान में काफी रूचि रखते थे। बिगड़ी चीजों को बनाना और इलेक्ट्रॉनिक चीजों पर बारीकी से नज़र रखना उनकी आदत थी। राकेश जब बड़े हुए तो आसमान में उड़ते हवाई जहाज़ को तब तक देखा करते जब तक वह उनकी आँखों से ओझल न हो जाए।

वर्ष 1966 में एनडीए पास कर इंडियन एयर फोर्स कैडेट बने राकेश शर्मा ने वर्ष 1970 में भारतीय वायु सेना को ज्वाइन कर लिया। वर्ष 1971 की युद्ध में राकेश शर्मा ने अपने विमान 'मिग एअर क्रॉफ्ट' से महत्वपूर्ण सफलता हासिल कर चर्चा में आये। वर्ष 1984 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन और सोवियत संघ के इंटरकॉसमॉस कार्यक्रम के एक संयुक्त अभियान के अंतर्गत राकेश शर्मा 7 दिन 21 घंटे और 40 मिनट अंतरिक्ष में रहे। ये उस समय भारतीय वायुसेना के स्क्वाड्रन लीडर और विमानचालक थे। 2 अप्रैल, 1984 को दो अन्य सोवियत अंतरिक्ष यात्रियों के साथ सोयूज टी–11 में राकेश शर्मा को लॉन्च किया गया।

उनकी अंतरिक्ष उड़ान के दौरान भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी ने राकेश शर्मा से पूछा कि ऊपर से अन्तरिक्ष से भारत कैसा दिखता है? राकेश शर्मा ने उत्तर दिया– 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा'।

राकेश शर्मा की अंतरिक्ष यात्रा एक मील का पत्थर है। भारत सरकार ने उन्हें अशोक चक्र से सम्मानित किया। विंग कमांडर के पद से सेवा–निवृत होने पर राकेश शर्मा ने हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड में परीक्षण विमानचालक के रूप में काम किया।

इतिहास के पन्नों में 13 जनवरी का दिन

- 1559– एलिजाबेथ प्रथम इंग्लैड की साम्राज्ञी बनीं।
- 1610– इतालवी खगोलविद्, भौतिकविद् एवं गणितज्ञ गैलीली गैलिलियो ने बृहस्पति के चौथे उपग्रह कैलिस्टो की खोज की।
- 1818– उदयपुर के राणा मेवाड़ प्रांत की रक्षा के लिए ब्रिटिश सेना के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।
- 1910– न्यूयार्क शहर में दुनिया का पहला सार्वजनिक रेडियो प्रसारण प्रारम्भ हुआ।
- 1930– पहली बार मिकी माउस कॉमिक स्ट्रिप का प्रकाशन हुआ।
- 1948– राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता बनाये रखने के लिए आमरण अनशन शुरू किया।
- 1978– नासा ने पहली अमेरिकन महिला अंतरिक्ष यात्री का चयन किया।

लोहड़ी का त्यौहार

लोहड़ी उत्तर भारत का प्रमुख त्यौहार है। यह त्यौहार पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, जम्मु–कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में धूम–धाम से मनाया जाता है। यह मकर संक्राति के एक दिन पहले मनाया जाता है। विशेष रूप से शरद ऋतु के समापन पर इस त्यौहार को मनाने का प्रचलन है। पारंपरिक तौर पर लोहड़ी एक फसल–पर्व है जो फसलों की बुआई और उसकी कटाई से जुड़ा है। अच्छी फसल के लिए सूर्य देव और अग्नि देव का आभार प्रकट किया जाता है।

होली की त्यौहार की तरह लोहड़ी से 20–25 दिन पहले ही बालक–बालिकाएं 'लोहड़ी' के लोकगीत गाकर लकड़ी और गोइठा एकत्र करते हैं। इस दिन लोग रात्रि में चौराहे या खुले स्थान पर परिवार और आस–पास के लोगों के साथ मिलकर आग के किनारे घेरा बनाकर बैठते हैं। लोहड़ी के गीत गाकर आग जलाई जाती है। इस दिन लड़के आग के पास भांगड़ा नृत्य करते हैं वहीं लड़कियां और महिलाएं गिद्धा नृत्य करती हैं।

लोहड़ी के दिन विशेष पकवान बनते हैं जिसमें गज़क, रेवड़ी, तिल–गुड़ के लड्डु, मक्का की रोटी और सरसों का साग, मूँगफली प्रमुख होता है। अग्नि में तिल, गुड़, रेवड़ी, गज़क और मूँगफली चढ़ाई जाती है। इस दिन अग्नि के चारों ओर नवविवाहित जोड़ा आहूति देते हुए चक्कर लगाकर अपनी सुखी वैवाहिक जीवन की प्रार्थना करते हैं।

इस पर्व के पीछे कई मान्यताएं हैं। कहा जाता है कि संत कबीर की पत्नी लोई की याद में यह पर्व मनाया जाता है। यह भी मान्यता है कि मुग़ल सम्राट अकबर के समय कुछ बड़े व्यापारी लड़कियों को खरीदा–बेचा करते थे। उस समय सुंदरी और मुंदरी नाम की दो लड़कियों को एक दुल्ला भट्टी नामक डाकू ने उन व्यापारियों से बचाकर उनकी शादी किसी अच्छे लड़के से करवा दी थी। एक अन्य मान्यता के अनुसार, इस दिन कंस ने श्री कृष्ण को मारने के लिए लोहिता नामक राक्षसी को गोकुल भेजा था, जिसे श्री कृष्ण ने खेल–खेल में ही मार डाला था। उसी घटना के फलस्वरूप लोहड़ी पर्व मनाया जाने लगा। एक कथा यह भी है कि लोहड़ी और होलिका दोनों बहनें थी। लोहड़ी अच्छी प्रवृति की थी और होलिका का व्यवहार अच्छा नहीं था। होलिका अग्नि में जल गई और लोहड़ी बच गई। इसके बाद से पंजाब में उसकी पूजा होने लगी और उसी के नाम पर लोहड़ी का पर्व मनाया जाने लगा। एक अन्य मान्यता के अनुसार, राजा दक्ष की पुत्री सती ने अपने पति भगवान शंकर के अपमान से दुःखी होकर खुद को अग्नि के हवाले कर दिया था। इसी की याद में ही नवविवाहित जोड़ी अग्नि जलाकर उसकी फेरी करते हैं। इस अवसर पर विवाहित बहन–बेटियों को घर बुलाया जाता है। ये त्यौहार बहन और बेटियों की रक्षा और सम्मान के लिए मनाया जाता है।

(**पर्यावरण और हम भाग 2, पाठ 4 'त्योहार और भोजन'** अथवा **किसलय भाग–1, पाठ 17 'फसलों के त्योहार'** के संदर्भ में)

14 जनवरी

जन्मदिन विशेष (14 जनवरी) – अबुल फ़जल

मुगल बादशाह अकबर के नवरत्नों में से एक अबुल फ़जल, अकबर का मुख्य सलाहकार और सचिव था। उसका जन्म 958 हिजरी (6 मुहर्रम, 14 जनवरी, 1551ई.) को आगरा में हुआ था। उसका पूरा नाम अबुल फ़जल इब्न मुबारक था। वे शेख मुबारक नागौरी का द्वितीय पुत्र थे। उसे साहित्य, इतिहास और दर्शनशास्त्र का बहुत ज्ञान था। 15 साल के उम्र में उन्हें दर्शनशास्त्र और हदीस का पूरा ज्ञान हो गया था। अबुल फ़जल ने 'आइने अकबरी' और 'अकबरनामा' की रचना की थी। वह अकबर के दीन–ए–इलाही धर्म का मुख्य पुरोहित था। उनमें धार्मिक कट्टरता नहीं थी। वे एकांतप्रिय थे। अबुल फज़ल ने पंचतंत्र का अनुवाद 'अनवर–ए–सादात' नाम से किया था। अबुल फज़ल की हत्या वीर सिंह बुन्देला नामक सरदार ने 1602 ई. में सलीम (जहाँगीर) के आदेश पर कर दिया था।

(अतीत से वर्तमान भाग 2, पाठ 4, पृष्ठ 69 के संबंध में)

पानीपत का तृतीय युद्ध

पानीपत का तृतीय युद्ध अफगानी शासक अहमदशाह अब्दाली और मराठा शासक बालाजी बाजीराव के मध्य हुआ। कहा जाता है कि मुख्यतः पेशवा बालाजी बाजीराव की दिल्ली की राजनीति में दिलचस्पी तथा पंजाब में विवेकहीन हस्तक्षेप ने पानीपत के तृतीय युद्ध को जन्म दिया। उत्तर भारत में मराठा प्रभुत्व की स्थापना के लिए पेशवा बालाजी बाजीराव ने सदाशिव राव भाऊ को दिल्ली भेजा, जिसने 22 अगस्त, 1760 को दिल्ली पर अधिकार कर लिया।

नवम्बर, 1760 में मराठा और अफगान सेनाएं पानीपत के मैदान में आमने–सामने खड़ी हो गई। 14 जनवरी, 1761 को युद्ध प्रारंभ हो गया। इस युद्ध में मराठे परास्त हुए और उन्हें गंभीर क्षति उठानी पड़ी। इस युद्ध ने मराठा शक्ति को कुचल दिया। इस युद्ध में हार का सदमा न झेल पाने के कारण पेशवा बालाजी बाजीराव की मृत्यु हो गयी। इस युद्ध में मराठों के पराजय के निम्न कारण थे–

1. अहमदशाह अब्दाली ने युद्ध में आधुनिक शस्त्रों जैसे–बंदूक आदि का प्रयोग किया, जबकि मराठे अभी भी तलवार, भालों से लड़ रहे थे।
2. मराठा सरदारों में परस्पर गंभीर द्वेष था।
3. मराठा शिविर में अकाल पड़ा हुआ था तथा दिल्ली जाने का मार्ग बंद हो गया था। लोगों के लिए रोटी तथा घोड़ों के लिए चारे का अभाव था।
4. अहमद शाह अब्दाली के पास लगभग 60,000 सेना थी, जबकि मराठों के पास 45,000 सेना थी।

(संदर्भः अतीत से वर्तमान भाग 2, पाठ 9, पृष्ठ 154 के संदर्भ म बच्चों को बतायें। संभव हो तो आशुतोष गोवारिकर द्वारा निर्देशित फिल्म 'पानीपत' बच्चों को दिखायें।)

अंतर्राष्ट्रीय पतंग दिवस

पतंगबाजी विश्व के पुराने खेलों में से एक है। माना जाता है कि दुनिया की पहली पतंग एक चीनी दार्शनिक 'हुआंगथेग' ने बनाई थी। चीन के बौद्ध तीर्थयात्रियों द्वारा पतंगबाजी भारत में आया। भारत में अंतर्राष्ट्रीय पतंग महोत्सव की शुरूआत वर्ष 1989 में अहमदाबाद में हुई थी।

बच्चों को क्या बतायें? बच्चों को पतंग की ज्यामितिय आकृति और ज्यामितिय गुणों के बारे में बता सकते हैं। वैसे आज बच्चों को पतंगबाजी सिखायें।

किशनगंज जिला स्थापना दिवस

बिहार के उत्तर–पूर्वी छोर पर स्थित है– किशनगंज जिला। यह जिला पहले पूर्णिया का एक महत्वपूर्ण और पुराना अनुमंडल हुआ करता था। 14 जनवरी, 1990 को इसे एक जिला घोषित कर दिया गया। किशनगंज जिला पश्चिम में अररिया, दक्षिण–पश्चिम में पूर्णिया, पूर्व में पश्चिम बंगाल और उत्तर में नेपाल से घिरा हुआ है। कई शताब्दी तक किशनगंज का नाम नेपालगढ़ हुआ करता था। मुगल शासन काल में मोहम्मद रेज़ा के नेपालगढ़ के किले पर कब्जे के बाद इसका नाम आलमगंज कर दिया गया। कहा जाता है कि खगड़ा नवाब मोहम्मद फखरुद्दीन के शासनकाल के दौरान एक हिन्दू संत यहाँ पहुँचे । वह थके हुए थे और इस स्थान पर विश्राम करना चाहते थे। लेकिन जब उन्हें यह पता चला कि इस जगह का नाम आलमगंज है, नदी का नाम रमजान है, यहाँ के जमींदार का नाम फखरुद्दीन है तो उन्होंने आलमगंज में प्रवेश करने से इंकार कर दिया। जब इस बात का पता नवाब को चला तो उन्होंने एक फैसला किया कि किशनगंज गुदरी से रमजान पुल तक के हिस्से को 'कृष्ण–कुंज' के नाम से जाना जाएगा। लोगों ने इस क्षेत्र को 'कृष्ण–कुंज' कहना शुरू कर दिया और बाद में यह किशनगंज के नाम से जाना जाने लगा। इस प्रदेश का उल्लेख महाभारत काल में भी मिलता है। पांडवों के एक वर्ष के अज्ञातवास के दौरान राजा विराट ने उन्हें अपने यहाँ शरण दिया था। महाभारत काल का विराट नगर किशनगंज जिले में ही स्थित है। अज्ञातवास के दौरान भीम ने कीचक का वध भी यहीं पर किया था।

1,884 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में विस्तृत किशनगंज जिले में सात प्रखंड हैं। यहाँ की 70% जनसंख्या मुस्लिम है। महानंदा, कन्काई, मेची, रमजान यहाँ की प्रमुख नदियां हैं। चाय, धान, मकई और गेहूँ यहाँ की प्रमुख फसल है।

✍मुकेश कुमार
शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय पथरघट्टी
प्रखंड– दिघलबैंक, जिला– किशनगंज
मोबाईल– 9931828452

अररिया जिला स्थापना दिवस

नेपाल की तराई से सटा हुआ अररिया जिला भी पहले पूर्णिया का हिस्सा हुआ करता था। 14 जनवरी, 1990 को अररिया को पूर्णिया से अलग कर एक जिला बना दिया गया। इसका क्षेत्रफल 2,830 वर्ग किलोमीटर है। इस जिले में कुल 9 प्रखंड है। ब्रिटिश शासन काल के दौरान मिस्टर फोर्बस का यहाँ पर बंगला हुआ करता था, जिसके नाम पर फारबिसगंज नामक एक अनुमंडल भी है। मिस्टर फोर्बस का बंगला जिस इलाके में था उसे 'रेजिडेंशियल एरिया' या संक्षिप्त में 'आर. एरिया' के नाम से लोग पुकारते थे। समय के साथ इसके उच्चारण में परिवर्तन आ गया और इसका नाम 'अररिया' पड़ गया। यह जिला भारत–नेपाल अंतर्राष्ट्रीय सीमा को छूता है। अररिया का अंतिम बिंदु जोगबनी है और उसके बाद नेपाल का मोरंग जिला शुरू होता है।

अररिया जिले की 93% आबादी ग्रामीण है। यहाँ पर हिंदी, उर्दू और मैथिली भाषा मुख्य रूप से बोली जाती है। इस जिला की प्रमुख नदियां कोसी, सुवाड़ा, काली, पनार और कोली हैं। कोसी नदी अररिया से होकर गुजरती थी, हालांकि इसने बहुत पहले अपना रास्ता बदल लिया था। पनार सबसे महत्वपूर्ण नदी है। इस नदी के किनारे कृषि फल–फूल रही है, हालांकि बाढ़ के कारण बारिश के मौसम में यह विनाशकारी हो जाती है। साफ मौसम में कंचनजंगा पर्वत श्रृंखला यहाँ से (खासकर बारिश के बाद) देखी जा सकती है।यहाँ की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर करती है। इस जिला का मुख्य कृषि उत्पादन धान, मक्का और जूट हैं। हिंदी भाषा के लेखक फणीश्वर नाथ 'रेणु' का जन्म इसी जिले के औरही हिंगना गाँव में हुआ था। यह जिला गंगेटिक डॉल्फिन का प्राकृतिक आवास है। अररिया की स्थानीय नदियों में भी गंगेटिक डॉल्फिन को देखा जाता है।

✍रंजेश कुमार
शिक्षक
प्राथमिक विद्यालय छुरछुरिया
प्रखंड फारबिसगंज, जिला अररिया
संपर्क: 8789609259

महापर्व मकर संक्रांति

मकर संक्रांति को महापर्व का दर्जा दिया गया है। इस त्यौहार को देश के विभिन्न हिस्सों में अलग–अलग नाम से मनाया जाता है। कहीं इसे मकर संक्रांति कहते हैं तो कहीं पोंगल। लेकिन तमाम मान्यताओं के बाद इस त्यौहार को मनाने के पीछे का एक ही तर्क रहता है और वह है सूर्य की उपासना और दान। सूर्य का मकर राशि में प्रवेश करना मकर–संक्रांति कहलाता है। संक्रांति के लगते ही सूर्य उत्तरायण हो जाता है। मान्यता है कि मकर–संक्रांति से सूर्य के उत्तरायण होने पर देवताओं का सूर्योदय होता है और दैत्यों का सूर्यास्त होने पर उनकी रात्रि प्रारंभ हो जाती है। उत्तरायण में दिन बड़े और रातें छोटी होती हैं।

मकर–संक्रांति के दिन खिचड़ी बनाकर खाने तथा खिचड़ी की सामग्रियों को दान देने की प्रथा होने से यह पर्व खिचड़ी के नाम से प्रसिद्ध हो गया है। बिहार–झारखंड एवं मिथिलांचल में यह धारणा है कि मकर–संक्रांति से सूर्य का स्वरूप तिल–तिल बढ़ता है, इसलिए इसे तिल संक्रांति कहा जाता है। यहाँ प्रतीक स्वरूप इस दिन तिल तथा तिल से बने पदार्थो जैसे तिलवा, तिलकूट आदि का सेवन किया जाता है।

कहा जाता है कि मकर संक्रांति के दिन गंगा स्नान करने पर सभी कष्टों का निवारण हो जाता है। इसीलिए इस दिन दान, तप, जप का विशेष महत्व है। ऐसा मान्यता है कि इस दिन को दिया गया दान विशेष फल देने वाला होता है।

मकर संक्रांति का पौराणिक महत्व भी है। माना जाता है कि इस दिन भगवान भास्कर अपने पुत्र शनि से मिलने स्वयं उनके घर जाते है। चूँकि शनिदेव मकर राशि के स्वामी हैं, अतः इस दिन को मकर संक्रांति के नाम से जाना जाता है। मकर–संक्रांति से प्रकृति भी करवट बदलती है। इस दिन लोग पतंग भी उड़ाते हैं। उन्मुक्त आकाश में उड़ती पतंगें देखकर स्वतंत्रता का अहसास होता है।

✍निधि कुमारी (शिक्षिका)
राजकीय मध्य विद्यालय, तेतरिया
प्रखंड–तेतरिया, जिला–पूर्वी चम्पारण

पर्व एक रूप अनेक

भारतीय पर्व त्यौहारों की अपनी ही विशिष्टता और पहचान है। अंग्रेजी के प्रथम जनवरी महीने की 14 तारीख को सम्पूर्ण भारत में मकर संक्रान्ति विभिन्न रूपों में मनाया जाता है। विभिन्न प्रान्तों में इस त्यौहार को मनाने के जितने अधिक रूप प्रचलित हैं उतने किसी अन्य पर्व में नहीं। आइए, भारत के राज्यों में यह पर्व किस रुप में और किस तरह मनाया जाता है, जानते हैं–

उत्तर प्रदेश

भारत के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में यह मुख्य रूप से 'दान का पर्व' है। इलाहाबाद में गंगा, यमुना व सरस्वती के संगम पर प्रत्येक वर्ष एक माह तक माघ मेला लगता है जिसे 'माघ मेले' के नाम से जाना जाता है। 14 जनवरी से ही इलाहाबाद में हर साल माघ मेले की शुरुआत होती है। 14 दिसम्बर से 14 जनवरी तक का समय खरमास के नाम से जाना जाता है। ऐसा विश्वास है कि 14 जनवरी यानी मकर संक्रांति से पृथ्वी पर अच्छे दिनों की शुरुआत होती है। समूचे उत्तर प्रदेश में इस व्रत को खिचड़ी के नाम से जाना जाता है तथा इस दिन खिचड़ी खाने एवं खिचड़ी दान देने का अत्यधिक महत्व होता है।

तमिलनाडु

दक्षिणी राज्यों में से एक इस राज्य में इस त्योहार को पोंगल के रूप में चार दिन तक मनाते हैं।

पश्चिम बंगाल

बांग्ला भाषी राज्य में इस पर्व पर स्नान के पश्चात तिल दान करने की प्रथा है। यहाँ गंगासागर में प्रति वर्ष विशाल मेला लगता है। मकर संक्रान्ति के दिन ही गंगा जी भागीरथ के पीछे–पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होकर सागर में जा मिली थीं। मान्यता यह भी है कि इस दिन यशोदा ने श्रीकृष्ण को प्राप्त करने के लिये व्रत किया था। कहा जाता है–'सारे तीरथ बार बार, गंगा सागर एक बार।'

बिहार

हिन्दी भाषी राज्यों में एक बिहार में मकर संक्रांति को 'तिलसकरात' (तिल संक्राति) नाम से जाना जाता है। इस दिन उड़द, चावल, तिल, चिवड़ा, गौ, स्वर्ण, ऊनी वस्त्र, कम्बल आदि दान करने का रिवाज और इसका अपना अलग ही महत्त्व है।

महाराष्ट्र

मराठी भाषी इस राज्य में इस दिन सभी विवाहित महिलाएँ अपनी पहली संक्रांति पर कपास, तेल व नमक आदि चीजें अन्य सुहागिन महिलाओं को दान करती हैं। तिल–गूल नामक हलवे के बाँटने की प्रथा भी है। लोग एक दूसरे को तिल गुड़ देते हैं और देते समय बोलते हैं –'तिळ गूळ घ्या आणि गोड़ गोड़ बोला' अर्थात तिल गुड़ लो और मीठा–मीठा बोलो। इस दिन महिलाएँ आपस में तिल, गुड़, रोली और हल्दी बाँटती हैं।

पंजाब और हरियाणा

पंजाब और हरियाणा में इसे 13 जनवरी को लोहड़ी के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर लोग मूँगफली, तिल की बनी हुई गजक और रेवड़ियां आपस में बाँटकर खुशियाँ मनाते हैं। इसके साथ पारम्परिक मक्के की रोटी और सरसों के साग का आनन्द भी उठाया जाता है।

असम

असम में मकर संक्रांति को माघ–बिहू अथवा भोगाली–बिहू के नाम से मनाया जाता है।

राजस्थान

राजस्थान में इस पर्व पर सुहागन महिलाएँ अपनी सास को वायना देकर आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। साथ ही महिलाएँ किसी भी सौभाग्यसूचक वस्तु का चौदह की संख्या में पूजन एवं दान देती हैं। इस प्रकार मकर संक्रांति के माध्यम से भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की झलक विविध रूपों में दिखती है।

हमारा देश भारत में, विविधताओं में भी एकता रुपी भावनाओं पर चलने वाली ये पर्व त्यौहार कुछ न कुछ संदेश भी दे जाती हैं। आप सभी को मकर संक्रांति पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई।

✍सुरेश कुमार गौरव
शिक्षक
उ. मा. विद्यालय, रसलपुर
अंचल– फतुहा, जिला– पटना
मोबाइल– 7991152858

मकर संक्रांति

मकर संक्रांति में 'मकर' शब्द 'मकर' राशि को इंगित करता है जबकि 'संक्रांति' का अर्थ संक्रमण अर्थात् प्रवेश करना है। एक राशि को छोड़कर दूसरे राशि में प्रवेश करने की विस्थापन क्रिया को 'संक्रांति' कहा जाता है। चुँकि सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है, इसलिए इस समय को 'मकर संक्रांति' कहा जाता है।

चन्द्र के आधार पर माह के 2 भाग हैं–कृष्ण और शुक्ल पक्ष। इसी तरह सूर्य के आधार पर वर्ष के दो भाग हैं– उत्तरायण और दक्षिणायण। इस दिन से सूर्य उत्तरायन हो जाता है। इसे सौम्यायन भी कहते हैं। छः माह सूर्य उत्तरायण रहता है और छः माह दक्षिणयण। मकर संक्रांति से लेकर कर्क संक्रांति के बीच के छः मास के समयांतराल को 'उत्तरायण' कहते हैं। इस समय सूर्य मकर, कुंभ, वृष, मीन, मेष और मिथुन राशि में रहते हैं।

उत्तरायण का मतलब है– उत्तर की ओर चलना अर्थात् उस समय से धरती का उत्तरी गोलार्द्ध सूर्य की ओर मुड़ जाता है तो उत्तर से ही सूर्य निकलने लगता है। इससे ठंड कम होने लगती है। उत्तरायण में दिन बड़े और रातें छोटी होने लगती है। इस दौरान पृथ्वी पर सूर्य की किरणें भी सीधी हो जाती है जिससे गर्मी बढ़ने लगती है। सर्दी के मौसम में वातावरण का तापमान बहुत कम होने के कारण शरीर में रोग और बीमारियां जल्दी लगती है। इस समय उत्तरी भारत में शीतलहर, कुहासे तथा ठंड का प्रकोप ज्यादा होता है। इसलिए शरीर को गर्मी प्रदान करने वाले खाद्य पदार्थों का इस्तेमाल किया जाता है। लोग इस दिन तिलकूट खाते हैं। मकर संक्रांति के दिन पानी में तिल डालकर स्नान करना, तिल दान करना, आग में तिल डालना, तिल के पकवान बनाना विशेष महत्व रखता है। इस समय तक नये धान की फसल से तैयार चुड़ा, गुड़, दही सूर्य को अर्पित कर उसे प्रसाद के तौर पर खाया जाता है। उत्तर भारत में इस दिन खिचड़ी का भोग लगाया जाता है।

इस त्यौहार को भारत के अलग–अलग राज्यों में स्थानीय तरीकों से मनाया जाता है। दक्षिण भारत के तमिलनाडु में पोंगल, झारखंड में सरहुल, कुमाऊँ में घुघुतिया, गुजरात में पतंगोत्सव कहा जाता है। पतंग उड़ाने के पीछे प्रमुख कारण यह है कि कुछ घंटे सूर्य के प्रकाश में बिताना। यह समय सर्दी का होता है और इस मौसम में सुबह का प्रकाश शरीर के लिए स्वास्थ्यवर्द्धक और त्वचा व हड्डियों के लिए अत्यंत लाभदायक होता है। इसी दिन बसंत ऋतु की शुरूआत मानी जाती है। धान की भी पूजा होती है। पूजा किया हुआ आशीर्वादी धान अगली फसल में बोया जाता है।

पोंगल

पोंगल तमिल हिन्दूओं का प्रमुख त्योहार है। पोंगल का तमिल में अर्थ होता है– उफान या विप्लव। यह मुख्यतः फसल की कटाई का उत्सव है। पारम्परिक रूप से सम्पन्नता को समर्पित त्योहार है जिसमें समृद्धि लाने के लिए वर्षा, धूप तथा खेतिहर मवेशियों की आराधना की जाती है।

तमिल भाषा में पोंगल का एक अर्थ निकलता है– अच्छी तरह उबालना। इस त्यौहार का नाम पोंगल इसलिए है क्योंकि इस दिन सूर्य देव को जो प्रसाद अर्पित किया जाता है, वह 'पगल' कहलाता है। जिसका तात्पर्य है– अच्छी तरह उबालकर सूर्य देवता को प्रसाद भोग लगाना। इस दिन खरीफ की फसलें चावल, अरहर, मसूर आदि कटकर घरों में पहुँचती हैं और लोग नए धान कूटकर चावल निकालते हैं। हर घर में मिट्टी का नया मटका लाया जाता है जिसमें नए चावल, दूध और गुड़ डालकर उसे पकाने के लिए धूप में रख देते हैं। हल्दी शुभ मानी जाती है इसलिए साबुत हल्दी को मटके के मुँह के चारों ओर बाँध देते हैं। यह मटका दिन में साढ़े दस–बारह बजे तक धूप में रखा जाता है। जैसे ही दूध में उफान आता है और दूध–चावल मटके से बाहर गिरने लगता है तो 'पोंगल–पोंगल''के स्वर सुनाई देते हैं। ऐसा माना जाता है कि जिस प्रकार दूध का उफान शुद्ध और शुभ है उसी प्रकार प्रत्येक प्राणियों का मन भी शुद्ध संस्कारों से उज्ज्वल होना चाहिए। इसलिए नए बर्तनों में ही दूध को उबाला जाता है।

पोंगल का महत्व इसलिए भी है क्योंकि यह तमिल महीने की पहली तारीख को आरंभ होता है। यह पर्व चार दिनों तक चलता है। हर दिन पोंगल का अलग नाम होता है। पहली पोंगल को भोगी पोंगल कहते हैं। इस दिन संध्या के समय लोग अपने घर से पुराने वस्त्र–कूड़े आदि लाकर एक जगह इकट्ठा करते हैं और उसे जलाते हैं ऐसा करके वे बुराईयों का अंत मानते हैं। इस दिन भोग–विलास के देवता देवराज इन्द्र की पूजा की जाती है।

दूसरी पोंगल को सूर्य पोंगल कहते हैं यह भगवान सूर्य को निवेदित होता है। इस दिन विशेष प्रकार की खीर बनाई जाती है। अच्छी फसल देने के लिए सूर्य देवता को कृतज्ञता व्यक्त की जाती है तथा प्रसाद के रूप में पोंगल तथा गन्ना अर्पित किया जाता है।

तीसरी पोंगल को मट्टू पोंगल कहते हैं। तमिल मान्यता के अनुसार, मट्टू भगवान शंकर का बैल का नाम है, जिसे एक भूल के कारण भगवान शंकर ने पृथ्वी पर रहकर मनुष्यों के लिए अन्न पैदा करने को कहा। तब से पृथ्वी पर रहकर कृषि कार्य में मनुष्यों की सहायता कर रहा है। इस दिन किसान अपने बैलों को स्नान कराते हैं, उनके सींगों में तेल लगाते हैं और उन्हें सजाते हैं।

चौथे दिन कन्नम पोंगल मनाया जाता है जिसे तिरूवल्लूर के नाम से भी लोग पुकारते हैं। इस दिन घर को सजाया जाता है आम के पल्लव और नारियल के पत्ते से दरवाजे पर तोरण बनाया जाता है। महिलाएं इस दिन घर के मुख्य द्वार पर कोलम यानी रंगोली बनाती हैं, लोग नए वस्त्र पहनते हैं। एक–दूसरे के यहाँ पोंगल और मिठाई भेजते हैं। इस दिन सांड़ की लड़ाई होती है जो काफी प्रसिद्ध है। रात्रि के समय लोग सामुदायिक भोजन का आयोजन करते हैं तथा एक दूसरे को मंगलमय वर्ष की शुभकामनाएं देते हैं।

(पर्यावरण और हम भाग 2, पाठ 4 'त्योहार और भोजन' अथवा **किसलय भाग–1, पाठ 17 'फसलों के त्योहार'** के संदर्भ में)

15 जनवरी

थल सेना दिवस (15 जनवरी)

प्रतिवर्ष 15 जनवरी के दिन थल सेना दिवस मनाया जाता है। यह दिवस लेफ्टिनेंट जनरल (बाद में 15 जनवरी 1986 को भारत के प्रथम फील्ड मार्शल की पदवी दी गई) के. एम. करियप्पा के भारतीय थल सेना के शीर्ष कमांडर का पदभार ग्रहण करने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। उन्होंने यह पद अंतिम अंग्रेज कमांडर जनरल फ्रांसिस राय बुचर से यह पद भार ग्रहण किया था।

भारत की आन–बान और शान को बनाए रखने के लिए भारतीय सेना मुस्तैदी के साथ सीमा पर डँटें रहते हैं। पुरी दुनिया में भारतीय सेना की जांबाजी और बहादुरी की चर्चा की जाती है। पर्वत, पहाड़, मरूस्थल, बर्फ, जंगल, जल, थल, नभ की कठोर ट्रेनिंग में तपने के बाद उन्हें एक योद्धा के रूप में तैयार किया जाता है। अनुशासन में रहते हुए हमारे वीर जवानों के हौसले चट्टान की तरह मजबूत होते हैं और इरादे पर्वत की तरह ऊँचे। युद्ध ही नहीं किसी संकट काल जैसे– बाढ़, भूकंप, भूस्खलन, बर्फबारी आदि में भी सेना हमारी सहायता करता है। देश ही नहीं दुनिया में शांति स्थापित करने के लिये संयुक्त राष्ट्र के झंडे तले भी भारतीय सेना जाती है। कांगो, सुडान, लेबनान जैसे देशों में भारतीय शांति सेना की भूमिका की विश्व भर में सराहना की जाती है।

भारतीय सेना की स्थापना 1895 में हुई थी लेकिन इसकी वर्तमान संरचना आजादी के बाद प्राप्त हुई। 1947 में देश के विभाजन होने पर भारत को 45 रेजीमेंट मिलीं जिनमें 2.5 लाख सैनिक थे। स्वतंत्रता के तुरंत पश्चात् भारत सरकार ने सेना के ढाँचें में कतिपय परिवर्तन किये। भारतीय रियासतों की सेना को भी देश की सैन्य व्यवस्था में शामिल कर लिया गया।

15 अगस्त, 1947 को जब भारत आजाद हुआ था तब देश में व्याप्त दंगे–फसाद तथा शरणार्थियों के आवागमन के कारण उथल–पुथल का माहौल था। इस कारण कई प्रशासनिक समस्याएं पैदा होने लगी और फिर स्थिति को नियंत्रित करने के लिए सेना को आगे आना पड़ा। इसके पश्चात् एक विशेष सेना कमांड का गठन किया गया, ताकि देश में शांति व्यवस्था सुनिश्चित की जा सके। 15 जनवरी, 1949 को के. एम. करियप्पा स्वतंत्र भारत के प्रथम भारतीय सेना प्रमुख बने।

भारतीय सेना के तीन अंग हैं– थल सेना, नौ सेना और वायु सेना। सेना के सुप्रीम कमांडर राष्ट्रपति होते हैं और उनके अधीन तीनों सेना के प्रमुख होते हैं। तीनों सेना के लिए एक रक्षा प्रमुख या चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ (सीडीएस) होते हैं। तीनों सेना का वरिष्ठता क्रम भी है। थल सेना पहले नंबर पर, नौ सेना दूसरे नंबर पर और वायु सेना तीसरे नंबर पर आती है। भारतीय नागरिक स्वेच्छा से सेना में शामिल होते हैं।

भारतीय थल सेना को रक्षा पंक्ति में प्रथम तथा प्रधान स्थान प्राप्त है। भारतीय थल सेना का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। थल सेना के सेनाध्यक्ष चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ होते हैं, जो समग्र रूप से सेना की कमान, नियंत्रण और प्रशासन के लिए उत्तरदायी है। सेना को छः कमांडों और एक प्रशिक्षण कमांड में बाँटा गया है। थल सेना दिवस पर देश की सीमाओं की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहूति देने वाले वीर सपूतों के प्रति श्रद्धांजलि दिया जाता है।

बच्चों को क्या बतायें? बच्चों को भारतीय थल सेना के साहस और पराक्रम की कहानियां अथवा फिल्मों को दिखाएं। बच्चों को सैनिकों का सम्मान करना सिखायें। अधिक जानकारी के लिए टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा प्रकाशित ज्ञान दृष्टि का विशेषांक 'भारतीय सेना' अंक पढ़ें।

जन्मदिन विशेष (15 जनवरी) – सैफुद्दीन किचलू

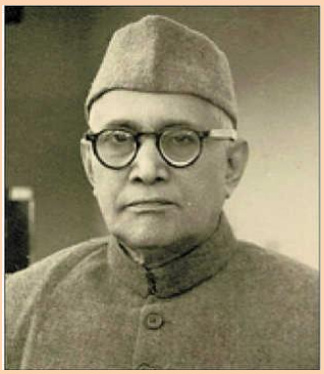

सैफुद्दीन किचलू एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, वकील व भारतीय राष्ट्रवादी मुस्लिम नेता थे। इनका जन्म 15 जनवरी, 1888 ई. को अमृतसर, पंजाब में हुआ था। इनके पिता का नाम अज़ीजुद्दीन किचलू, और माता का नाम दान बीबी था। इनके पूर्वज कश्मीरी पण्डित थे। जिन्होंने बाद में इस्लाम अपना लिया। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा अमृतसर में हुई। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री लेने के बाद लन्दन से 'बार–एट–लॉ' तथा जर्मनी से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त किया। वहाँ वे फ्रेंच क्रांति से प्रभावित हुए। 'मजलिस' नाम की स्टूडेंट सोसाइटी से जुड़े। भारत लौटने के बाद वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े।

इन्होंने होमरूल आंदोलन, खिलाफत आंदोलन और असहयोग आंदोलन में भाग लिया। वर्ष 1924 में उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का महासचिव बनाया गया। उन्होंने 'तंजीम' नाम से एक पत्रिका की शुरूआत की। डॉ. सैफुद्दीन किचलू मुस्लिम लीग की विचारधारा के धूर विरोधी थे और आखिरी तक 'टू नेशन थ्योरी' का विरोध करते रहे। 21 दिसम्बर 1954 ई. को उन्हें स्टालिन शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान प्राप्त करने वाले वे प्रथम भारतीय थे। 9 अक्टूबर, 1988 को सैफुद्दीन किचलू का दिल्ली में निधन हो गया।

एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना

एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना 15 जनवरी, 1784 को विलियम जोंस ने कोलकाता स्थित फोर्ट विलियम में की थी। इसका उद्देश्य प्राच्य–अध्ययन का बढ़ावा देना था। एशियाटिक सोसाइटी में लगभग 1 लाख 75 हजार पुस्तकों का संग्रह है जिनमें तमाम पुस्तकें तथा वस्तुएं अत्यंत दुर्लभ है। इसमें एशिया का प्रथम आधुनिक संग्रहालय भी था। वर्तमान में यह संस्थान सभी साहित्यिक व वैज्ञानिक गतिविधियों तथा पुस्तकों, पांडुलिपियों, सिक्कों, पुराने चित्रों और अभिलेख का संरक्षक है।

भारतीय खाद्य निगम की स्थापना– भारतीय खाद्य निगम की स्थापना 15 जनवरी, 1965 को खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से की गई थी। यह अच्छी गुणवत्ता के खाद्यान्नों का क्रय करके उन्हें गोदामों में भण्डारित करता है। फिर लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से लोगों को वहनीय मूल्यों पर उपलब्ध कराया जाता है।

बच्चों को **वर्ग आठ के नागरिक की पाठ्यपुस्तक के अध्याय 8 'खाद्य सुरक्षा'** से जोड़कर बतायें।

इतिहास के पन्नों में 15 जनवरी का दिन

- 1759– लंदन स्थित मोंटेगुवे हाउस में ब्रिटिश संग्रहालय की स्थापना हुई।
- 1784– एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना।
- 1934– भारत और नेपाल में 8.7 तीव्रता वाला भूकंप आयां इस भूकंप में करीब 11,000 से अधिक जानें गईं। यह बिहार का प्रमुख विनाशकारी भूकंप था।
- 1934– राज्यसभा की पहली महिला महासचिव रामा देवी का जन्म देव रोलू आंध्र प्रदेश में हुआ था ।
- 1956– पहली महिला दलित मुख्यमंत्री मायावती नैना कुमारी का जन्म दिल्ली में हुआ था
- 1965– भारतीय खाद्य निगम की स्थापना।
- 1949– के. एम. करियप्पा भारतीय थल सेना के प्रथम कमांडर–इन–चीफ बने।

16 जनवरी

शरतचंद्र चट्टोपाध्याय का निधन– 16 जनवरी

शरतचंद्र अमर कथाशिल्पी और सुप्रसिद्ध उपन्यासकार थे। इनका जन्म 15 सितम्बर सन् 1876 ई. को हुगली जिले के देवानंदपुर गाँव में हुआ था। शरतचंद्र अपने माता–पिता की नौ संतानों में एक थे। उनका बचपन नाना के घर भागलपुर (बिहार) में ही बीता। शरतचंद्र ने अठ्ठारह साल की उम्र में बारहवीं पास की थी। शरतचंद्र ने इन्हीं दिनों 'बासा' (घर) नाम से एक उपन्यास लिख डाला, पर यह रचना प्रकाशित नहीं हुई। कॉलेज की पढ़ाई को बीच में ही छोड़कर वे तीस रुपए मासिक पर क्लर्क का काम करने बर्मा (वर्तमान म्यांमार) पहुँच गए। शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की कथा–साहित्य की प्रस्तुति जिस रूप–स्वरूप में हुई, लोकप्रियता के तत्त्व ने उनके पाठकीय आस्वाद में वृद्धि ही की है। शरतचंद्र के मन में नारियों के प्रति बहुत सम्मान था। उनकी कहानियों में स्त्री के रहस्यमय चरित्र, उसकी कोमल भावनाओं, संघर्ष एवं उनके द्वारा झेले गए संकटों का वर्णन है। पंडित मोशाय, श्रीकांत, देवदास, पथेर दावी, परिणीता, चरित्रहीन आदि प्रमुख उपन्यास है। शरतचंद्र चट्टोपाध्याय अकेले ऐसे भारतीय कथाकार भी हैं, जिनकी अधिकांश कालजयी कृतियों पर फिल्में बनीं तथा अनेक धारावाहिक सीरियल भी बने। 16 जनवरी, 1938ई. को कलकत्ता (अब कोलकाता) के पार्क नर्सिंग होम में 62 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

बच्चों को क्या दिखायें? संभव हो तो बच्चों को देवदास, परिणीता (1953), चरित्रहीन (1954), अपना पराया(1980) आदि दिखा सकते हैं।

मधुप्रिया, अररिया (दिवस विशेष)

रामनरेश त्रिपाठी का निधन–16 जनवरी

प्राक्छायावादी युग के महत्वपूर्ण कवि रामनरेश त्रिपाठी का निधन 16 जनवरी, 1962 ई. को प्रयाग में हुआ था। उन्होंने अपने 72 वर्ष के जीवन काल में लगभग सौ पुस्तकें लिखी। 'बा और बापू' उनके द्वारा लिखा गया हिन्दी का पहला एकांकी नाटक है। उनकी चार काव्य कृतियां प्रमुख हैं– मिलन (1918), पथिक (1920), मानसी(1927), स्वप्न (1929)। इनकी कृति 'स्वप्न' के लिए इन्हें हिन्दुस्तान अकादमी का पुरस्कार मिला।

बच्चों को क्या बतायें? रामनरेश त्रिपाठी द्वारा रचित कोई कविता–कहानी का सस्वर वाचन करवायें।

हे प्रभु आनंद दाता

हे प्रभु ! आनंद दाता !! ज्ञान हमको दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिये।। हे प्रभु...।।
लीजिये हमको शरण में हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्मरक्षक वीर व्रतधारी बनें ।। हे प्रभु...।।
निंदा किसी की हम किसी से, भूल कर भी न करें।
ईष्या कभी भी हम किसी से भूल कर भी न करें ।। हे प्रभु...।।
सत्य बोलें झूठ त्यागें मेल आपस में करें।
दिव्य जीवन हो हमारा यश तेरा गाया करें।। हे प्रभु...।।
जाये हमारी आयु हे प्रभु ! लोक के उपकार में।
हाथ ड़ालें हम कभी न भूलकर अपकार में ।। हे प्रभु...।।
कीजिये हम पर कृपा ऐसी हे परमात्मा !
मोह मद मत्सर रहित होवे हमारी आत्मा।। हे प्रभु...।।
प्रेम से हम गुरुजनों की नित्य ही सेवा करें।
प्रेम से हम संस्कृति की नित्य ही सेवा करें।। हे प्रभु...।।
योगविद्या ब्रह्मविद्या हो अधिक प्यारी हमें।
ब्रह्मनिष्ठा प्राप्त करके सर्वहितकारी बनें ।। हे प्रभु...।।

–रामनरेश त्रिपाठी

17 जनवरी

जन्मदिन विशेष (17 जनवरी) – बेंजामिन फ्रैंकलिन

बेंजामिन फ्रैंकलिन एक अमेरिकी वैज्ञानिक थे। उन्होंने ही **तड़ित चालक** की खोज की थी। संयुक्त राज्य अमेरिका के संस्थापक जनकों में से एक थे। वे एक लेखक, मुद्रक, व्यंग्यकार, राजनीतिक विचारक, राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक, आविष्कारक, नागरिक कार्यकर्ता, राजमर्मज्ञ, सैनिक और राजनयिक भी थे।

फ्रैंकलिन का जन्म, बॉस्टन, मैसाचुसेट्स, के मिल्क स्ट्रीट पर 17 जनवरी, 1706 ई. को अमेरिका में हुआ था। उनके पिता का नाम जोशिया फ्रैंकलिन था, जो साबुन सह मोमबत्ती निर्माता और दुकानदार थे। बेंजामिन फ्रैंकलिन की माता का नाम आबिया फोल्गर था, जो जोशिया फ्रेंकलिन की दूसरी पत्नी थी। जोशिया के 17 बच्चे थे। जिनमे बेंजामिन पन्द्रहवें बच्चे और सबसे छोटे बेटे थे।

उनकी स्कूली शिक्षा तब समाप्त हो गई, जब वे दस वर्ष के थे। इसके बाद उन्होंने कुछ समय तक अपने पिता के लिए काम किया। कुछ दिनों तक उन्होंने अपना एक प्रिंटिंग प्रेस भी चलाया।

फ्रैंकलिन एक बहुत बड़े आविष्कारक थे। उनकी कई रचनाओं में बिजली की छड़, ग्लास आर्मोनिका (शीशे का एक उपकरण, जिसे धातु हारमोनिका नहीं समझा जाना चाहिए), फ्रैंकलिन स्टोव, बाइफोकल चश्मा और लचीला मूत्र कैथेटर थे। फ्रैंकलिन ने कभी अपने आविष्कारों का पेटेंट नहीं कराया। आवेश संरक्षण सिद्धांत की खोज करने वाले वे प्रथम व्यक्ति थे। 1750 ई. में उन्होंने यह साबित करने के लिए एक प्रयोग का प्रस्ताव प्रकाशित किया कि आकाशीय बिजली विद्युत् है, जिसके लिए उन्होंने एक पतंग को तूफान में उड़ाया, जो विद्युतीय तूफान बनने में सक्षम प्रतीत होता था। विद्युत् से संबंधित अपने कार्यों के लिए फ्रैंकलिन ने 1753 में रॉयल सोसाइटी का 'कोपले पदक' प्राप्त किया। विद्युत् चार्ज की बड़े इकाई को उनके नाम पर रखा गया है।

फ्रैंकलिन की मृत्यु 84 साल की उम्र में 17 अप्रैल, 1790 ई. को हुई। लगभग 20,000 लोगों ने उनके अंतिम संस्कार में भाग लिया। उन्हें फिलाडेल्फिया में क्राइस्ट चर्च बेरिअल ग्राउंड में दफनाया गया। पूरा विश्व बेंजामिन फ्रैंकलिन को उनके योगदान के लिए सदा याद रखेगा।

संदर्भः बच्चों को **विज्ञान भाग 3, पृष्ठ 15** के संदर्भ में बेंजामिन फ्रैंकलिन के बारे में बतायें।

✍धीरज कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय सिलौटा
प्रखंड– भभुआ, जिला– कैमूर (बिहार)
मोबाइल नंबर–9431680675

जन्मदिन विशेष (17 जनवरी) – डी. आर. कापरेकर

दत्तात्रेय रामचन्द्र कापरेकर एक भारतीय गणितज्ञ थे। उनका जन्म 17 जनवरी, 1905 को डहाणू, महाराष्ट्र में हुआ था। उन्होंने संख्या सिद्धान्त के क्षेत्र में अनेक योगदान किया। संख्या 6174 को **कापरेकर स्थिरांक** कहते हैं। इसका पता कापरेकर ने लगाया था।

उदाहरण के लिए–

i. चार अंक की कोई भी संख्या लीजिये जिसके दो अंक भिन्न हों।
ii. संख्या के अंकों को आरोही तथा अवरोही क्रम में लिखें। इससे आपको दो संख्यायें मिलेंगी।
iii. अब बड़ी संख्या में से छोटी संख्या को घटायें।
iv. जो संख्या मिले इस पर पुनः क्रम संख्या 2 तथा 3 वाली प्रक्रिया दोहराएं।

कुछ निश्चित चरणों के बाद आपको संख्या 6174 मिलेगी।

जैसे– $7731 - 1377 = 6354$
$6543 - 3456 = 3087$
$8730 - 0378 = 8352$
$8532 - 2358 = 6174$
$7641 - 1467 = 6174$

18 जनवरी

जर्मनी का एकीकरण

फ्रांस की क्रांति द्वारा उत्पन्न नवीन विचारों से जर्मनी में एकता की भावना का प्रसार हुआ। जर्मन क्षेत्र में लगभग 39 राज्य थे जिनका एक संघ बनाया गया था। जर्मनी के विभिन्न राज्यों में चुंगीकर के अलग–अलग नियम थे, जिनसे वहाँ के व्यापारिक विकास में बड़ी अड़चने आती थीं। इस बाधा को दूर करने के लिए जर्मन राज्यों ने मिलकर चुंगी संघ का निर्माण किया। यह एक प्रकार का व्यापारिक संघ था। इस संघ का निर्णय सर्वसम्मत होता था। सारे जर्मन राज्यों में एक ही प्रकार का सीमा–शुल्क लागू कर दिया गया। इस व्यवस्था से जर्मनी के व्यापार का विकास हुआ, साथ ही इसने वहाँ एकता की भावना का सूत्रपात भी किया। वास्तव में, जर्मन राज्यों के एकीकरण की दिशा में यह पहला महत्वपूर्ण कदम था।

जर्मन देशभक्तों ने प्रशा के नेतृत्व में जर्मनी के एकीकरण के कार्य को संपन्न करने का निश्चय किया। इस समय प्रशा का शासक विलियम प्रथम तथा चांसलर बिस्मार्क था। किन्तु इन जर्मन देशभक्तों के समक्ष दो प्रमुख समस्यायें थीं–

1. आस्ट्रिया के प्रभुत्व से छुटकारा पाना,
2. जर्मन–राज्यों को प्रशा के नेतृत्व में संगठित करना।

1866 ई. में प्रशा ने ऑस्ट्रिया के खिलाफ युद्ध घोषित कर दिया। इटली प्रशा का साथ दे रहा था। यह युद्ध सेडोवा के मैदान में दोनों के बीच सात सप्ताह तक चला, जिसमें ऑस्ट्रिया पराजित हुआ। इस युद्ध की समाप्ति प्राग की संधि द्वारा हुई। इस युद्ध के फलस्वरूप जर्मन–राज्यों से ऑस्ट्रिया का वर्चस्व समाप्त हो गया। अब वहाँ प्रशा का प्रभाव कायम हो गया।

हैनोवर, हेसकेसल, नासो और फ्रैंकफर्ट प्रशा के राज्य में शामिल कर लिये गये। इसके बाद उसने जर्मन–राज्यों को नये सिरे से अपने नेतृत्व में संगठित करने का प्रयास किया। किन्तु दक्षिण–राज्यों के विरोध के कारण ऐसा करना संभव नहीं हुआ। ऐसी स्थिति में यह उचित समझा गया कि चार दक्षिण जर्मन राज्यों को छोड़कर (बवेरिया, बुटर्मवर्ग, बादेन और हेंस) शेष जर्मन–राज्यों का संगठन प्रशा के नेतृत्व में बना लिया जाए। बिस्मार्क ने ऐसा ही किया। इस प्रकार उसने उत्तरी जर्मन राज्यों का गठन कर लिया। इसमें 21 जर्मन राज्य शामिल थे। इस नवीन संघ का अध्यक्ष प्रशा को बनाया गया। बिस्मार्क इस संघ का प्रथम चांसलर नियुक्त हुआ।

जर्मनी के एकीकरण के लिए बिस्मार्क ने फ्रांस से अंतिम युद्ध किया, क्योंकि उसे पराजित किये बिना दक्षिण के चार जर्मन राज्यों को जर्मन संघ में शामिल करना असंभव था। 15 जुलाई, 1870 ई. को फ्रांस ने प्रशा के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। यह युद्ध सीडान के मैदान में लड़ा गया, जिसमें नेपोलियन तृतीय पराजित कर दिया गया। जर्मन सेनाएं फ्रांस के अंदर तक घुस गयीं। 20 जनवरी, 1871 ई. को पेरिस के पतन के पश्चात युद्ध समाप्त हो गया।

सीडान के युद्ध के बाद दक्षिण जर्मनी के चार राज्यों – बवेरिया, बादेन, बुटर्मवर्ग और हेंस को जर्मन संघ में शामिल कर उसे जर्मनी (जर्मन साम्राज्य) एक नया नाम दिया गया। प्रशा का राजा जर्मनी का भी शासक घोषित किया गया। इस प्रकार जर्मनी का एकीकरण पूर्ण हुआ। 18 जनवरी, 1871 ई. में विलियम प्रथम का राज्याभिषेक जर्मनी के सम्राट के रूप में हुआ। इस असंभव से लगने वाले कार्य को पूर्ण करने का श्रेय बिस्मार्क को है।

वर्तमान में जर्मनी की राजधानी बर्लिन है। यूरोपीय महाद्वीप में स्थित जर्मनी के उत्तरी सीमा पर उत्तरी समुद्र, डेनमार्क और बाल्टिक सागर, पूरब में पौलैंड और चेक गणराज्य, दक्षिण में ऑस्ट्रिया और स्विट्जरलैंड और पश्चिम में फ्रांस, लक्जेमबर्ग, बेल्जियम और नीदरलैंड है। यहाँ की मुद्रा यूरो है। यहाँ जर्मन भाषा बोली जाती है। जर्मनी के संसद का नाम बुँडस्टॉग है।

संदर्भः एन.सी.ई.आर.टी. की वर्ग दशम् के इतिहास की पाठ्यपुस्तक के अध्याय एक से जोड़कर चर्चा करें।

जन्मदिन विशेष (18 जनवरी) – महादेव गोबिंद रानाडे

महादेव गोविन्द रानाडे ब्रिटिश काल के एक भारतीय न्यायाधीश, लेखक एवं समाज सुधारक थे। नासिक, महाराष्ट्र के एक छोटे से कस्बे निफाड़ में महादेव गोविन्द रानाडे का जन्म 18 जनवरी 1842ई. को हुआ था। उनका आरम्भिक काल कोल्हापुर में बीता, जहाँ उनके पिता मंत्री थे। इनकी शिक्षा मुंबई के एल्फिन्स्टन कॉलेज में चौदह वर्ष की आयु में आरम्भ हुई थी। वे बम्बई विश्वविद्यालय से कला स्नातकोत्तर एवं विधि स्नातकोत्तर (एल.एल.बी) के पाठ्यक्रमों में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। इन्हें बम्बई प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट, मुंबई स्मॉल कॉजेज कोर्ट के चतुर्थ न्यायाधीश, प्रथम श्रेणी उप–न्यायाधीश, पुणे, 1873 में नियुक्त किया गया। सन 1885 से ये उच्च न्यायालय से जुड़े। ये बम्बई वैधानिक परिषद के सदस्य भी थे। 1893 ई. में उन्हें मुंबई उच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त किया गया।

उन्होंने अपने मित्रों आत्माराम पांडुरंग और चन्द्रावरकर के साथ मिलकर प्रार्थना समाज की स्थापना 1867ई. में किया, जिसका उद्देश्य जाति–प्रथा का विरोध, विधवा मुण्डन, विधवा विवाह, बाल–विवाह, विवाह के आडम्बरों पर भारी आर्थिक व्यय, इत्यादि का विरोध था। स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन प्रदान किया। उन्होंने पुणे सार्वजनिक सभा की स्थापना की। बाद में, वे भारतीय राष्ट्रीस कांग्रेस के संस्थापकों में से एक बने।

संदर्भः अतीत से वर्तमान भाग 3, पृष्ठ 133 और पृष्ठ 186; महादेव गोविन्द रानाडे के जीवनी और कार्यों के बारे में बतायें।

हरिवंश राय बच्चन का निधन

कवि हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवंबर, 1907 ई. को इलाहाबाद के पास प्रतापगढ़ जिले के छोटे से गाँव बाबूपट्टी में हुआ था। उनके पिता का नाम प्रताप नारायण श्रीवास्तव एवं माता का नाम सरस्वती देवी था। उनके माता–पिता इन्हें प्यार से 'बच्चन' कह कर बुलाया करते थे। हरिवंशराय जी अपनी शिक्षा म्युनिसिपल स्कूल से शुरू की थी। 19 वर्ष की उम्र में उनका विवाह श्यामा बच्चन से हुआ जो उस समय 14 वर्ष की थीं। सन 1936 में टी.बी. के कारण श्यामा की मृत्यु हो गई। पाँच साल बाद 1941 ई. में बच्चन ने तेजी सूरी से विवाह किया जो रंगमंच तथा गायन से जुड़ी हुई थीं। इसी समय उन्होंने 'नीड़ का निर्माण फिर' जैसे कविताओं की रचना की। उनके पुत्र अमिताभ बच्चन एक प्रसिद्ध अभिनेता हैं।

1938 ई. में इन्होंने इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से इंग्लिश लिटरेचर में एम.ए. किया और 1952 तक वे इसी यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर भी रहे। 1952 में इंग्लिश लिटरेचर में पीएच.डी. करने के लिए इंग्लैंड की कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी चले गए। वे दूसरे भारतीय थे, जिन्हें कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से इंग्लिश लिटरेचर में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त हुई थी। इसके बाद वे अपने नाम के आगे जातिसूचक शब्द 'श्रीवास्तव' को हटाकर 'बच्चन' लगाने लगे। वापस आकर वे फिर से यूनिवर्सिटी में पढ़ाने लगे साथ ही साथ ऑल इंडिया रेडियो इलाहाबाद में काम करने लगे। 1955 में हरिवंशराय जी दिल्ली चले गए और भारत सरकार ने उन्हें विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ के रूप में नियुक्त कर लिया। 1966 में इनका नाम राज्य सभा के लिए लिया गया था। हरिवंशराय जी ने शेक्सपियर की Macbeth and Othello को हिंदी में रूपांतरित किया जिसके लिए उन्हें सदैव स्मरण किया जाता है। हरिवंशराय जी का निधन 18 जनवरी, 2003 में 95 वर्ष की आयु में बम्बई में हो गया।

इनकी प्रसिद्ध रचनाओं में मधुशाला (1935), मधुबाला (1936), मधुकलश (1937), क्या भूलूँ क्या याद करूँ (1969) आदि प्रमुख हैं। उनकी कृति 'दो चट्टानें' को 1968 ई. में हिन्दी कविता के लिए भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था। इसी वर्ष उन्हें 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' तथा एफ्रो एशियाई सम्मेलन के 'कमल पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया। बिड़ला फाउण्डेशन ने उनकी आत्मकथा के लिए उन्हें 'सरस्वती सम्मान' दिया था। बच्चन को भारत सरकार द्वारा 1976ई. में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

19 जनवरी

जन्मदिन विशेष (19 जनवरी) – जेम्स वॉट

जेम्स वॉट का जन्म 19 जनवरी, 1736 ई. को स्कॉटलैंड में हुआ था। उनके पिता जहाज के मालक और ठेकेदार थे और साथ ही गाँव के मुख्य बेली (Baillie) भी थे, जबकि उनकी माता एग्नेस मुईरहेड, एक अच्छी पढ़ी–लिखी महिला थी जिसका संबंध एक टूटे हुए परिवार से था। उनके माता और पिता दोनों ही पादरी संघ शासित गिरजे के सदस्य थे। वाट के दादा, थॉमस वाट गणित के शिक्षक और बेली (Baillie) थे। जेम्स वॉट बचपन में बाकी बच्चों से अलग और गंभीर थे। बचपन में वे रोज स्कूल भी नहीं जाते थे। उनकी माँ उन्हें घर पर ही पढ़ाती थी। लेकिन बाद में उन्होंने स्कूल जाना शुरू किया। स्कूल के दिनों में उन्होंने सिद्ध कर दिया कि उनमें गणित और इंजीनियरिंग के गुण अधिक हैं।

एक बार उनकी माँ उन्हें चूल्हे के पास बैठाकर कोई काम कर रही थी। जेम्स चूल्हे पर रखी पानी के केटली को बहुत ध्यान से देख रहे थे। उन्होंने देखा की केतली में उबल रहे पानी का भाप बार–बार केतली के ढक्कन को उठा दे रहा है। उन्होंने केतली पर एक कंकड़ रख दिया फिर भी थोड़ी देर बाद ढक्कन उठ गया। तभी उन्हें लगा कि जरूर भाप में कोइ ना कोई शक्ति है। अचानक माँ की मौत और पिता को बिजनेस में घाटा होने के बाद जेम्स वॉट की जिंदगी बदल गई।

उन्होंने पेट भरने के लिए घड़ी निर्माता के यहाँ छोटे–मोटे काम भी करना पड़ा। इसी बीच गुप्त ताप की खोज की घटना के बाद भाप संम्बन्धी शक्ति का ध्यान हो आया। उन्हीं दिनों विश्वविद्यालय में एक धीरे–धीरे काम करने वाला अधिक ईंधन लेने वाला एक इंजन मरम्मत के लिए आया। जेम्स ने इसे सुधारने का बीड़ा उठाया। जेम्स ने इसे सुधारने के लिए उसमें एक कन्डेंसर लगा दिया, जो शून्य दबाव वाला था। इस वजह से पिस्टन सिलेण्डर में ऊपर नीचे आने–जाने लगा। पानी डालने की जरूरत उसमें नहीं थी।

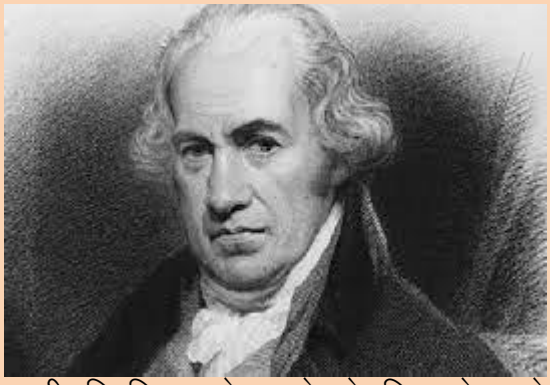

शून्य की स्थिति बनाये रखने के लिए जेम्स ने उसमें एक वायु पम्प लगाकर पिस्टन की पैकिंग मजबूत बना दी। घर्षण रोकने के लिए तेल डाला तथा एक स्टीम टाइट बॉक्स लगाया, जिससे ऊर्जा की क्षति रूक गयी। इस तरह, जेम्स वॉट का महत्वपूर्ण कार्य भाप से चलने वाली वाष्प इंजन को सर्वश्रेष्ठ रूप देना है। वे ग्लासगो विश्वविद्यालय के भौतिकी के प्रोफेसर थे।

25 अगस्त, 1819 ई. को 83 वर्ष की आयु में स्टैफोर्डशायर (अब बर्मिंघम का हिस्सा) में हैंड्सवर्थ के पास उनके घर 'हीथफील्ड हॉल' में उनका निधन हो गया। उन्हें 2 सितंबर को सेंट मैरी चर्च, हैंड्सवर्थ के कब्रिस्तान में दफनाया गया था।

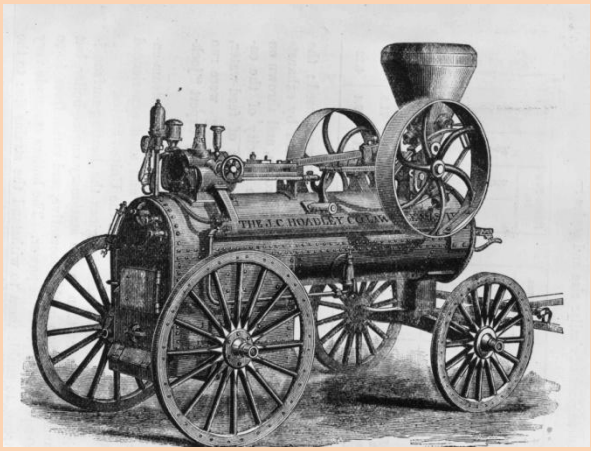

बच्चों को क्या बतायें? बच्चों को जेम्स वॉट की जीवनी और उनके अविष्कारों के बारे में बतायें।

20 जनवरी

जन्मदिन विशेष (20 जनवरी) – एम्पीयर

आंद्रे मैरी एम्पीयर फ्रांस के भौतिक विज्ञानी थे। उन्होंने विद्युत चुंबकत्व से संबंधित महत्वपूर्ण नियम का प्रतिपादन किया जिसे 'एम्पीयर का नियम' कहा जाता है।

एम्पीयर का जन्म सन् 20 जनवरी, 1775 ई० में फ्रांस में हुआ था। एम्पीयर ने यह खोजा कि जब दो समान्तर तारों में विद्युतधारा एक ही दिशा में बहती है तो उन तारों में आकर्षण होता है। इसी प्रकार यदि दो समान्तर तारों में विद्युत धारा विपरीत दिशाओं में बहती है तो इन दोनों तारों के बीच में प्रतिकर्षण होता है। उन्होंने सर्वप्रथम यह भी आविष्कार किया कि यदि किसी कुण्डली से विद्युत धारा गुजारी जाए तो वह कुण्डली चुम्बक बन जाती है। इस प्रकार की कुण्डली को 'सालीनाइड' कहते हैं।

एम्पीयर के प्रयोगों से यह सिद्ध हो गया है कि विद्युत धाराओं का वही प्रभाव होता है जो चुम्बकों का होता है। उन्होंने स्टैटिक सुई का आविष्कार किया जो विद्युत धारा मापने के काम में आती है। उन्होंने बताया कि पृथ्वी का चुम्बकत्व, पृथ्वी के केन्द्र से बहने वाली विद्युत धाराओं के कारण होता है। उन्हीं के प्रयोग पर आधारित विद्युत धारा की इकाई 'एम्पीयर' आज प्रयोग की जाती है। एम्पीयर ने विद्युत धारा से सम्बन्धित बहुत से कार्य सम्पन्न किये। विद्युत के क्षेत्र में एम्पीयर ने अपने कार्यों से बहुत नाम कमाया।

संदर्भः भौतिक विज्ञान के अध्याय '**विद्युत धारा**' से जोड़कर चर्चा करें।

खान अब्दुल गफ़्फार खान का निधन– खान अब्दुल गफ़्फार खान 'भारत रत्न' सम्मान पाने वाले (1987ई) प्रथम विदेशी नागरिक थे। उन्होंने 1930 ई. के सत्याग्रह आंदोलन में महात्मा गाँधी का साथ दिया था। 1930 के दशक के उत्तरार्द्ध में महात्मा गाँधी के निकटस्थ सलाहकारों में से एक थे। भारत विभाजन के बाद उन्होंने पाकिस्तान में रहने का निश्चय किया लेकिन वे भारत विभाजन से सहमत नहीं थे। सन् 1988 में पाकिस्तान के सरकार ने उन्हें पेशावर में उनके घर में नज़रबंद कर दिया। 'सीमांत गाँधी' के नाम से मशहूर खान अब्दुल गफ़्फार खान का निधन 20 जनवरी, 1988 ई. को हुआ था।

बच्चों को क्या बतायें? बच्चों को वर्ग आठ की इतिहास की पाठ्यपुस्तक 'अतीत से वर्तमान भाग 3' के संदर्भ में स्वतंत्रता के लड़ाई में इनकी भूमिका पर चर्चा करवायें।

भारत की पहली परमाणु भट्टी 'अप्सरा'

अप्सरा भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, ट्रांबे (बंबई) में स्थापित भारत की पहली परमाणु भट्टी (रिऐक्टर) है। इसकी रूपरेखा, डिजाइन आदि भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) के निदेशक डॉ. भाभा एवं उनके सहयोगी वैज्ञानिकों तथा इंजीनियरों ने सन् 1955 में तैयार की थी। होमी जहांगीर को भारत में 'न्यूक्लीयर एनर्जी का जनक' भी कहा जाता है। इस परमाणु भट्टी का उद्घाटन 20 जनवरी, सन् 1957 ई. को तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया था।

अप्सरा लाइट वाटर स्विमिंग पूल टाइप रिएक्टर था। इसमें एक बार में एक मेगावॉट थर्मल की बिजली का प्रोडक्शन होता था। अप्सरा की ऊर्जा उत्पादन की अधिकतम शक्ति 1000 किलोवाट है, लेकिन इसका प्रचालन सामान्यतः 400 किलोवाट शक्ति तक ही किया जाता है। रिएक्टर की भट्टी में एल्यूमिनियम यूरेनियम की मिश्रित धातु से तैयार प्लेटों को जलाकर एनर्जी बनाई जाती थी। इसमें विशेष फ्यूल का यूज किया जाता था, जो यू.के. से आता था। इसमें रेडियो आइसोटोप का प्रोडक्शन भी किया जाता है। 2010 में ये बंद हो गया था। इसके अपग्रेड रिएक्टर अप्सरा का संचालन 10 सितंबर, 2018 में शुरू किया गया है।

21 जनवरी

त्रिपुरा स्थापना दिवस

त्रिपुरा, 'तिपेरा' शब्द का अपभ्रंश है। त्रिपुरा मूल रूप से त्रिपुरी, जामाती जनजातियों का प्रदेश है। इसलिए त्रिपुरी जनजातियों के प्रदेश के रूप में त्रिपुरा का नामकरण किया गया। इस प्रदेश को प्राचीन काल में किरात देश कहा जाता था। किंवदतियों के अनुसार, राजा त्रिपुर के पुत्र त्रिलोचन युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में शामिल हुए थे। 1784 ई. में महाराज कृष्ण माणिक्य ने त्रिपुरा की राजधानी अगरतला बनाया था। अंग्रेजों ने 1765 ई. में त्रिपुरा के घाटियों में प्रवेश किया था। 15 अक्टूबर, 1949ई. को त्रिपुरा को भारत में विलय कर लिया गया और इसे समूह 'ग' राज्य के अधीन रखा गया। वर्ष 1956 में इसे केंद्रशासित प्रदेश का दर्जा मिला और 21 जनवरी, 1972 को इसे पूर्ण राज्य का दर्जा प्रदान किया गया।

इसके उत्तर, दक्षिण–पश्चिम तथा दक्षिण–पूर्व में बांग्लादेश एवं उत्तर तथा उत्तर–पूर्व में असम एवं मिजोरम अवस्थित है। त्रिपुरा बांग्लादेश के साथ 880 किलोमीटर लंबी सीमा बनाती है। त्रिपुरा का राजकीय पशु केरीज पर्ण वानर और राजकीय पक्षी फैरी ब्लू बर्ड है। बांग्ला, त्रिपुरी, मणिपुरी यहाँ की मुख्य भाषाएं हैं। त्रिपुरा राज्य में 4 जिले हैं–उत्तरी त्रिपुरा, दक्षिणी त्रिपुरा, पश्चिमी त्रिपुरा और ढलाई। त्रिपुरा की सबसे लंबी नदी गोमती है।

चोरोलाम, रासलीला, रखाल यहाँ की प्रमुख लोक नृत्य है। लुशाई, त्रिपुरी, भील, मोग, कुकी, चकमा, गारो, खासिया, भूटिया, लेपचा, जमातिया यहाँ की प्रमुख जनजातियां हैं। यहाँ की जनजातियों का पुजारी या ओझा वाजहाई कहलाता है। प्रदेश में हर वर्ष जुलाई में सप्ताह भर खरची पूजा का उत्सव मनाया जाता है। सुंदर और तराशे गए लक्ष्मीनारायण तथा उमा महेश्वर मंदिर अगरतला में स्थित है। अगरतला से करीब 40 किलोमीटर दूर त्रिपुरा की प्राचीन राजधानी उदयपुर में त्रिपुरा सुंदरी नामक मंदिर को देवी के शांति पीठों में एक माना जाता है। त्रिपुरा सुंदरी मंदिर का निर्माण 1501 में महाराजा धन्य माणिक्य द्वारा करवाया गया था। जमपुरी त्रिपुरा राज्य का एकमात्र हिल स्टेशन है।

मेघालय स्थापना दिवस

मेघालय का शाब्दिक अर्थ है 'मेघ का आलय' अर्थात 'बादलों का घर'। भारत में ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व में सर्वाधिक वर्षा इसी प्रदेश में होती है। स्पष्ट है कि इस राज्य के नामकरण में यही पृष्ठभूमि है। मेघालय राज्य का गठन 2 अप्रैल, 1970 को एक स्वायत्तशासी राज्य के रूप में किया गया था, लेकिन एक पूर्ण राज्य के रूप में मेघालय 21 जनवरी, 1972 को अस्तित्व में आया।

इसके उत्तर तथा पूर्व में असम और दक्षिण तथा पश्चिम में बांग्लादेश स्थित है। इस प्रदेश में मुख्यतः खासी जयंतिया और गारो समुदाय के लोग रहते हैं। मेघालय का राज्य पशु भालू–बिल्ली और राज्य पक्षी पहाड़ी मैना है। इस राज्य की राजधानी शिलांग है। मेघालय का उच्च न्यायालय गुवाहाटी में स्थित है।

राज्य के 70.3% भू–भाग वन क्षेत्र से आच्छादित है। लाख, बांस, बेंत, साल, फर्न, टिक, गामरी, दौमा, खोकन आदि प्रमुख वृक्ष हैं। चावल और मक्का यहाँ की प्रमुख फसल है। हूलोक (हाइलोबेट्स हूलोक) प्रजाति के बंदर भारत में केवल यहीं पाए जाते हैं। यहाँ के बाँस के जंगलों में हाथी और जंगली सूअर बहुतायत में पाये जाते हैं। प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्र के हिसाब से मेघालय में हाथियों की संख्या सबसे अधिक है। 'ईरी' नामक रेशम का यहाँ बहुत प्रचलन है।

यहाँ की गारो तथा खासी दोनों में माँ का वंशनाम ही अगली पीढ़ी को मिलता है, लेकिन संपत्ति की देखरेख, सामाजिक कामों और पंचायतों में मामा की भूमिका प्रमुख होती है। खासी जनजाति में सबसे छोटी लड़की संपत्ति की वारिस बनती है। कबीले के मुखिया के मरने पर उसकी बड़ी बहन का बेटा मुखिया बनता है।

मणिपुर स्थापना दिवस

मणिपुर का वास्तविक अर्थ है– 'एक आभूषित भूमि'। एक पौराणिक कथा के अनुसार, पाताल में रहने वाले नाग देवता इस प्रदेश के सौंदर्य पर मुग्ध हो गए थे और उन्होंने इस पर मणियों की वर्षा भी की थी। इसलिए इसका नाम 'मणिपुर' पड़ा। महाभारत में भी इस प्रदेश का उल्लेख मिलता है। अर्जुन की पत्नी चित्रांगदा इसी प्रदेश की थीं। यह माना जाता है पारवंगा नामक साहसी व्यक्ति ने इस भू–भाग पर राज्य किया तथा एक बड़े राजवंश की स्थापना की। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के समय सुभाष चंद्र बोस अपनी आजाद हिंद फौज के साथ अंग्रेजों को हराते हुए मणिपुर राज्य में पहुँचे थे। लंगथाबल में आई.एन.ए. स्मारक भी उन्हीं सैनिकों की स्मृति में बना है। वर्ष 1949 में भारतीय संघ में विलय के बाद इसे 'सी' वर्ग का राज्य बनाया गया। पुनः 1956 के पुनर्गठन कानून के अंतर्गत इसे केंद्रशासित प्रदेश बनाया गया। अंततः 21 जनवरी, 1972 ई. को मणिपुर को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया गया।

मणिपुर का राज्य राज्य दिवस 21 जनवरी को मनाया जाता है। इसका क्षेत्रफल 22,327 वर्ग किमी.है। मणिपुर की राजधानी इंफाल है। मणिपुर का राजकीय पशु थामिन मृग और राजकीय पक्षी ह्यूमजू बावेक्ट फैजेंट है। यहाँ की मुख्य भाषा मणिपुरी है। मणिपुर के उत्तर में नागालैंड, दक्षिण में म्यानमार, दक्षिण पश्चिम में मिजोरम, पूरब में म्यानमार तथा पश्चिम में असम राज्य है। इसका 92% हिस्सा पहाड़ियों से घिरा है। इरील, थोबल और नाम्बुल यहाँ की प्रमुख नदियां हैं। मणिपुर के लोकतक झील में केबुल लामजाओ नामक एक तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान है, जो विश्व में अपने तरह का एकमात्र तैरता हुआ उद्यान है।

मणिपुर को 'उत्सव की भूमि' भी कहा जाता है। 'मणिपुरी' नृत्य भारत का शास्त्रीय नृत्य है। मणिपुर का एक और प्रमुख नृत्य है– रास। रासलीला में 8 गोपियां और एक कृष्ण होते हैं। नील, हल्दी और फूलों के पौधे मणिपुर से निर्यात किए जाते हैं। 'पोलो' खेल की उत्पत्ति मणिपुर से ही मानी जाती है।

बच्चों को क्या बतायें? बच्चों को मेघालय, मणिपुर और मिजोरम के भौगोलिक अवस्थिति, राजनैतिक तथा संस्कृति के बारे में बतायें।

रासबिहारी बोस का निधन

रासबिहारी बोस भारत के एक क्रांतिकारी नेता थे। दिल्ली की तत्कालीन वायसराय लार्ड चार्ल्स हार्डिंग पर बम फेंकने की योजना बनाने, ग़दर की साजिश रचने, और बाद में जापान जाकर इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की स्थापना की। रासबिहारी बोस ने 1942 में आजाद हिन्द फौज की भी स्थापना की थी। रासबिहारी बोस का निधन 21 जनवरी, 1945ई. को हुआ था।

संदर्भः अतीत से वर्तमान भाग 3, पाठ 12, पृष्ठ 208 के संदर्भ में बच्चों को रासबिहारी बोस के कार्यों के बारे में बतायें।

लेनिन की मृत्यु

व्लादिमीर इलीइच लेनिन का असली नाम 'उल्यानोव' था। लेनिन एक उच्च कोटि का रूसी विचारक और दार्शनिक था। प्रथम विश्वयुद्ध के समय लेनिन का नारा था– 'युद्ध बंद करो।' लेनिन बोल्शेविक क्रान्ति का भी नेता था। लेनिन ने तीन नारे दिए– भूमि, शांति और रोटी। भूमि किसानों को, शांति सेना को और रोटी मजदूरों को। 21 जनवरी, 1924 को मस्तिष्क रक्तस्त्राव के कारण लेनिन की मृत्यु हो गई।

संदर्भः इतिहास के शिक्षक बच्चों को **रूस की क्रांति** और लेनिन के बारे में बताएं। **NCERT की वर्ग नवम् की इतिहास की पाठ्यपुस्तक के अध्याय 2** से जोड़ कर चर्चा करें।

22 जनवरी

जन्मदिन विशेष (22 जनवरी) – ठाकुर रोशन सिंह

ठाकुर रोशन सिंह का जन्म उत्तरप्रदेश के शाहजहाँपुर के नबादा गांव में 22 जनवरी, 1892 ई. को हुआ था। उनके पिता का नाम ठाकुर जंगी सिंह और माँ का नाम कौशल्या देवी था। परिवार आर्य समाज से प्रभावित था। रोशन सिंह पाँच भाई–बहनों में सबसे बड़े थे। रोशन सिंह बडे अनुभवी, दक्ष व अचूक निशानेबाज थे। असहयोग आन्दोलन में शाहजहाँपुर और बरेली जिले के ग्रामीण क्षेत्र में उन्होंने अद्‌भुत योगदान दिया था। यही नहीं, बरेली में हुए गोली–काण्ड में एक पुलिस वाले की रायफल छीनकर जबर्दस्त फायरिंग शुरू कर दी थी जिसके कारण हमलावर पुलिस को उल्टे पाँव भागना पडा। हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी के लिए धन जुटाने के वास्ते लूट की कई गतिविधियों में शामिल होने के कारण अंग्रेजों को उनकी तलाश थी। 9 अगस्त, 1925 ई. को हुई काकोरी लूट कांड में उनको अभियुक्त बनाया गया। मुकदमा चला और रोशन सिंह को सेण्ट्रल जेल बरेली में दो साल सश्रम कैद की सजा काटनी पड़ी थी। 19 दिसम्बर, 1927 को इलाहाबाद स्थित मलाका जेल में उनको फाँसी दे दिया गया।

वांडिवाश का युद्ध

वांडीवाश का युद्ध 22 जनवरी, 1760 ई. को अंग्रेजी सेना और फ्रांसीसियों को मध्य लड़ा गया था। अंग्रेजी सेना का नेतृत्व सर आयरकूट ने किया था। वांडिवाश, (तमिलनाडु) के इस युद्ध में फ्रांसीसियों की हार हुई और उन्हें पाण्डिचेरी अंग्रेजों को सौंपना पड़ा। इस विजय के साथ ही अंग्रेजों ने भारत में फ्राँसीसियों की राजनीतिक शक्ति समाप्त कर दी।

वांडीवाश का युद्ध फ्रांसीसियों के लिए निर्णायक युद्ध था, क्योंकि फ्रांसीसियों की समझ में यह बात पूर्ण रूप से आ चुकी थी कि वे कम से कम भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के रहते सफल नहीं हो सकते। चाहे वह उत्तर–पूर्व हो या पश्चिम या फिर दक्षिण भारत। 1763 ई. में सम्पन्न हुई 'पेरिस सन्धि' के द्वारा अंग्रेजों ने चन्द्रनगर को छोड़कर शेष अन्य प्रदेश, जो फ्रांसीसियों के अधिकार में 1749 ई. तक थे, वापस कर दिये और ये क्षेत्र भारत के स्वतंत्र होने तक इनके पास बने रहे।

संदर्भः अतीत से वर्तमान भाग 3, पृष्ठ 24 के संदर्भ में बच्चों को अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध के बारे में बतायें।

खूनी रविवार

खूनी रविवार, 22 जनवरी, 1905 को रूस की जार सेना ने शांतिपूर्ण मजदूरों तथा उनके बीबी–बच्चों के एक जुलूस पर गोलियाँ बरसाई, जिसके कारण हजारों लोगों की जान गईं। इस दिन चूँकि रविवार था, इसलिए यह खूनी रविवार के नाम से जाना जाता है। इसी दिन श्रमिकों के शांतिपूर्ण जुलूस पर रशियन सैनिकों ने गोलियाँ चलायीं थी। जिस के कारण सैकड़ों प्रदर्शनकारी मारे गये और हजारों की संख्या में घायल हुए थे। फादर गेपन ने श्रमिकों आर्थिक समस्याओं को जार सरकार के बातचीत से सुलझाना चाहते थे लेकिन वार्ता विफल हो गई। श्रमिकों के विभिन्न वर्ग ने फैसला लिया हम लोग शांतिपूर्ण ढंग से सरकार के खिलाफ हड़ताल करेंगे। हड़ताली श्रमिकों ने एक बड़ा जुलूस निकाला जिससे पूरा सेंट पीटर्सबर्ग, आंदोलनकारियों से भर चुका था। धीरे धीरे धीरे राजा के महल के तरफ बढ़ना शुरू हो गया था। सरकार के सैनिकों ने निहत्था श्रमिकों पर गोलियाँ की बारिश कर दिया जिससे महल के सामने का मैदान पूरी तरह खून से लबालब हो गया था। बचे हजारों प्रदर्शनकारियों को सलाखों के बीच में धकेल दिया गया।

संदर्भः NCERT की वर्ग नवम् की इतिहास की पाठ्यपुस्तक के अध्याय 2 'रूस की क्रांति' से जोडकर बतायें।

23 जनवरी

जन्मदिन विशेष (23 जनवरी) –सुभाष चन्द्र बोस

सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 ई. को कटक, उड़ीसा में हुआ था। उनके पिता का नाम जानकीनाथ बोस और माँ का नाम प्रभावती था। वे अपने माता–पिता की नौवीं संतान थे। एमिली इनकी पत्नी का नाम था। वर्ष 1919 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में स्नातक (प्रतिष्ठा) की परीक्षा प्रथम श्रेणी से पास करने के बाद सितम्बर, 1920 में आईसीएस कर प्रतिष्ठित परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया। 20 जुलाई, 1921ई. को मुम्बई में वे महात्मा गाँधी से मिले। उनके कहने पर वे देशबंधु चितरंजन दास के नेतृत्व में बंगाल में चलाये जा रहे असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। शीघ्र ही सुभाष एक महत्वपूर्ण युवा नेता बन गये। लेकिन भगत सिंह की फाँसी माफ कराने के मुद्दे पर महात्मा गांधी की सरकार से वार्ता विफल रहने पर सुभाष को गांधीजी का रवैया रास नहीं आया। इस कारण सुभाष गाँधी जी और कांग्रेस के तौर तरीकों से नाराज हो गए। यह मतभेद 1939 के कांग्रेस अधिवेशन तक चरम सीमा पर पहुँच गया। तब पट्टाभि सीतारामय्या को परास्त कर सुभाष त्रिपुरी कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। लेकिन गांधीजी से मतभेद के कारण उन्होंने अप्रैल, 1939 में पद से इस्तीफा दे दिया।

3 मई, 1939 ई. को उन्होंने 'फारवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की। जुलाई 1940 में कलकत्ता स्थित हालवेट स्तम्भ जो भारत की गुलामी का प्रतीक था, सुभाष की यूथ ब्रिगेड ने रातों रात वह स्तम्भ मिट्टी में मिला दिया गया। सुभाष के स्वंयसेवक उसकी नींव की एक–एक ईंट उखाड़ ले गए। इसके परिणामस्वरूप अंग्रेज सरकार ने सुभाष सहित फॉरवर्ड ब्लॉक के सभी मुख्य नेताओं को कैद कर लिया। अपने सार्वजनिक जीवन काल में वे 11 बार जेल गये।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान सुभाष जेल में रहकर निष्क्रिय नहीं रहना चाहते थे। सरकार को उन्हें रिहा करने पर मजबूर करने के लिए सुभाष ने जेल में आमरण अनशन शुरू कर दिया। हालत खराब होते ही सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया। मगर अंग्रेज सरकार यह भी नहीं चाहती थी कि सुभाष द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान मुक्त रहें। इसलिये सरकार ने उन्हें उनके ही घर में नज़रबन्द करके बाहर पुलिस का पहरा बिठा दिया। लेकिन वे वहाँ से 16 जनवरी, 1941 को भेष बदलकर फरार हो गये। वे पेशावर, काबुल व मास्को होते हुए जर्मनी की राजधानी बर्लिन पहुँच गए। जहाँ उन्होंने 'भारतीय स्वतंत्रता संगठन' और 'आजाद हिंद रेडियो' की स्थापना की।

29 मई, 1942 को वे एडोल्फ हिटलर से मिले लेकिन हिटलर को भारत के विषय में रुचि नहीं थी। इसके कुछ वर्ष पहले वह इटली के नेता मुसोलिनी से मिले। जिन्होंने उन्हें सहायता करने का वचन दिया। 8 मार्च, 1943 को एक जर्मन पनडुब्बी में बैठकर वह हिंद महासागर में मैडागास्कर तट और वहाँ से एक जापानी पनडुब्बी से इंडोनेशिया के पादांग बंदरगाह तक गए। पूर्व एशिया पहुँचे सुभाष ने सिंगापुर के 'फरेर पार्क' में रासबिहारी बोस से 'भारतीय स्वतंत्रता परिषद' का नेतृत्व संभाला। जापान के प्रधानमंत्री जनरल हिदेकी तोजो ने उन्हें सहयोग का आश्वासन दिया। 23 अक्टूबर, 1943 को नेताजी ने सिंगापुर में 'अर्जी–हुकूमत–ए–आजाद हिंद' (स्वाधीन भारत के अंतरिम सरकार) की स्थापना की। वह खुद इस सरकार के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और युद्धमंत्री बने। इस सरकार को नौ देशों ने मान्यता दी।

उन्होंने जापान के सहयोग से 'आजाद हिन्द फौज' का गठन किया। आजाद हिंद फौज में जापानी सेना ने अंग्रेजों की फौज के पकड़े हुए भारतीय युद्धबंदियों को भर्ती किया। नेताजी ने आजाद हिन्द फौज की बागडोर संभालने के बाद भागलपुर के आनंद मोहन सहाय को उसका सेक्रेटरी जनरल बनाया था। श्री सहाय की पुत्री आशा सहाय भी आजाद हिन्द फौज की रानी झांसी रेजीमेंट में सेकेंड लेफ्टिनेंट थी। आजाद हिन्द

फौज में औरतों के लिए 'झाँसी की रानी रेजिमेंट' भी बनाई। उन्होंने 'जय हिन्द' का नारा दिया था।

5 जुलाई, 1943 ई. को सिंगापुर के टाउन हॉल के सामने 'सुप्रीम कमाण्डर' के रूप में सेना को सम्बोधित करते हुए 'दिल्ली चलो' का नारा दिया था। युवाओं को फौज में भर्ती करने के लिए ''तुम मुझे खुन दो मैं तुझे आजादी दूँगा'' का नारा दिया था।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान आजाद हिंद फौज ने जापानी सेना के सहयोग से भारत पर आक्रमण किया। दोनों फौजियों ने अंग्रेजों से अंडमान और निकोबार द्वीप जीत लिए। जापान ने अंडमान और निकोबार द्वीप इन्हें प्रदान किया। सुभाष उन द्वीपों का नामकरण 'शहीद द्वीप' और 'स्वराज द्वीप' रखा। आजाद हिन्द फौज और जापानी सेना ने मिलकर इंफाल और कोहिमा पर आक्रमण किया। लेकिन अंग्रेजी फौज भारी पड़ी।

6 जुलाई, 1944 ई. को आजाद हिन्द रेडियो पर अपने भाषण के दौरान बोस ने गांधीजी को 'राष्ट्रपिता' कहकर सम्बोधित किया था। तभी गांधीजी ने भी उन्हें 'नेताजी' कहा। द्वितीय विश्व युद्ध में जापान की हार के बाद नेता जी ने रूस से सहायता माँगने का निश्चय किया था। 18 अगस्त, 1945 को नेताजी हवाई जहाज से मंचूरिया की तरफ जा रहे थे। इस सफर के बाद से ही उनका पता नहीं चला। 23 अगस्त, 1945 को जापान की 'दोमेई समाचार संस्था' ने बताया कि 18 अगस्त को नेताजी की ताइवान में हवाई दुर्घटना में मौत हो गई। सुभाष चन्द्र बोस के जन्म दिवस को 'पराक्रम दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

संदर्भः इतिहास के शिक्षक **अतीत से वर्तमान भाग 3, पाठ 12 अथवा पृष्ठ 208** के संदर्भ में बच्चों को सुभाष चन्द्र बोस की जीवनी बतायें। फिल्म 'नेता जी सुभाष चन्द्र बोस–द फॉरगोटन हीरो' बच्चों को दिखा सकते हैं।

सुभाष चन्द्र बोसः राष्ट्र चेतना के संवाहक

सुभाष चंद्र बोस हमारे देश के ऐसे महान विचारक एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी युगपुरुष थे जो अपने मजबूत, नेक व ओजस्वी विचारों से देश की जनता में देशभक्ति की प्रबल भावना सदा भरते रहते थे। इसके साथ–साथ देश की एकता को सदा मजबूत कायम रखने के पक्षधर थे। वह जो कहते थे, उसे पूरा करके ही दम लेते थे। यानि उनके उरस्थल में राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम व विश्वास भरा हुआ था। देश के प्रति उनका यह ठोस संकल्प था कि मार्ग भले ही कितना डरावना और कंटकाकीर्ण हो, यात्रा चाहे कितनी भी दुःखदायिनी हो, फिर भी हमें आगे बढ़ते जाना है और मंजिल को प्राप्त करने की अंततः भरपूर व अथक कोशिश करनी है। कोशिश करने में हमें कभी हतोत्साहित नहीं होना है। वे हमेशा ऊर्जावान व पक्के इरादों से भरे होते थे। वे स्वतंत्रता संग्राम के एक ऐसे नायक नहीं अपितु महानायक थे जिन्होंने देश में अंग्रेजों द्वारा फूट डालो राज करो की कूटनीति तथा धर्म, जातिवाद एवं क्षेत्रवाद का भेद समाप्त करते हुए राष्ट्रीयता की भावना से देश को ओतप्रोत किया। वे हमेशा आत्मबल पर विश्वास रखते थे। उनके शब्दों में, Those who rely on their own strength move forward in life and are injured with borrowed strength. अर्थात् जो अपनी ताकत पर भरोसा करते हैं, वे जीवन में आगे बढ़ते हैं और उधार की ताकत वाले घायल हो जाते हैं। कहने का तात्पर्य है कि वे सबसे पहले अपनी ताकत, अपने आत्मबल में भरोसा जागृत करने के लिए कहते थे। सबसे पहले हम स्वयं को मजबूत करके ही औरों को इस हेतु प्रेरित कर सकते हैं।

राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम के कारण ही इन्होंने सिविल सर्विसेज की नौकरी को त्याग दिया था। यही तो उनकी असली देशभक्ति थी। वे स्वामी विवेकानंद के विचारों से बहुत अधिक प्रभावित थे तथा इनके राजनीतिक गुरु चितरंजन दास थे। इनसे इन्हें राजनीति की प्रेरणा मिलती रहती थी। देश की महिलाओं के प्रति उनका सकारात्मक विचार बहुत ही प्रशंसनीय है। 'जब एक महिला शिक्षित होगी तो परिवार और समाज शिक्षित होगा। समाज में व्याप्त सामाजिक बुराईयों, कुप्रथाओं एवं प्राचीन अवधारणाओं का अंत होगा। अतः महिलाओं को आगे बढ़ाने पर ही आजादी की सार्थकता सच्ची होगी।'

कहने का मतलब है कि वे अपने देश को हर क्षेत्र में, हर मोर्चे पर जय देखना चाहते थे। अतः राष्ट्रचेतना के संवाहक नेता जी सुभाष चंद्र बोस का जन्मदिवस तभी सफल माना जाएगा जब हम उनकी राह पर चलेंगे।

✍देव कांत मिश्र 'दिव्य' भागलपुर, बिहार

अहमद शाह अब्दाली द्वारा दिल्ली में भयंकर लूट–पाट

अहमद शाह अब्दाली, जिसे अहमद शाह 'दुर्रानी' भी कहा जाता है, सन 1748 में नादिरशाह की मौत के बाद अफगानिस्तान का शासक और दुर्रानी साम्राज्य का संस्थापक बना। ताजपोशी के वक्त, साबिर शाह नाम के एक सूफी दरवेश ने अहमद शाह अब्दाली को 'दुर–ए–दुर्रान' का खिताब दिया था, जिसका मतलब होता है 'मोतियों का मोती'। इसके बाद से अहमद शाह अब्दाली और उसके कबीले को 'दुर्रानी' के नाम से जाना जाने लगा। अहमद शाह अब्दाली के विशाल साम्राज्य का दायरा पश्चिम में ईरान से लेकर पूरब में हिंदुस्तान के सरहिंद तक था।

उसने भारत पर सन् 1748 ई.–1767 ई. के बीच सात बार चढ़ाई की। उसने पहला आक्रमण 1748 ई. में पंजाब पर किया, जो असफल रहा। 1749 में उसने पंजाब पर दूसरा आक्रमण किया और वहाँ के गर्वनर 'मुईनुलमुल्क' को परास्त किया। मुईनुलमुल्क को अहमदशाह अब्दाली ने पंजाब में अपने एजेन्ट तथा गर्वनर के रुप में नियुक्त किया था। 1752 में नियमित रुप से पैसा न मिलने के कारण पंजाब पर उसने तीसरा आक्रमण किया। उसने हिन्दुस्तान पर चौथी बार आक्रमण 'इमादुलमुल्क' को सजा देने के लिए किया था। 1753 ई. में मुईनुलमुल्क की मृत्यु हो जाने के बाद इमादुलमुल्क ने 'अदीना बेग खाँ' को पंजाब को सूबेदार नियुक्त किया। इस घटना के बाद अब्दाली ने हिन्दुस्तान पर हमला करने का निश्चय किया। उसने अपना सबसे बड़ा हमला सन् 1757 में जनवरी माह में दिल्ली पर किया। 23 जनवरी, 1757 को वह दिल्ली पहुँचा और शहर कब्जा कर लिया। उस समय दिल्ली का शासक आलमगीर (द्वितीय) था। वह बहुत ही कमजोर और डरपोक शासक था। उसने अब्दाली से अपमानजनक संधि की जिसमें एक शर्त दिल्ली को लूटने की अनुमति देना था। अहमदशाह एक माह तक दिल्ली में ठहर कर लूटमार करता रहा। वहाँ की लूट में उसे करोड़ों की संपत्ति हाथ लगी थी। उसकी लूट का आलम यह था कि पंजाबी में एक कहावत मशहूर हो गई थी कि, 'खादा पीत्ता लाहे दा, रहंदा अहमद शाहे दा' अर्थात् जो खा लिया पी लिया और तन को लग गया वो ही अपना है, बाकी तो अहमद शाह लूट कर ले जाएगा।

अलेक्जॅन्डर कॅनिंघम (जन्म– 23 जनवरी, 1814)

अलेक्जॅन्डर कॅनिंघम को 'भारत के पुरातत्त्व अन्वेषण का पिता' कहा जाता है। कॅनिंघम एक ब्रिटिश पुरातत्वशास्त्री तथा सेना में अभियांत्रिक पद पर नियुक्त थे। 1833 ई. में एक सैनिक शिक्षार्थी के रूप में वह ब्रिटेन से भारत आये थे, सैनिक इंजीनियर बनकर युद्धों में भाग लिया तथा बाद में बर्मा (वर्तमान म्यांमार) और पश्चिमोत्तर प्रांत के मुख्य अभियंता रहे। वर्ष 1861 ई. में सेवानिवृत्त होने पर वह पुरातत्त्व के काम में लग गये।

हैंडराइटिंग डे

हस्तलेखन दिवस 23 जनवरी, 1977 से प्रतिवर्ष मनाया जाता आ रहा है। दिवस मनाने का उद्देश्य पेंसिल, पेन और कलर पेन से राइटिंग को खूबसूरत बनाना है। इसके साथ ही सुंदर हैंडराइटिंग के माध्यम से व्यक्तित्व को अच्छा बनाना है। सन् 1977 से ही इसे भारत में मनाया जा रहा है।

जनता पार्टी का गठन

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा लागू आपातकाल (1975–1976) के बाद जनसंघ सहित भारत के प्रमुख राजनैतिक दलों का विलय करके 23 जनवरी, 1977 को एक नए दल 'जनता पार्टी' का गठन किया गया। जनता पार्टी ने 1977 से 1980 तक भारत सरकार का नेतृत्व किया। विभिन्न दलों में शक्ति साझा करने को लेकर विवाद बढ़ने लगे और ढ़ाई वर्ष बाद देसाई को अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा। तीन वर्षों तक सरकार चलाने के बाद 1980 में जनता पार्टी विघटित हो गई और पूर्व जनसंघ के पदचिह्नों को पुनर्संयोजित करते हुये भारतीय जनता पार्टी का निर्माण किया गया।

24 जनवरी

जन्मदिन विशेष (24 जनवरी) – कर्पूरी ठाकुर

बिहार के दूसरे उपमुख्यमंत्री और दो बार मुख्यमंत्री थे– कर्पूरी ठाकुर। इन्होंने आम आदमी की अगुआई की। किसान, मजदूरों, शोषित, दलित और पिछड़ों के हक की लड़ाई को इन्होंने बहुत आगे बढ़ाया। इन्होंने बिहार में सामाजिक न्याय की लड़ाई लड़ी और इसमें सफल हुए। अपने इन्हीं गुणों एवं सेवा–भाव के कारण ये बिहार के जन–जन के नेता हो गये। इन्होंने अपने जीवन काल में जनता के लिए आगे बढ़कर कार्य किया इसलिए इन्हें 'जननायक' कहा गया। आज भी सभी लोग इन्हें हृदय से चाहते और मानते हैं।

समस्तीपुर जिला में एक गाँव है–पितौंझिया (जिसे अब कर्पूरी ग्राम भी कहा जाता है)। इसी गाँव के एक गरीब परिवार में 24 जनवरी, 1924 ई. को कर्पूरी ठाकुर का जन्म हुआ था। इनकी प्रारंभिक पढ़ाई प्राथमिक विद्यालय, ताजपुर और बहुद्देशीय तिरहुत एकेडमी समस्तीपुर में हुई। गरीबी और अभाव से लड़ने की इच्छा–शक्ति इनमें शुरू से ही थी। पितौंझिया गाँव से समस्तीपुर के स्कूल वे रोज पैदल ही जाते थे। ट्यूशन पढ़ाकर कर्पूरी ठाकुर ने चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज, दरभंगा से कॉलेज की पढ़ाई पूरी की। ये स्नातक की शिक्षा पूरी कर रहे थे लेकिन 1942 ई. के भारत छोड़ो आन्दोलन में कूद पड़ने के फलस्वरूप, इन्हें अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी।

सामान्य परिवार में पैदा हुए कर्पूरी ठाकुर के समक्ष परिजनों के भरण–पोषण की जिम्मेदारी थी। परिवार की आर्थिक कठिनाईयों के कारण इन्होंने शिक्षक की नौकरी की और लक्ष्मीनारायण मध्य विद्यालय, पितौंझिया में प्रधानाध्यापक बन गए।

आजादी के आन्दोलन में आगे बढ़कर आन्दोलन जारी रखने के कारण कई बार कर्पूरी ठाकुर को जेल भी जाना पड़ा। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्होंने 26 महीने जेल में बिताये थे। वे हिन्द किसान पंचायत में बिहार शाखा के महासचिव बने। 1952 ई. में ये ताजपुर विधानसभा से विधायक चुने गये। कर्पूरी ठाकुर का डॉ. राममनोहर लोहिया और लोकनायक जयप्रकाश नारायण के साथ बहुत गहरा संबंध था। कर्पूरी ठाकुर 1967 ई. में उपमुख्यमंत्री और 1970 ई. में मुख्यमंत्री (22 दिसम्बर, 1970 से 2 जून, 1971) बने। 1977 ई. में लोकसभा के सांसद भी चुने गये। 24 जून, 1977 से 21 अप्रैल, 1979 ई. तक दूसरी बार ये बिहार के मुख्यमंत्री रहे। मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने पिछड़ों को 27 प्रतिशत आरक्षण दिया।

17 जनवरी, 1988 ई. को सचिवालय के समीप देशरत्न मार्ग, पटना में इनका देहावसान हो गया। यहीं इनकी याद में जननायक कर्पूरी ठाकुर ठाकुर स्मृति संग्रहालय बना है। यहाँ कर्पूरी ठाकुर का शयनकक्ष, पुस्तकालय तथा दैनिक उपयोग की वस्तुएँ, वस्त्र, चित्र, हस्तलिपि, डायरी आदि हैं।

मुख्यमंत्री होते हुए भी ये आम आदमी की तरह सादा जीवन जीते थे। मुख्यमंत्री रहते उनकी सरकारी गाड़ी पर सायरन नहीं होता था। उनके साथ स्कार्ट पार्टी नहीं होती थी। यहाँ तक की उन्होंने कहीं भी अपना घर या बंगला नहीं बनवाया। पैतृक रूप में मिली 13 कट्ठा जमीन ही उनकी संपत्ति थी। शराबबंदी के भी वे प्रबल पक्षधर थे। उनका मानना था कि व्यक्ति को कुपथ और बर्बादी पर ले जाने की एक वजह शराबखोरी है। इसीलिए तो ये हैं बिहार के गौरव और हमारे अगुआ!

संदर्भः हिन्दी के शिक्षक **किसलय भाग 3, पाठ 19** के संदर्भ में बच्चों को कर्पूरी ठाकुर की जीवनी के बारे में बच्चों को बतायें।

✍**निधि कुमारी,**
राजकीय मध्य विद्यालय, तेतरिया
प्रखंड–तेतरिया, जिला–पूर्वी चम्पारण

राष्ट्रीय बालिका दिवस

राष्ट्रीय बालिका दिवस भारत में प्रत्येक वर्ष 24 जनवरी को मनाया जाता है। इसकी शुरुआत महिला एवं बाल विकास भारत सरकार ने 2008 में की थी। इस दिन विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जिसमें सेव द गर्ल, चाइल्ड,और बालिकाओं के लिए स्वास्थ्य और सुरक्षित वातावरण बनाने सहित जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। 24 जनवरी के दिन पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को नारी शक्ति के रूप में याद किया जाता है। इस दिन इंदिरा गांधी पहली बार प्रधानमंत्री के रूप में कार्यभार संभाली थी, इसलिए इस दिन को राष्ट्रीय बालिका दिवस के रूप में मनाया जाता है।

उद्देश्य : राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाने के पीछे निम्नलिखित उद्देश्य थे–

(1) देश की लड़कियों द्वारा सामना की जाने वाली सभी समानताओं के बारे में जागरूकता फैलाना।

(2) बालिकाओं के अधिकारों के बारे में जागरूक करना।

(3) बालिका शिक्षा स्वास्थ्य और पोषण के महत्व पर जागरूकता बढ़ाना।

(4) सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल विवाह, दहेज प्रथा, भूण हत्या को बंद करना।

(5) लैंगिक विभेद को समाप्त कर समानता का अवसर प्रदान करना।

कारण : बालिका दिवस मनाने का प्रमुख कारण–

(1) आजादी के बाद बालिकाओं की शिक्षा दर बहुत ही कम थी।

(2) बालिकाओं को कम उम्र में ही शादी कर दी जाती थी जिससे वे शिक्षा से वंचित हो जाती थी तथा उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था।

(3) लैंगिक विभेद होने के चलते उन्हें कम अवसर प्रदान होता था।

(4) लड़कियों को शिक्षा कानूनी अधिकार और सम्मान जैसे मामले में असमानता का शिकार होना पड़ता था।

निवारण :

(1) लड़कियों को समान अधिकार देना।

(2) शिक्षा स्वास्थ्य और पोषण सहित अहम विषय पर जागरूकता पैदा करना।

(3) बाल विवाह को समाप्त कर उन्हें भी अवसर प्रदान करना।

(4) भ्रूण हत्या पर रोक लगाकर लिंगानुपात दर को बरकरार रखना।

(5) सरकार ने बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना शुरू की है। इसके तहत उन्हें पढ़ाने का अवसर मुहैया कराना।

(6) पिछले वर्ग की लड़कियों के लिए ओपन लर्निंग सिस्टम का बंदोबस्त।

(7) ग्रामीण क्षेत्रों के लिए बेहतरीन आजीविका सुनिश्चित करने के लिए स्वयं सहायता समूह काम कर रही हैं।

सरकार द्वारा भी बालिकाओं के शिक्षा के प्रोत्साहन लिए कई योजनाएं शुरू की गई हैं। जैसेः मुख्यमंत्री बालिका पोशाक योजना, छात्रवृति योजना, मुख्यमंत्री बालिका साईकिल योजना, हर विद्यालय में मीना मंच, कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालय की स्थापना, व्यावसायिक कौशल विकास कार्यक्रम (हुनर), विटामिन ए और आयरन की गोली उपलब्ध करवाना, वर्ग सात से बालिकाओं को सेनेटरी नैपकिन मुहैया करवाना आदि।

क्या करें? इस अवसर पर लड़कियों को खासकर किशोरियों को सशक्त बनाने संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन करें। बालिकाओं को घरेलू हिंसा से बचाव और उनके अधिकार, कन्या भ्रूण हत्या पर रोक, बाल विवाह, लड़कियों से छेड़छाड़ व दहेज उत्पीड़न जैसी समस्याओं के बारे में सचेत करें और चर्चा करें। समाज को बतायें की बेटियों की शादी 21 वर्ष के बाद ही करें ताकि उन्हें शिक्षा और समग्र विकास का पूरा अवसर मिल सके।

संदर्भः सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन भाग 2, पाठ 4–5 के संदर्भ में अथवा **सुरक्षित शनिवार कार्यक्रम के अंतर्गत चतुर्थ शनिवार के विषय** के आलोक में बच्चों से चर्चा करें।

✍अशोक कुमार
न्यू प्राथमिक विद्यालय, भटवलिया
प्रखंड– नुआंव, जिला– कैमूर (बिहार)
मोबाइल नंबर– 7464030618

राष्ट्रगान का अंगीकार

संविधान सभा के अंतिम सत्र के दिन 24 जनवरी, 1950 को सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने गुरुदेव रबींद्रनाथ टैगोर द्वारा रचित जन–गण–मन को भारत के गणतंत्र के राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया।

27 दिसंबर, 1911 में कोलकाता के कांग्रेस अधिवेशन के लिए रबींद्रनाथ टैगोर ने जन–गण–मन गीत गाया था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित विशन नारायण दत्त ने की थी। यह गीत 27 दिसंबर, 1918 को पहली बार सार्वजनिक तौर पर एक राजनैतिक समारोह में कांग्रेस अधिवेशन के दूसरे दिन गाया गया था। रबींद्रनाथ ठाकुर के संपादन में प्रकाशित 'तत्वबोधिनी' पत्रिका के सन् 1912 के अंक में 'भारत भाग्य विधाता' शीर्षक से यह गीत पहली बार प्रकाशित हुआ था। स्वयं गुरुदेव रबींद्रनाथ ठाकुर ने 'द मॉर्निंग सॉन्ग ऑफ इंडिया' शीर्षक के अंतर्गत इस गीत को अंग्रेजी में अनुवादित किया। कवि रबींद्रनाथ का यह अनुवाद मद्रास की मदनपल्ले कॉलेज की पत्रिका में पहली बार प्रकाशित किया गया। सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज ने इस गीत के बारे में घोषणा की कि टैगोर का गीत 'जय हे' हमारा राष्ट्रगान बन गया है।

राष्ट्रगान को सामूहिक रूप से गायनः

राष्ट्रगान का पूर्ण संस्करण निम्नलिखित अवसरों पर सामूहिक गान के साथ बजाया जाएगाः

1. राष्ट्रीय ध्वज को फहराने के अवसर पर
2. सांस्कृतिक अवसर पर या परेड के अलावा अन्य समारोह पूर्ण कार्यक्रमों में
3. सरकारी और सार्वजनिक कार्यक्रम में राष्ट्रपति के आगमन के अवसर पर; परंतु औपचारिक राज्य कार्यक्रमों और सामूहिक कार्यक्रमों के अलावा और इन कार्यक्रमों से उनके विदा होने के तत्काल पहले
4. राष्ट्रगान को गाने के सभी अवसरों पर सामूहिक गान के साथ इसके पूर्ण संस्करण का उच्चारण किया जाएगा तथा राष्ट्रगान उन अवसरों पर भी गाया जाए जो पूरी तरह से समारोह के रूप में ना हो तथा इनका कुछ महत्व हो जिसमें मंत्रियों आदि की उपस्थिति शामिल है। इन अवसरों पर राष्ट्रगान को गाने के साथ संगीत वाद्यों के साथ या इनके बिना सामूहिक रूप से गायन वांछित होता है।
5. विद्यालय में दिन के कार्यों में राष्ट्रगान को सामूहिक रूप से गाकर आरंभ किया जा सकता है। विद्यालय के प्रति कार्यों को राष्ट्रगान के गायन को लोकप्रिय बनाने के लिए अपने कार्यक्रमों में पर्याप्त प्रावधान करने चाहिए तथा उन्हें छात्रों के बीच राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान की भावना को प्रोत्साहन देना चाहिए। यह संभव नहीं है कि अवसरों की कोई एक सूची दी जाए। राष्ट्रगान को गाने पर तब तक कोई आपत्ति नहीं है जब तक इससे मातृभूमि को सलामी देते हुए आदर के साथ गाया जाए और इसकी उचित गरिमा को बनाए रखा जाए। जब राष्ट्रगान को गाया या बजाया जाता है तो श्रोताओं को सावधान की मुद्रा में खड़े रहने चाहिए।

राष्ट्रगान

जन–गण–मन अधिनायक जय हे,
भारत–भाग्य–विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा
द्रविड़–उत्कल–बंग
विंध्य–हिमाचल–यमुना–गंगा
उच्छल–जलधि–तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे
गाहे तव जय गाथा
जन–गण–मंगलदायक जय हे,
भारत–भाग्य–विधाता
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।।

राष्ट्रगान बजाने का नियम :

राष्ट्रगान का पूर्ण संस्करण निम्नलिखित अवसरों पर बजाया जाता है।

1. नागरिक और सैन्य अधिष्ठापन
2. जब राष्ट्र सलामी देता है अर्थात इसका अर्थ है राष्ट्रपति और संबंधित राज्य/संघ–राज्य क्षेत्रों के

अंतर्गत राज्यपाल/उप–राज्यपाल को विशेष अवसरों पर राष्ट्रगान के साथ (राष्ट्रीय सलामी, सलामी–शस्त्र समादेश)

3. परेड के दौरान चाहे उपरोक्त में संदर्भित विशिष्ट अतिथि उपस्थित हो या नहीं
4. औपचारिक राज्य कार्यक्रमों और सरकार द्वारा आयोजित अन्य कार्यक्रमों में राष्ट्रपति के आगमन और सामूहिक कार्यक्रमों में तथा इन कार्यक्रमों से उनके वापस जाने के अवसर पर
5. ऑल इंडिया रेडियो पर राष्ट्रपति के राष्ट्र के संबोधन के तत्काल पूर्व और उसके पश्चात
6. राज्यपाल/उप–राज्यपाल के उनके राज्य/संघ–राज्य के अंतर्गत औपचारिक राज्य कार्यक्रमों में आगमन पर तथा इन कार्यक्रमों से उनके वापस जाने के समय
7. जब राष्ट्रीय ध्वज को परेड में लाया जाए
8. सैन्य दलों के ध्वजों के प्रस्तुत किए जाने पर
9. नौसेना के ध्वज को फहराते समय

जब राष्ट्रगान को गाया या बजाया जाता है तो श्रोताओं को सावधान की मुद्रा में खड़े रहने चाहिए। यद्यपि जब किसी चलचित्र या भाग के रूप में राष्ट्रगान को किसी समाचार की गतिविधि और संक्षिप्त चलचित्र के दौरान बजाया जाए तो श्रोताओं से अपेक्षित नहीं है कि वे खड़े हो जाएं क्योंकि उनके खड़े होने से फिल्म के प्रदर्शन में बाधा आएगी और एक असंतुलन और भ्रम पैदा होगा तथा राष्ट्रगान की गरिमा में वृद्धि नहीं होगी।

संदर्भः पर्यावरण और हम भाग 2, पाठ 22 के संदर्भ में चर्चा करें।

जन गण मन का इतिहास

सन् 1911 तक भारत की राजधानी बंगाल हुआ करता था। सन् 1905 में जब बंगाल विभाजन को लेकर अंग्रेजों के खिलाफ बंग–भंग आंदोलन के विरोध में बंगाल के लोग उठ खड़े हुए तो अंग्रेजों ने अपने आपको बचाने के लिए राजधानी को कोलकाता से हटाकर दिल्ली ले गए और 1911ई. में दिल्ली को राजधानी घोषित कर दिया। पूरे भारत में उस समय लोग विद्रोह से भरे हुए थे, तो अंग्रेजों ने अपने इंग्लैंड के राजा को भारत आमंत्रित किया ताकि लोग शांत हो जाये। इंग्लैंड का राजा जॉर्ज पंचम 1911ई. में भारत आया। रबींद्रनाथ टैगोर पर दबाव बनाया गया कि तुम्हें एक गीत जॉर्ज पंचम के स्वागत में लिखना ही होगा। उस समय टैगोर का परिवार अंग्रेजों के काफी नजदीक हुआ करता था। उनके परिवार के बहुत से लोग ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए काम किया करते थे। उनके बड़े भाई अवनींद्र नाथ टैगोर बहुत दिनों तक ईस्ट इंडिया कंपनी के कोलकाता डिवीजन के निदेशक रहे। उनके परिवार का बहुत पैसा ईस्ट इंडिया कंपनी में लगा हुआ था। रविंद्र नाथ टैगोर ने मन से या बेमन से जो गीत लिखा उसके बोल हैं– 'जन गण मन अधिनायक जय हे'। इस गीत के सारे के सारे शब्दों में जॉर्ज पंचम का गुणगान किया गया था। जिसका अर्थ समझने पता लगेगा कि अंग्रेजों की खुशामद में लिखा गया था। इस राष्ट्रगान का अर्थ कुछ इस प्रकार से होता हैः

"भारत के नागरिक, भारत की जनता, अपने मन से आपको भारत का भाग्य विधाता समझती है और मानती है। हे अधिनायक, तुम ही भारत के भाग्य विधाता हो। तुम्हारी जय हो, जय हो, जय हो। तुम्हारे भारत आने से सभी प्रांत पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा, द्रविड़, उत्कल, बंगाल आदि और जितनी भी नदियां जैसे यमुना और गंगा यह सभी हर्षित हैं, खुश हैं। तुम्हारा नाम लेकर ही हम जागते हैं और तुम्हारा नाम के आशीर्वाद चाहते हैं। तुम्हारी ही हम गाथा गाते हैं। हे भारत के भाग्य विधाता! तुम्हारी जय हो, जय हो, जय हो।"

पूरे गीत के पांच छंदों में से मात्र एक छंद को ही राष्ट्रगान के रूप में गाया जाता है। इसके गायन की अवधि लगभग 52 सेकंड है। कुछ अवसरों पर संक्षिप्त रूप से गाया जाता है, जिसमें इसकी प्रथम और अंतिम पंक्तियों गाने का समय करीब 20 सेकंड की गाई जाती है। राष्ट्रगान की जो धुन बजाई जाती है, उसे आजाद हिंद फौज के स्वतंत्रता सेनानी कैप्टन राम सिंह ठाकुर ने तैयार की थी।

25 जनवरी

राष्ट्रीय मतदाता दिवस – 25 जनवरी

भारत में राष्ट्रीय मतदाता दिवस प्रत्येक वर्ष 25 जनवरी को मनाया जाता है। विश्व में भारत जैसे सबसे बड़े लोकतन्त्र में मतदान को लेकर कम होते रुझान को देखते हुए राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया जाने लगा था। इसके मनाए जाने के पीछे निर्वाचन आयोग का उद्देश्य था कि देश भर के सभी मतदान केन्द्र वाले क्षेत्रों में प्रत्येक वर्ष उन सभी पात्र मतदाताओं की पहचान की जाएगी, जिनकी उम्र 18 वर्ष हो चुकी होगी। इस सिलसिले में 18 वर्ष या उससे अधिक उम्र के नए मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में दर्ज किए जाएँगे और उन्हें निर्वाचन फोटो पहचान पत्र सौंपे जाएँगे। इस प्रकार, मतदान की प्रक्रिया में भारतीय नागरिकों की अधिक से अधिक सहभागिता सुनिश्चित करने और उन्हें सशक्त, सतर्क, सुरक्षित एवं जागरूक बनाने का लक्ष्य है।

वर्ष 1950 से स्थापित चुनाव आयोग के 61वें स्थापना वर्ष पर 25 जनवरी, 2011 को तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने राष्ट्रीय मतदाता दिवस का शुभारंभ किया था। इस आयोजन के दो प्रमुख विषय थे समावेशी और गुणात्मक भागीदारी तथा कोई मतदाता पीछे न छूटे।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाने का निम्नलिखित उद्देश्य था–

(1) सबसे बड़े लोकतंत्र में अपनी आस्था रखें।

(2) शत प्रतिशत अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

(3) स्वच्छ निर्मल सरकार चुनें।

(4) भारतीय नागरिक की उम्र यदि 18 वर्ष हो जाए तो नजदीकी बीएलओ से संपर्क स्थापित का मतदाता सूची में नाम जुड़वाएं।

(5) भय मुक्त मतदान।

(6) अपने अधिकारों को समझें। प्रत्येक वोट बहुमूल्य है। एक वोट से हार एवं जीत होती है।

वर्तमान में मतदाता अपनी पहचान सिद्ध करने के लिए इन 12 दस्तावेजों में से किसी का भी वोटिंग के लिए उपयोग कर सकता है, बशर्ते उसकी उम्र 18 वर्ष या उससे अधिक हो तथा उसका नाम मतदाता सूची में हो:

1. मतदाता पहचान पत्र
2. पासपोर्ट
3. ड्राइविंग लाइसेंस
4. सर्विस पहचान पत्र
5. बैंक अथवा डाकघर द्वारा जारी फोटोयुक्त पासबुक
6. पैन कार्ड
7. स्मार्ट कार्ड
8. मनरेगा जॉब कार्ड
9. स्वास्थ्य बीमा
10. पेंशन दस्तावेज (फोटोयुक्त)
11. सांसद, विधायक और विधान परिषद सदस्यों को जारी सरकारी पहचान पत्र
12. आधार कार्ड

संदर्भः सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन भाग 1 अध्याय 6 तथा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन भाग 2, अध्याय 1 के संदर्भ में बच्चों को बतायें।

बच्चों से चर्चा करें कि मतदाता सूची क्या होती है? मतदान करना क्यों जरूरी है? बच्चों को अपने अभिभावकों को मतदान करने के लिए जागरूक करने के लिए प्रभात फेरी, नारा लेखन कार्यक्रमों का आयोजन करें।

✍अशोक कुमार
न्यू प्राथमिक विद्यालय, भटवलिया
प्रखंड– नुआंव, जिला– कैमूर (बिहार)
मोबाइल नंबर– 7464030618

हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश का शाब्दिक अर्थ 'बर्फीले पहाड़ों का प्रांत' है। यह भारत के उत्तर–पश्चिम में स्थित एक छोटा सा राज्य है। इसकी राजधानी शिमला है। 25 जनवरी, 1971 को हिमाचल प्रदेश भारत का 18 वां राज्य बनाया गया था। इसके अंतर्गत 12 जिले हैं। इसका क्षेत्रफल 55,673 वर्ग किलोमीटर है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की साक्षरता दर 83.78% है। हिमाचल के उत्तर में जम्मू कश्मीर, दक्षिण–पश्चिम में पंजाब, दक्षिण में हरियाणा और उत्तर प्रदेश एवं पूर्व में तिब्बत है। यहाँ हिंदू, बौद्ध एवं सिक्ख धर्म के मानने वाले लोग ज्यादा हैं। हिमाचल का राजकीय पशु हिमतेंदुआ, राजकीय पक्षी वेस्टर्न ट्रेगोपैन, राज्य तितली ब्लू मोरमॉन और राजभाषा हिंदी, पहाड़ी एवं डोगरी है। 15 अप्रैल को राज्य दिवस मनाया जाता है।

इस प्रदेश का वर्णन महाभारत काल में भी मिलता है। किंवदंति है कि वनवास के समय पांडव यहाँ आये थे। उस समय हिडिम्ब नामक राक्षस को मारकर उसकी बहन हिडिम्बा से भीम ने विवाह किया था। महाभारत काल में औदम्बर, त्रिगर्त, कुलूत कुलिन्द आदि यहाँ के प्रमुख राजा थे। यहाँ व्यास जी ने महाभारत की रचना की थी। वर्ष 1857 तक यह महाराजा रणजीत सिंह के शासन के अधीन पंजाब का भाग था। भारत की आजादी के बाद 15 अप्रैल, 1948 को 30 पहाड़ी रियासतों को मिलाकर हिमाचल प्रदेश का गठन किया गया। वर्ष 1951 में हिमाचल प्रदेश को 'सी' श्रेणी का राज्य बनाकर उपराज्यपाल के अधीन किया गया। वर्ष 1971 में पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त होने पर यशवंत सिंह परमार यहाँ के प्रथम मुख्यमंत्री चुने गए। उन्हें 'हिमाचल प्रदेश के निर्माता' के रूप में भी जाना जाता है।

प्राकृतिक सुंदरता की दृष्टि से हिमाचल प्रदेश, भारत का सबसे सुंदर राज्य है। हिमाचल प्रदेश को 'देवभूमि' भी कहा जाता है। इस प्रदेश की मुख्य नदियां चिनाब, यमुना, रावी, व्यास और सतलज है। यहाँ की जलवायु बहुत अच्छी है। रोहतांग, बारालोवा, शिपकीला, देबसा आदि प्रमुख दर्रे हैं। भारत की प्रसिद्ध गोविन्द सागर झील और पोंग बाँध झील इसी प्रदेश में स्थित हैं। इस प्रदेश की चित्रकला और स्थापत्य कला प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध रही है। यहाँ सेब, खुमानी, आलूबुखारे की खेती की जाती है। हिमाचल प्रदेश को 'फलों का कटोरा' कहा जाता है। यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। पहाड़ी लोकगीत एवं नाटी यहाँ का लोक नृत्य है। महिलाएं 'वेस्टी' एवं पुरुष 'शदरी' पहनते हैं। यहाँ का मुख्य व्यंजन सेपुबड़ी है। पोरी, लोहड़ी, कुल्लू दशहरा, गोगानवमी, राखी और दिवाली यहाँ के मुख्य त्योहार हैं। शिमला, रिज, झाखू, मंदिर, माल रॉड आदि हिमाचल प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थल है। ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान (कुल्लू) को युनेस्को विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया है। पर्यटन इस राज्य के आय का मुख्य स्रोत है। नैना देवी ,ज्वाला देवी, कांगड़ा देवी, चामुंडा देवी, चिंतपूर्णी देवी मंदिर आदि तीर्थ स्थलों के दर्शन करने लोग यहाँ आते हैं।

यहाँ हरे हरे लंबे वृक्ष पाए जाते हैं। यहाँ पर पशु–पक्षी और जलीय जीवों की अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं। यहाँ के जंगलों में कुछ दुर्लभ वन्य प्रजातियां जैसे कस्तूरी हिरन, लम्बे सींग वाला जंगली बकरा, हिमालयन भालू आदि पशु और ट्रेगोपैन, कोकियाश और स्नोकाक जेसी पक्षियां भी पायी जाती है। हिमाचल प्रदेश की 'पश्मीना' शॉल पूरे भारत में प्रसिद्ध है। यहाँ की संस्कृति और रहन–सहन में इतिहास की झलक है। चम्बा की 'दो रूखी' कढ़ाई किये रूमाल कपड़े पर विभिन्न रंगों के धागों से पौराणिक आख्यानो, तरूणी नायिकाओं के नखशिख चित्रण के लिए विश्व प्रसिद्ध है। पहाड़ों की गोद में बसा हिमाचल प्रदेश की प्रकृति का मनोरम दृश्य काफी मनमोहक एवं आकर्षक है।

✍ब्यूटी कुमारी, शिक्षिका
मध्य विद्यालय मराँची
बछवाड़ा, बेगूसराय।
मो.न.– 9472059652

राष्ट्रीय पर्यटन दिवस

राष्ट्रीय पर्यटन दिवस प्रतिवर्ष 25 जनवरी को मनाया जाता है। यह दिवस देश की अर्थव्यवस्था में पर्यटन की महत्ता के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए किया जाता है।

26 जनवरी

गणतन्त्र दिवस – 26 जनवरी

गणतन्त्र दिवस (गणतंत्र दिवस) भारत का एक राष्ट्रीय पर्व है जो प्रति वर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। इसी दिन सन् 1950 को भारत सरकार अधिनियम (1935) को हटाकर भारत का संविधान लागू किया गया था। एक स्वतन्त्र गणराज्य बनने और देश में कानून का राज स्थापित करने के लिए संविधान को 26 नवम्बर, 1949 को भारतीय संविधान सभा द्वारा अपनाया गया और 26 जनवरी, 1950 को इसे एक लोकतान्त्रिक सरकार प्रणाली के साथ लागू किया गया था। 26 जनवरी को इसलिए चुना गया था क्योंकि 1930 में इसी दिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई० एन० सी०) ने भारत को पूर्ण स्वराज घोषित किया था। यह भारत के तीन राष्ट्रीय अवकाशों में से एक है।

✍मधुप्रिया, अररिया (दिवस विशेष)

राष्ट्रीय चिन्ह : अशोक स्तंभ

भारत का राष्ट्रीय चिन्ह अशोक का स्तंभ है। इस स्तंभ के मूल प्रतिकृति सारनाथ वाराणसी उत्तर प्रदेश के संग्रहालय में सुरक्षित है। यह सम्राट अशोक द्वारा निर्मित सिंह स्तंभ की अनुकृति है। मूल स्तंभ में शीर्ष पर चार सिंह हैं जो एक दूसरे की ओर पीठ किए हुए हैं इसमें केवल तीन सिंह दिखाई पड़ते हैं चौथा दिखाई नहीं देता। एक दूसरे से पीठ के बल जुड़े चार सिंह शक्ति, साहस, गर्व और विश्वास के प्रतीक हैं। इसके नीचे घंटे के आकार के पद्म के ऊपर एक चित्र वल्लरी में एक हाथी चौकड़ी भरता हुआ, एक घोड़ा, एक सांड तथा एक सिंह की उभरी हुई मूर्तियां हैं। इसके बीच–बीच में चक्र बने हुए हैं। फलक के नीचे मुंडकोपनिषद का सूत्र 'सत्यमेव जयते' देवनागरी लिपि में अंकित है, जिसका अर्थ है–'सत्य की विजय होती है'। भारत का राष्ट्रीय प्रतीक एक खुले हुए उल्टे कमल पर खड़ा है। एक ही बालूपत्थर को काटकर बनाए गए इस सिंह स्तंभ के ऊपर धर्मचक्र रखा हुआ है। भारत सरकार ने यह चिन्ह 26 जनवरी, 1950 को अपनाया। पट्टी के मध्य में भी उभरी हुई नक्काशी में चक्र है, जिसके दाहिने तरफ 1 सांड और बायें तरफ एक घोड़ा दिखता है। राष्ट्रीय चिन्ह में दर्शाए गए पशुओं में घोड़ा अदम्य शक्ति, परिश्रम और गतिशीलता का घोतक है। राष्ट्रीय चिन्ह में दर्शाए गए सिंह साहस, शौर्य और निर्भीकता का प्रतीक है। राष्ट्रीय चिन्ह में दर्शाए गए सांड़ भारत की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था का घोतक है।

सारनाथ स्थित पुरातत्व संग्रहालय में अशोक स्तंभ का वर्णन निम्नलिखित रुप से प्रस्तुत किया गया है– ''अशोक स्तंभ का शीर्ष ऊँचाई 7 फीट चौड़ाई सिर्फ फलक के ऊपर 2 फीट 10 इंच है। यह बालूपत्थर के एक ही खंड से उत्तीर्ण किया गया था।''

आजादी के बाद भारत सरकार ने भी इसे राष्ट्रीय चिह्न बनाने का फैसला किया और 26 जनवरी 1950 को राष्ट्रीय चिह्न के रूप में 'अशोक स्तंभ' घोषित कर दिया गया। सन् 1950 के बाद अशोक स्तंभ के सिंह सिर्फ का प्रयोग सिक्कों, नोटों, मुद्रा तथा सेवा मोहरों आदि पर किया जाने लगा।

राष्ट्रीय पक्षी : मोर

भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर है। भारत सरकार ने 26 जनवरी, 1963 को मोर को राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया था। भारतीय वन्य प्राणी (सुरक्षा) अधिनियम, 1972 के अंतर्गत इसे पूर्ण संरक्षण प्राप्त है। भारत से पूर्व म्यांमार भी मयूर को राष्ट्रीय पक्षी घोषित कर चुका था। वर्ष 1963 में मोर को राष्ट्रीय पक्षी की मान्यता के बाद इसका शिकार करना कानूनन अपराध है।

हिंदी, उर्दू, पंजाबी तथा मराठी में मोर; कन्नड़ में नविलु; तमिल और मलयालम में मायिल; संस्कृत में मयूर, नीलकंठ, भुजंगभुक, केकिन, मेघानंद, शिखण्डिन; और फारसी में तौस कहते हैं। मोर के सिर पर कलगी यानी पतले तार समान पंखों के मुकुट होने के कारण इसे 'शिखी' अथवा 'शिखावल' भी कहते हैं। मोर का वैज्ञानिक नाम *पावो क्रिस्टेटस* है।

मौर्य वंश का प्रतीक चिन्ह मोर ही था। संभवत मोर शब्द से ही मौर्य वंश का नाम पड़ा। मुगल बादशाहों को भी मोर से विशेष प्रेम था। बाबर ने अपनी आत्मकथा में भारतीय पक्षियों का वर्णन मोर से ही आरंभ किया है। कई मुगल बादशाह मोर को पालतू बनाकर अपने दरबार के बागों में रखा करते थे। बादशाह शाहजहाँ तो मोर से इतने अधिक प्रभावित थे कि उन्होंने अपने एक सुंदर सिंहासन को तख्त–ए–ताऊस (मयूर सिंहासन) का नाम दिया था। इस सिंहासन पर मोरों का जोड़ा है, जिनकी उठी हुई पूँछ नीले नीलम तथा अन्य बहुमूल्य पत्थरों से बनी है। यह गौरव का प्रतीक था और इसे दिल्ली के दरबार में रखा गया था। भारत का सम्राट नादिर शाह, जिसने सन् 1739 में मुगलों की राजधानी को लूट लिया था तथा इस बहुमूल्य लूट को अपने देश में ले गया था। मुगल सम्राट जहाँगीर की 'मोर–मोरनी' एक उत्कृष्ट कलाकृति है। मौर्यकालीन कई रजत और स्वर्ण सिक्कों पर मोर की आकृति अंकित मिलती है। सिकंदर महान मोर की सुंदरता से प्रभावित होकर भारत विजय की निशानी के रूप में इसे अपने साथ ले गया था। भारतीय चित्रकला और शिल्पकला में भी मोर को प्रमुख महत्व दिया जाता है।

भारत में 2000 से अधिक पक्षियों के प्रजातियों में सर्वाधिक भव्य मनमोहक और आकर्षक पक्षी मोर है। वर्षा के दिनों में मोर का नृत्य आनंद और उत्सव की भावना को उत्पन्न करता है।

राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार

राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार बहादुर बच्चों को गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रदान किये जाते हैं। राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार वैसे बच्चों को दिये जाते हैं जिन्होंने अपने जान की परवाह न करते हुए किसी की जान बचाई हो या अद्म्य साहस का परिचय दिया हो। भारतीय बाल कल्याण परिषद् ने वर्ष 1957 में ये पुरस्कार प्रारंभ किये थे। पुरस्कार के रूप में एक पदक, प्रमाण पत्र और नकद राशि दी जाती है। सभी बच्चों को पढ़ाई पूरी करने तक वित्तीय सहायता भी दी जाती है। 26 जनवरी के दिन ये बहादुर बच्चे हाथी पर सवारी करते हुए गणतंत्र दिवस परेड में सम्मिलित होते हैं।

क्या आप जानते हैं? सबसे पहला राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार हरीशचंद्र मेहरा को प्रदान किया गया था। 2 अक्टूबर, 1957 ई. को दिल्ली के रामलीला मैदान में रामलीला के दौरान शमियाने में आग लग गई। 14 साल एक बालक हरीश मेहता ने अपनी जान की परवाह किए बगैर पंडित नेहरू और तमाम दूसरे गणमान्य नागरिकों को एक बड़े हादसे से बचाया था।

बच्चों को क्या बतायें? राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार के बारे में बच्चों को बतायें।

अंतर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस

विश्व सीमा शुल्क संगठन की स्थापना 26 जनवरी, 1952 को ब्रुसेल्स मे हुई थी। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य संपूर्ण विश्व में सीमा शुल्क प्रशासनों की प्रभावशीलता एवं कार्य क्षमता में वृद्धि लाना है। इस उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 26 जनवरी को अंतर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस मनाया जाता है।

औरंगाबाद जिला स्थापना दिवस – 26 जनवरी

औरंगाबाद जिला बिहार के दक्षिणी भाग में सोन नदी के पूर्वी तट पर स्थित है। इसे 'बिहार का चित्तौड़गढ़' भी कहा जाता है। यह पूरब में गया, पश्चिम में रोहतास, उत्तर में अरवल जिला और दक्षिण में झारखंड के साथ सीमा बनाती है। औरंगाबाद जिला की स्थापना 19 जनवरी, 1973 ई. (सरकारी अधिसूचना संख्या 07/11– 2071–72 दिनांक 19 जनवरी, 1973) को गया जिले से अलग किया गया था। वर्ष 2009 से इस जिले की स्थापना दिवस 26 जनवरी को मनाने की पहल शुरू की गई थी। के.ए.एच. सुब्रमण्यम इस जिले के पहले जिलाधिकारी और सुरजीत कुमार साहा पहले सब–डिविजनल पदाधिकारी नियुक्त किये गये थे।

औरंगाबाद जिले का वर्णन प्राचीन काल से भी मिलता है। यहाँ आयुर्वेदाचार्य ऋषि च्यवन का आश्रम हुआ करता था, जिन्होंने च्यवनप्राश का फार्मूला दिया। औरंगाबाद जिला का देव सूर्य मंदिर काफी प्रसिद्ध है, जहाँ छठ पर्व के अवसर पर भगवान भास्कर को अर्घ्य देने के लिए लोग दूर–दूर से आते हैं। हिंदुओं का एक पिंडदान स्थल भी पुनपुन नदी (जिसे पुराणों में अर्ध गंगा की संज्ञा दी गई है) के किनारे स्थित है। यह क्षेत्र मगध साम्राज्य का अभिन्न अंग हुआ करता था। इसी जिले के पीरु नामक स्थान पर बाणभट्ट की जन्मस्थली भी है, जिसने 'कादंबरी' और 'हर्षचरित्र' की रचना की थी। मुगल साम्राज्य के पतन के बाद यह क्षेत्र कई रियासतों में बँट गया और जमींदारों के अधीन आ गया जिसमें देव, कुटुंबा, माली, पवई, चंद्रगढ़, और सिरीस प्रमुख है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी औरंगाबाद जिला का महत्वपूर्ण योगदान रहा। 'बिहार विभूति' अनुग्रह नारायण सिन्हा ने चंपारण सत्याग्रह में भाग लिया था, जो कि बाद में बिहार के प्रथम उपमुख्यमंत्री सह वित्त मंत्री चुने गए थे। यह सत्येंद्र नारायण सिन्हा 'छोटे साहब' का जन्मस्थली भी है, जो कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग भी लिए और आगे चलकर बिहार के मुख्यमंत्री भी बने।

औरंगाबाद जिला का क्षेत्रफल 3,389 वर्ग किलोमीटर है। सोन, पुनपुन, अदरी, बटाने, मोरहर यहाँ की प्रमुख नदियां हैं। औरंगाबाद जिला प्रशासनिक दृष्टि से 2 अनुमंडलों और 11 प्रखंडों में बँटा हुआ है। यह जिला मगही पान की खेती के लिए मुख्य रूप से प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में मुख्यतः मगही भाषा बोली जाती है। देव सूर्य मंदिर, उमगा, देवकुंड, गजना धाम यहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं।

नवादा जिला स्थापना दिवस – 26 जनवरी

26 जनवरी, 1973 को गया जिले को विभाजित कर नवादा जिला की भी स्थापना की गई थी। नवादा जिले का क्षेत्रफल 2,494 वर्ग किलोमीटर है। नवादा जिला प्रशासनिक दृष्टि से 2 अनुमंडलों और 14 प्रखंडों में बँटा हुआ है। नवादा के उत्तर में नालंदा, दक्षिण में झारखंड का कोडरमा जिला, पूरब में शेखपुरा एवं जमुई तथा पश्चिम में गया जिला है।

प्राचीन काल में यह शक्तिशाली मगध साम्राज्य का अंग रहा था। इस जगह पर बृहद्रथ मौर्य गुप्त एवं कण्व शासकों ने लंबे समय तक शासन किया। मगध के शक्तिशाली बनने के पूर्व यह क्षेत्र महाभारतकालीन राजा जरासंघ के शासन प्रदेश का हिस्सा था। तपोवन को जरासंघ की जन्मभूमि माना जाता है। ऐसी मान्यता भी है कि भीम ने जरासंध का मल्लयुद्ध में हराया था। ककोलत जलप्रपात यहाँ की प्रमुख प्राकृतिक सुंदरता है। सकरी, खुरी, पचाने, तिलैया यहाँ की प्रमुख नदियां हैं।

ऑस्ट्रेलिया की स्वतंत्रता दिवस

ऑस्ट्रेलिया 1 जनवरी, 1961 को ब्रिटेन से स्वतंत्र हुआ था। ऑस्ट्रेलिया की राजधानी कैनबरा है। यहाँ की मुद्रा ऑस्ट्रेलियन डॉलर है। यह दक्षिणी गोलार्ध में स्थित है। 1901 ई. में यहाँ के सारे प्रांतों ने मिलकर ऑस्ट्रेलिया राष्ट्रकुल का निर्माण किया तथा राजधानी 1910 ईस्वी में कैनबरा में बनाई गई। गेहूँ, चावल, गन्ना, जौ आलू, केला, सूर्यमुखी यहाँ की प्रमुख फसल है। ऑस्ट्रेलिया गेहूँ निर्यात में विश्व में तीसरा और मांस निर्यात में दूसरा स्थान रखता है।

27 जनवरी

अंतर्राष्ट्रीय प्रलय स्मरण दिवस

होलोकास्ट के पीड़ितों की याद में अंतर्राष्ट्रीय प्रलय स्मरण दिवस प्रतिवर्ष 27 जनवरी को मनाया जाता है। नवम्बर 2005 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने आधिकारिक तौर पर 27 जनवरी को प्रलय पीड़ितो की याद में यह दिवस मनाने की घोषणा किया। हिटलर और उसकी राक्षसी गतिविधियों का एक उदाहरण है होलोकास्ट– वर्ष 1933 से 1945 तक यूरोपीय यहूदियों का सामूहिक उत्पीड़न और विनाश किया गया। यह ऑटोमन साम्राज्य में 20वीं शताब्दी के शुरूआती दिनों मे अर्मेनियाई लोगों के नरसंहार से जुड़ा है। विभिन्न स्रोत्रों के अनुसार लगभग 6 मिलियन लोग मारे गए थे।

एडिशन द्वारा बल्ब का पेटेंट

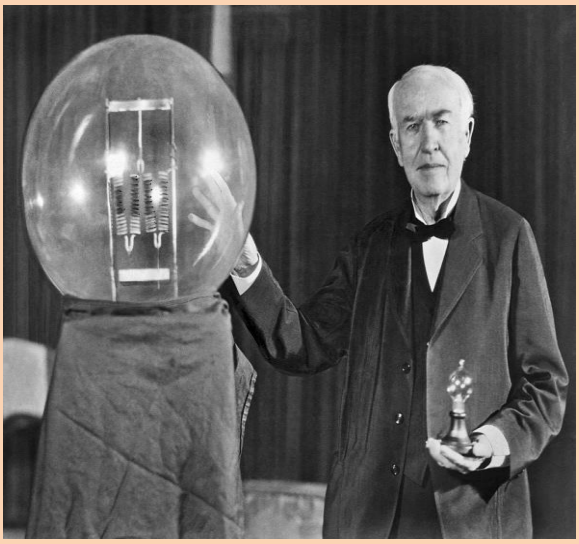

महान आविष्कारक एडिसन ने आज ही के दिन 27 जनवरी, 1880 को इलेक्ट्रिक बल्ब को पेटेंट कराया था। 1869 ई. में एडिसन ने अपने सर्वप्रथम आविष्कार 'विद्युत मतदानगणक' को पेटेंट कराया। नौकरी छोड़कर प्रयोगशाला में आविष्कार करने का निश्चय कर निर्धन एडिसन ने अदम्य आत्मविश्वास का परिचय दिया। 1870–76 ई. के बीच एडिसन ने अनेक आविष्कार किए। एक ही तार पर चार, छह, संदेश अलग अलग भेजने की विधि खोजी, स्टॉक एक्सचेंज के लिए तार छापने की स्वचालित मशीन को सुधारा, तथा बेल टेलीफोन यंत्र का विकास किया। उन्होंने 1875 ई. में 'सायंटिफिक अमेरिकन' में 'ईथरीय बल' पर खोजपूर्ण लेख प्रकाशित किया। 1878 ई. में फोनोग्राफ मशीन पेटेंट कराई जिसकी 2010 ई. में अनेक सुधारों के बाद वर्तमान रूप मिला।

✍ मधुप्रिया,
मध्य विद्यालय, रामपुर बीएमसी
फारबिसगंज, अररिया

इतिहास के पन्नों में 27 जनवरी का दिन

1880– थॉमस अल्वा एडिसन ने बिजली से जलने वाली बल्ब का पेटेंट करवाया।
1900– जर्मन शोधकर्ता फेलिक्स हॉफमैन ने पहली बार दर्द की दवा बनाई। इस दवा को इस समय 'एस्प्रिन' कहा जाता था।
1926– स्कॉटिश वैज्ञानिक जॉन लॉगी बेयर्ड ने टेलीविजन को दुनिया के सामने प्रदर्शित किया इसे उस समय 'टेलीवाइजर' का नाम दिया गया था।
1959– नई दिल्ली में पहले इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी कॉलेज की आधारशिला रखी गई।
1967– 'अपोलो–I' दुर्घटना में तीन अंतरिक्ष यात्रियों की मौत।
2009– भारत के आर्थिक आठवें राष्ट्रपति आर वेंकटरमन का निधन।

28 जनवरी

जन्मदिन विशेष (28 जनवरी) – लाला लाजपत राय

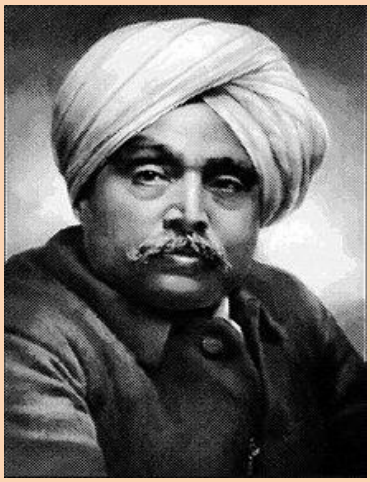

'पंजाब केसरी' लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी, 1865 ई. को पंजाब के मोगा जिले में हुआ था। उनके पिता मुंशी राधा कृष्ण आजाद फारसी और उर्दू के महान विद्वान थे और माता गुलाब देवी धार्मिक महिला थीं। प्रारंभ से ही लाजपत राय लेखन और भाषण में बहुत रुचि लेते थे। इन्होंने कुछ समय हरियाणा के रोहतक और हिसार शहरों में वकालत की। लाला लाजपतराय को 'शेर–ए–पंजाब' का सम्मानित संबोधन देकर लोग उन्हें गरम दल का नेता मानते थे। लाला लाजपत राय स्वावलंबन से स्वराज्य लाना चाहते थे।

बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल के साथ इस त्रिमूर्ति को 'लाल–बाल–पाल' के नाम से जाना जाता था। इन्हीं तीनों नेताओं ने सबसे पहले भारत में पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग की थी। बाद में समूचा देश इनके साथ हो गया। इन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती के साथ मिलकर आर्य समाज को पंजाब में लोकप्रिय बनाया। लाला हंसराज एवं कल्याण चन्द्र दीक्षित के साथ दयानन्द एंग्लो वैदिक विद्यालयों का प्रसार किया, लोग जिन्हें आजकल डीएवी स्कूल्स व कॉलेज के नाम से जानते है। लालाजी ने अनेक स्थानों पर अकाल में शिविर लगाकर लोगों की सेवा भी की थी। इन्होंने पंजाब नैशनल बैंक और लक्ष्मी बीमा कम्पनी की स्थापना भी की थी।

30 अक्टूबर, 1928 को इन्होंने लाहौर में साइमन कमीशन के विरुद्ध आयोजित एक विशाल प्रदर्शन में हिस्सा लिया, जिसके दौरान हुए लाठी–चार्ज में ये बुरी तरह से घायल हो गये। उस समय इन्होंने कहा था– 'मेरे शरीर पर पड़ी एक–एक लाठी ब्रिटिश सरकार के ताबूत में एक–एक कील का काम करेगी।' और वही हुआ भी। लालाजी के बलिदान के 20 साल के भीतर ही ब्रिटिश साम्राज्य का सूर्य अस्त हो गया। 17 नवंबर 1928 को इन्हीं चोटों की वजह से इनका देहान्त हो गया।

बच्चों को क्या बतायें? इतिहास के शिक्षक बच्चों को लाला लाजपत राय के जीवनी के बारे में बतायें।

✍मधुप्रिया,
मध्य विद्यालय, रामपुर बीएमसी
फारबिसगंज, अररिया

डाटा संरक्षण दिवस

डाटा की गोपनीयता और संरक्षण के प्रति जागरूकता को बढ़ाने के लिए प्रतिवर्ष 28 जनवरी को डाटा संरक्षण दिवस मनाया जाता है। यह वर्तमान में अमेरिका, इजरायल, कनाडा सहित 47 यूरोपीय देशों में मनाया जाता है। इसे 14 अप्रैल, 2016 को यूरोपीय संसद और यूरोपीय संघ की परिषद् ने अपनाया था तथा वर्ष 2018 में ब्रिटेन ने शाही अनुमति प्रदान कर दी।

इतिहास के पन्नों में 28 जनवरी का दिन

1933– कैंब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र चौधरी रहमत अली ने पहली बार भारत के मुस्लिम बहुल राज्यों को 'पाकिस्तान' नाम दिया।

1950– जस्टिस हीरालाल जी कानिया उच्चतम न्यायालय के प्रथम न्यायाधीश बने

29 जनवरी

महाराणा प्रताप का निधन

चार वर्ष पहले चित्तौड़ राजस्थान में उदय सिंह नामक राजा राज्य करते थे। उनके स्वाभिमानी पुत्र का नाम महाराणा प्रताप था। जिनकी नस–नस में वीरता त्याग और स्वतंत्रता की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। सिसोदिया वंश के भूषण महाराणा प्रताप ने अपनी जन्मभूमि को पराधीनता के बंधन से मुक्त करने के लिए जी तोड़ चेष्टा की। राणा प्रताप, राणा सांगा के पोते और महाराज उदयसिंह के पुत्र थे। वह बचपन से ही निडर और साहसी थे।

पिता उदय सिंह की मृत्यु के पश्चात जब राणा प्रताप ने राज्य का भार ग्रहण किया तब उन्होंने या प्रतिज्ञा की कि जब तक चित्तौड़ राज्य को मुगल शासक अकबर से ना ले लूँ तब तक महलों में निवास नहीं करूँगा, सोने–चाँदी के बर्तन में नहीं खाऊँगा और पलंग पर नहीं सोऊँगा। कई सालों तक संघर्ष के बाद भी 1576ई. में हल्दीघाटी के युद्ध में मुगल सम्राट अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। अनेक वर्षों तक महाराणा प्रताप जंगलों में घूमते रहे। वे जंगलों में जंगली जामुन खाते थे, शिकार करते थे और मछलियां पकड़ते थे। कभी भूखे रहे, घास की रोटियां खायी, अपने बच्चे को भूख से तड़पते देखा, लेकिन अकबर के सामने सिर न झुकाया। भयंकर संकट में भी राणा प्रताप कर्तव्य मार्ग से तनिक भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने अकबर के विशाल सेना की परवाह नहीं की और उसकी अधीनता स्वीकार नहीं किया। इसलिए अकबर भी उनके साहस और युद्ध की कुशलता से प्रभावित था। महाराणा प्रताप जब जंगल में कष्टमय जीवन व्यतीत कर रहे थे तो उनके पुराने मंत्री भामाशाह ने उनका साथ दिया। प्रताप ने शीघ्र एक सेना तैयार कर युद्ध छेड़ दिया और अपना राज्य फिर से जीत लिया। बारह वर्षों की लंबी अवधि के बाद सन् 1585 में मेवाड़ को पुनः मुक्त कराने में सफल हुए।

परंतु वे अचानक बीमार पड़ गए। मृत्यु के समय महाराणा प्रताप ने अपने मन में सोचा कि यदि सिसोदिया वंश के लोग (मेरी मृत्यु के पश्चात्) इस देश की रक्षा करेंगे, तभी मेरी आत्मा को शांति होगी। उन्होंने अपने सरदारों से मेवाड़ जितने की प्रतिज्ञा करायी। 29 जनवरी, 1597 ई. को चावंड में महाराणा प्रताप की मृत्यु हो गई।

क्या आप जानते हैं? महाराणा प्रताप पुरस्कार राजस्थान का सर्वोच्च खेल पुरस्कार है। इस पुरस्कार की शुरुआत 1982 मे हुई। यह पुरस्कार राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद द्वारा दिया जाता है।

भारत का पहला समाचार पत्र

भारत का पहला समाचार पत्र अंग्रेजी में 'हिकीज बंगाल गज़ट' के नाम से 29 जनवरी, 1780 ई. को प्रकाशित हुआ था। 'हिक्की गज़ट', 'बंगाल गज़ट' या 'कलकत्ता जनरल एडवाइजर' का कोलकाता से प्रकाशन हुआ था। इस पत्र के सम्पादक 'जेम्स ऑगस्टस हिक्की' थे।

इस समाचार पत्र ने उस वक्त अंग्रेज साम्राज्य को आईना दिखाने के काम किया था। उसने हुकूमत को प्रेस की ताकत का एहसास करवाया था। उस वक्त इस अखबार ने अपनी खबरों से अंग्रेज हुकूमत के शीर्ष पर मौजूद कई ताकतवर लोगों को हिला कर रख दिया था। अपनी खबरों के दम पर बंगाल गजट ने कई लोगों के भ्रष्टाचार, घूसकांड और मानवाधिकार उल्लंघनों को उजागर किया था।

✍ मधुप्रिया,
मध्य विद्यालय, रामपुर बीएमसी, फारबिसगंज, अररिया

बीटिंग द रिट्रीट

बीटिंग द रिट्रीट भारत के गणतंत्र दिवस समारोह की समाप्ति का सूचक है। इस कार्यक्रम में थल सेना, वायु सेना और नौ सेना के बैंड पारंपरिक धुन के साथ मार्च करते हैं। यह सेना के बैरक वापसी का संकेत है।

'बीटिंग द रिट्रीट' की व्युत्पत्ति अंग्रेजी भाषा के फ्रेजल वर्ब 'Beat a retreat' से हुई है जिसका अर्थ है 'To leave a place quickly' अर्थात किसी खास स्थान से पीछे जाना या उसे छोड़ना। 17वीं शताब्दी में सर्वप्रथम इस वाक्यांश का इस्तेमाल इंग्लैंड में राजमहल के आस–पास गश्त कर रहे सैन्य अधिकारियों को वापस बुलाने के लिए किया जाता था।

'बीटिंग द रिट्रीट' सन 1950 से प्रत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) के तीसरे दिन यानी 29 जनवरी को विजय चौक पर आयोजन की जाने वाली एक सैन्य समारोह है। यह सम्पूर्ण समारोह हमारे महामहिम राष्ट्रपति के अगुवाई में सम्पन्न कराया जाता है। शाम के लगभग 5 बजे ध्वजारोहण के उपरांत ये तीनो सैन्य बैंड राष्ट्रपति के निकट आते हैं एवम रिट्रीट का बिगुल फूँकते हुए अपने–अपने बैंड को पीछे ले जाने की अनुमति मांगते हैं और सबसे अंत में 'सारे जहाँ से अच्छा' के मनमोहक धुन के साथ इस भव्य आयोजन की समाप्ति की अधिकारिक घोषणा कर दी जाती है।

1950 से चली आ रही इस वार्षिक आयोजन को अब तक दो बार रदद् भी किया जा चुका है। एक बार देश के आठवें राष्ट्रपति श्री वेंकटरमन की 27 जनवरी, 2009 को देहावसान हो जाने के कारण तथा दूसरी बार 26 जनवरी, 2001 को गुजरात में आये अत्यंत विनाशकारी भूकंप के कारण 'बीटिंग द रिट्रीट' को रद्द किया जा चुका है।

✍मो. सरफराज आलम
प्राथमिक विद्यालय नौआखाप, रफीगंज, औरंगाबाद(बिहार)
मोबाइल न.– 9504673068

चंदेरी का युद्ध

खानवा के युद्ध (1527ई.) के पश्चात् राजपूतों की शक्ति पूरी तरह समाप्त नहीं हुई थी। बाबर राजपूतों की शक्तियों को पूर्ण रूप से समाप्त करना चाहता था ताकि वे उसके विरुद्ध दुबारा न खड़े हो पायें। खानवा के युद्ध में मालवा के राजा मेदिनी राय ने राणा सांगा का साथ दिया था। बाबर जानता था की भारत मे स्थायी शासन के लिए राजपूतों का सम्पूर्ण दमन अति आवश्यक है। बाबर ने मेदिनी राय से अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए कहा जिसे मेदिनी राय ने अस्वीकार कर दिया। इसलिए शेष राजपूतों को खत्म करने के लिए बाबर ने चंदेरी का युद्ध लड़ा।

चंदेरी चारों तरफ से पहाड़ियों से घिरा था। अतः मालवा के राजा मेदिनी राय आश्वस्त थे की बाबर को चंदेरी के किले पर आक्रमण करना आसान नहीं होगा। लेकिन बाबर ने रात की अँधेरे का फायदा उठाते हुए पहाड़ियों को काटकर किले के समीप पहुँच गया। बाबर ने चंदेरी के युद्ध को 'जिहाद' घोषित किया। इस युद्ध में राजपूतों की सेना का नेतृत्व मेदिनी राय ने किया था। 29 जनवरी, 1528 ई. को चंदेरी का युद्ध लड़ा गया।

इस युद्ध मे मेदिनी राय की पराजय हो गयी। इस युद्ध के पश्चात् कोई राजपूत शासक बाबर से युद्ध करने को नहीं बचा। मेदिनी राय ने अपनी हार के साथ बाबर की अधीनता स्वीकार कर ली। मेदिनी राय ने बाबर से सन्धि कर ली। समझौता के तौर पर मेदिनी राय ने अपनी दो बेटियों का विवाह बाबर के दो बेटो कामरान व हुमायूँ से करा दिया।

इस युद्ध को जीतने के बाद बाबर के हाथ कुछ नहीं लगा, जिसके कारण बाबर ने इस किले का विध्वंश करा दिया। युद्धोपरांत राजपूतों को बहुत बर्बरता के साथ मौत के घाट उतार दिया गया। बर्बरतापूर्वक राजपूतों के सिरों को काटकर उसकी मीनार बनवाई। चंदेरी की राजपूत महिलाओं ने सामूहिक जौहर कर लिया था। यह महिलाओं द्वारा किया बहुत बड़ा जौहर था।

30 जनवरी

जन्मदिन विशेष (30 जनवरी) – जयशंकर प्रसाद

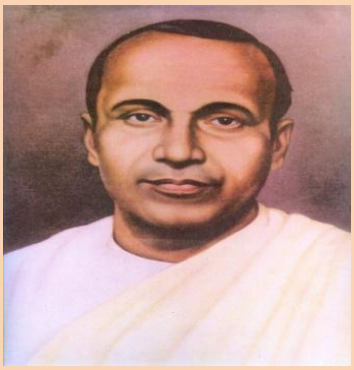

जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी, 1889 ई. को वाराणसी में हुआ था। उनके पिता बाबू देवी प्रसाद तंबाकू और सुरती के प्रतिष्ठित व्यापारी थे और 'सुँघनी साहू' के नाम से प्रसिद्ध थे। दुर्भाग्यवश प्रसाद जी के माता–पिता का उनकी किशोरावस्था में ही देहांत हो गया। फलतः उन्हें पन्द्रह वर्ष की आयु में ही पारिवारिक दायित्वों की ओर ध्यान देना पड़ा। क्वींस कॉलेज, वाराणसी में सातवीं तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने घर पर हिंदी, संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी का अच्छा अभ्यास किया। वह विद्या व्यसनी थे तथा उन्होंने वेद, पुराण, इतिहास, पुरातत्व, साहित्य, दर्शनशास्त्र आदि का गहन अध्ययन किया।

प्रसाद जी की रचनाओं में 'कामायनी' प्रमुख है। इसकी गणना विश्व के महत्वपूर्ण काव्यकृतियों में की जाती है। इसमें इतिहास, कल्पना, प्रकृति, सौंदर्य, आध्यात्मिकता, चिंतन आदि का सफलतापूर्वक समावेश करते हुए प्रसिद्ध ऐतिहासिक–पौराणिक कथा और तत्कालीन भारतीय संस्कृति के संदर्भ में चित्रित किया गया है। उनके अन्य कृतियों में 'आँसू', 'कानन–कुसुम', 'झरना और लहर' उल्लेखनीय है। 'चंद्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी', 'राज्यश्री' और 'अजातशत्रु' उनके मुख्य नाटक हैं। उन्होंने 'कंकाल', 'तितली' शीर्षक सामाजिक उपन्यास और 'इरावती' शीर्षक अधूरे ऐतिहासिक उपन्यास की रचना भी की है।

बच्चों को क्या बतायें? हिन्दी के शिक्षक बच्चों को जयशंकर प्रसाद के बारे में बतायें। 'अरूण यह मधुमय देश हमारा', 'बीती विभावरी जाग री', 'भारत महिमा', अथवा 'हिमाद्री तुंग श्रृंग से', कविता का सस्वर वाचन कर सकते हैं।

जन्मदिन विशेष (30 जनवरी) – चिदम्बरम सुब्रह्मण्यम

चिदम्बरम सुब्रह्मण्यम भारत में "हरित क्रांति के पिता" कहे जाते हैं। उनका जन्म 30 जनवरी, 1910 को कोयम्बटूर ज़िले के 'पोलाची' नामक स्थान पर हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद मद्रास में उनकी उच्च शिक्षा हुई। उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज, मद्रास से बी.एस.सी की डिग्री प्राप्त की और बाद में मद्रास विश्वविद्यालय से 1932 में क़ानून कि डिग्री प्राप्त की, परंतु 1936 तक वे वकालत प्रारम्भ नहीं कर सके। जब उन्होंने वकालत प्रारंभ की, तब तक उनका सम्बन्ध स्वतंत्रता आंदोलन से हो चुका था।

जब भारत को आज़ादी प्राप्त हुई, उस समय देश में खाद्यान्न उत्पादन की स्थिति बड़ी सोचनीय थी। कई स्थानों पर अकाल पड़े। बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा में अनेक लोग भुखमरी के शिकार हुए और काल का ग्रास बन गये। जब सी. सुब्रह्मण्यम को केन्द्र में कृषि मंत्री बनाया गया, तब उन्होंने देश को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने के लिए अनेक योजनाएँ क्रियान्वित कीं। उनकी बेहतर कृषि नीतियों के कारण ही 1972 में देश में रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन हुआ। सी. सुब्रह्मण्यम की नीतियों और कुशल प्रयासों से ही आज देश खाद्यान्न उत्पादन में पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर हो चुका है।

शहीद दिवस

30 जनवरी, 1948 ई. शुक्रवार का दिन था। शाम पाँच बजे महात्मा गाँधी अपनी दो पोतियों कुमारी इंद्र बहन गाँधी तथा आभा बहन गाँधी के साथ प्रार्थना सभा के लिए बिरला मंदिर जा रहे थे। उसी वक्त नाथुराम गोडसे ने महात्मा गाँधी की हत्या कर दी। उस समय वह 78 वर्ष के थे। इस तिथि को शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है। बापू की स्मारक 'राजघाट', दिल्ली में इस अवसर पर विशेष श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किये जाते है।

क्या करें? आज आप भी विद्यालय में बापू की पुण्य तिथि पर मौन रखकर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर सकते है।

बच्चों को क्या बतायें? इस अवसर पर इतिहास के शिक्षक बच्चों को गांधी जी की प्रमुख सिद्धांतों, संदेशों और अंतिम दिनों की कहानियां सुनायें। संभव हो तो बेन किंग्स्ले की **फिल्म 'गांधी' बच्चों को दिखलायें।** टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा प्रकाशित **ज्ञान दृष्टि का 'शहीद दिवस' विशेषांक** पढ़ें।

जन्मदिन विशेष (30 जनवरी) – अमृता शेरगिल

अमृता शेरगिल मजीठा के उमरांव सिंह शेरगिल की पुत्री थीं। उनका जन्म हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में 30 जनवरी, 1913 को हुआ था। उनकी माता एक हंगिरियन महिला थीं। उमरांव सिंह जब फ्रांस गए तो उन्होंने अपनी पुत्री की शिक्षा के लिए पेरिस में प्रबंध किया। जब वे पेरिस के एक प्रसिद्ध आर्ट स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रही थीं तो उनके मन में अपने कुछ सम्बन्धियों के कारण भारत आने की इच्छा जागृत हुई। 1921 में उन्होंने इटली के फ़्लोरेन्स नगर में चित्रकला की शिक्षा ली, वहाँ उन्होंने एक नग्न महिला का चित्रण किया था। इसके कारण उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। वे अब तक अनुभव कर चुकी थीं कि उनके जीवन का वास्तविक ध्येय चित्रकार बनना ही है।

अमृता शेरगिल ने विक्टर इगान नामक युवक से विवाह किय था जो और पेशे से डॉक्टर था, परन्तु उनका वैवाहिक जीवन बहुत ही अल्पकालीन रहा। केवल 28 वर्ष की आयु में एक रहस्यपूर्ण रोग के कारण अमृता शेरगिल 'कोमा' में चली गईं और 5 दिसम्बर, 1941 ई. की मध्य रात्रि को लाहौर, पाकिस्तान में उनकी मृत्यु हो गई। 28 वर्ष में ही उन्होंने इतना विविधतापूर्ण कार्य कर दिया था, जिसके कारण उन्हें 20वीं सदी के महत्त्वपूर्ण कलाकारों में गिना जाता है। इनकी चित्रकारी को धरोहर मानकर दिल्ली की 'नेशनल गैलेरी' में सहेजा गया है।

अमृता शेरगिल की पेंटिंग

उन्होंने भारतीय ग्रामीण महिलाओं को चित्रित करने का और भारतीय नारी कि वास्तविक स्थिति को चित्रित करने का जो प्रयत्न किया, वह अत्यन्त सराहनीय है। उनके चित्रों की विविधता उस समय और भी बढ़ गई जब उन्होंने दक्षिण भारत का दौरा किया। 'दक्षिण भारतीय ब्रह्मचारी' और 'दक्षिण भारतीय ग्रामीण', 'बाज़ार की ओर जाते हुए', 'केले बेचने वाला' आदि ऐसे अनेक चित्र इस परिवर्तन को दिखाते हैं। 'एक युवक सेब लिये हुए' और 'आलू छीलने वाला' आदि उनके प्रमुख चित्र हैं।

कुष्ठ निवारण दिवस

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत 30 जनवरी को कुष्ठ रोग निवारण दिवस मनाया जाता है। राष्ट्रपति महात्मा गांधी द्वारा कुष्ठ रोगियों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए किए गए प्रयासों की वजह से प्रति वर्ष 30 जनवरी को उनकी पुण्य तिथि पर कुष्ठ रोग निवारण दिवस मनाया जाता है। कुष्ठ रोग का पूर्णतः उपचार संभव संभव नहीं है। वहीं कुष्ठ रोग के इलाज में देरी से विकलांगता हो सकती है। कुष्ठ रोगियों के स्पर्श से कुष्ठ नहीं होता है।

31 जनवरी

श्री कृष्ण सिंह स्मृति दिवस – 31 जनवरी

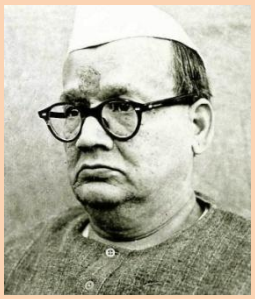

श्री कृष्ण सिंह बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री, प्रसिद्ध अधिवक्ता तथा स्वतंत्रता सेनानी थे। 'बिहार केसरी' श्री कृष्ण सिंह को 'आधुनिक बिहार का निर्माता' भी कहा जाता है। कृष्ण सिंह 2 जनवरी, 1946 से अपनी मृत्यु (31 जनवरी, 1961ई.) तक बिहार के मुख्यमंत्री रहे। बिहार, भारत का पहला राज्य था, जहाँ सबसे पहले उनके नेतृत्व में जमींदारी प्रथा का उन्मूलन उनके शासनकाल में हुआ।

कृष्ण सिंह का जन्म 21 अक्टूबर, 1887, मुंगेर जिला के बरबीघा थाना अंतर्गत माउर गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम हरिहर सिंह था। इन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से एम.ए. और कानून की डिग्री ली। कुछ समय तक बी.एन. कॉलेज पटना में इतिहास विभाग में व्याख्याता के रूप में कार्य करने के पश्चात मुंगेर में वकालत करने लगे। किंतु गाँधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन आरंभ करने पर इन्होंने वकालत छोड़ दी और शेष जीवन सार्वजानिक कार्यों में ही लगाया। साइमन कमीशन के बहिष्कार और नमक सत्याग्रह में भाग लेने पर ये गिरफ्तार भी किए गए।

स्वतंत्रता सेनानी रहे श्रीकृष्ण सिंह बेहद ईमानदार राजनेता माने जाते रहे हैं। इसका अंदांजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पन्द्रह साल मुख्यमंत्री रहने के बाबजूद वे मात्र चौबीस हजार पाँच सौ रुपए जमा कर पाए। 1961 में बिहार के मुख्य मंत्री श्रीकृष्ण सिंह के निधन के 12 वें दिन राज्यपाल की उपस्थिति में उनकी पर्सनल तिजोरी खोली गयी थी। उस वक्त उनकी तिजोरी में कुल चौबीस हजार पाँच सौ रुपए मिले थे। ये रकम चार लिफाफों में रखे मिले थे। एक लिफाफे में रखे बीस हजार रुपए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के लिए थे। दूसरे लिफाफे में तीन हजार रुपए मुनीम जी की बेटी की शादी के लिए थे। तीसरे लिफाफे में एक हजार रुपए थे जो महेश बाबू (महेश प्रसाद सिन्हा) की छोटी कन्या के लिए थे। चौथे लिफाफे में 500 रुपए श्रीकृष्ण सिंह की सेवा करने वाले खास नौकर के लिए थे।

श्रीकृष्ण सिंह किसी भी विधानसभा चुनाव में प्रचार नहीं करते थे। वे कहते कि अगर वे सच्चे और समाजसेवक हैं तो जनता खुद–ब–खुद उन्हें वोट देगी। क्योंकि जनप्रतिनिधि को पाँच साल तक काम करने का मौका मिलता है ऐसे में अगर वे सही से अपनी ड्यूटी का निर्वाह करेंगे तो उन्हें प्रचार करने की क्या जरूरत है।

✍रंजेश कुमार
प्राथमिक विद्यालय, छुरछुरिया,
प्रखंड– फारबिसगंज, जिला– अररिया
मोबाइल न.– 8789609259

नौरू का स्वतंत्रता दिवस

नौरू ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप में स्थित एक एक छोटा अंडाकार प्रवाल द्वीप है जिसका क्षेत्रफल मात्र 21.3 वर्ग किलोमीटर है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी ने नौरू पर कब्जा कर लिया। यहाँ के नागरिकों को जर्मनी द्वारा बंधुआ मजदूर बना लिया गया। सितम्बर, 1945 में ऑस्ट्रेलिया ने इस द्वीप पर पुनः कब्जा कर लिया। 31 जनवरी, 1946 ई. को सभी मजदूर रिहा किये गये। अक्टूबर, 1967 में नौरू की स्वतंत्रता की घोषणा की गई। 31 जनवरी, 1968 को 22वें रिहाई दिवस की स्मृति में नौरू एक स्वाधीन गणतंत्र बना। इसकी राजधानी यारेन है। यह मध्य प्रशांत महासागर में स्थित है। यहाँ फास्फेट के प्रचुर भंडार है। फास्फेट का यहाँ से बड़े पैमाने पर निर्यात होता है। नारियल तथा सब्जियों की खेती होती है।

अंतर्राष्ट्रीय जेब्रा दिवस – 31 जनवरी

प्रतिवर्ष 31 जनवरी को अंतर्राष्ट्रीय जेब्रा दिवस मनाते हैं। जिससे जंगली जानवरों की सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरूक बना सकें। सड़क को क्रॉस करने के लिए जेब्रा क्रॉसिंग (Zebra Crossing) का आइडिया इसी जीव से लिया गया है। इसीलिए इस जीव के साथ–साथ अन्य जीवों की सुरक्षा के लिए भी अंतर्राष्ट्रीय जेब्रा दिवस (International Zebra Day) का आयोजन किया जाता है।

हालाँकि जेब्रा विलुप्त होने की श्रेणी में नहीं है, लेकिन युनाइटेड नेशंस ने इसे वर्ष 2016 में 'संकट निकट (Near Threatened या NT) की श्रेणी में रखा है।

जेब्रा, अफ्रीका का एक प्रमुख जीव है। काली और सफ़ेद रंग की पट्टियाँ इसे बहुत ही आकर्षक बनाती है। एक आश्चर्यजनक बात यह है कि, सभी जेब्रा के शरीर की काली और सफ़ेद पट्टियाँ आपस में नहीं मिलती है। जिस प्रकार हमारे हाथों के निशान किसी दूसरों से नहीं मिलते हैं, ठीक उसी प्रकार एक जेब्रा की पट्टियाँ, दूसरे जेब्रा से अलग होती हैं।

जेब्रा का वैज्ञानिक नाम 'हिप्पोटिगरिस' (*Hippotigris*) है। जेब्रा मुख्य रूप से घोड़े के कुल से सम्बन्ध रखता है, जिस कारण यह घोड़े और गधे से मिलता जुलता है परन्तु उन दोनों से भिन्न है। घोड़ों और गधों को पालतू बनाया जा सकता है जबकि जेब्रा को आज तक पालतू नहीं बनाया जा सका है। इसका प्रमुख कारण यह है कि यह कठिन हालातों में बेकाबू हो जाता है।

गुरू गोविंद सिंह जयंती– 9 जनवरी 2022

गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म विक्रम संवत् 1723 पौष शुक्ल सप्तमी (तद्नुसार 26 दिसंबर, 1666 ईस्वी) को पटना में हुआ था। उनके पिता का नाम गुरु तेग बहादुर और माता का नाम गुजरी था। इनके बचपन का नाम गोविंद राय था। 'खालसा पंथ' में दीक्षित होने के बाद उन्होंने अपना नाम गोविंद सिंह रखा। गुरु जी की माता इन्हें 'श्याम' नाम से पुकारती थी, क्योंकि छठे गुरु का नाम भी हरगोविंद था और हिंदू स्त्री होने के नाते अपने बड़े ससुर का नाम वह नहीं ले सकती थी।

गुरु गोविंद सिंह सिखों के दसवें गुरु थे। उन्होंने अनुभव किया कि उनके अनुयायियों में मतभेद है तथा उनमें मुगलों से युद्ध करने का ना तो सामर्थ्य है और ना ही साहस। उन्होंने अपने अनुयायियों को युद्ध करने की शिक्षा देना आरंभ किया और पठानों को सेना में भर्ती किया। उन्होंने आनंदपुर को अपना मुख्यालय बनाया। 1699 की बैसाखी के दिन गुरु गोविंद सिंह ने 'खालसा' की स्थापना की। उन्होंने आनंदपुर में सिखों का एक विशाल सम्मेलन आयोजित किया और पाँच आदमियों का चुनाव किया। इन पाँच आदमियों को 'पंच प्यारे' के नाम से पुकारा जाने लगा। गुरु के अनुयायी संत से सैनिक बन गए। सिखों को एक विशेष प्रकार की पोशाक पहननी पड़ती थी। अपने साथ सदैव 5 वस्तुएं– केश, कृपाण, कच्छा, कंघा और कड़ा रखने पड़ते थे।

गुरु गोविंद सिंह जी की 16 प्रमाणिक रचनाएं हैं– 1. जापु, 2. अकाल स्तुति, 3. विचित्र नाटक, 4. चंडी चरित्र उक्ति विलास, 5. चंडी चरित्र, 6. वार श्री भगवती जि दी, 7. चौबीस अवतार, 8. मीर मेहंदी, 9. ब्रह्म अवतार, 10. रुद्रावतार, 11. शस्त्र नाम माला, 12. ज्ञान प्रबोध, 13. पाख्यान चरित्र, 14. हजार दे शबद, 15. सवैये, 16. जफरनामा।

1708 ई. में एक पठान ने छुरा घोंपकर उनकी हत्या कर दी। गुरु गोविंद सिंह का औरंगजेब के नाम लिखा गया अंतिम पत्र 'जफ़रनामा' के नाम से प्रसिद्ध है।

सुरक्षित शनिवार कार्यक्रम

पहला शनिवार :

शीतलहर से बचाव

- राज्य में ठंढ के मौसम में सामान्यतः दिसम्बर माह के अंतिम सप्ताह से जनवरी माह के तीसरे सप्ताह तक शीतलहर का प्रकोप रहता है।
- सामान्यतः यदि तापमान 7 डिग्री से0 से कम हो जाए तो इस शीतलहर की स्थिति माना जाता है।
- शीत लहर से बच्चे और वृद्ध के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

शीतलहर या ठंढ लगने पर व्यक्ति में निम्न लक्षण उत्पन्न होते हैं–

- शरीर का ठंढा होना एवं अंगों का सुन्न पड़ना।
- अत्याधिक कंपकपी या ठिठुरन होना।
- बार–बार जी मिचलाना या उल्टी होना।
- कभी–कभी अर्द्धबेहोशी की स्थिति अथवा बेहोश होना।

शीतलहर या ठंढ से बचने के उपाय

- अनावश्यक घर से बाहर न जायें और यथा सम्भव घर के अंदर सुरक्षित रहें।
- यदि घर से निकलना जरूरी हो तो समुचित ऊनी एवं गर्म कपड़े पहनकर ही निकलें। बाहर निकलते समय अपने सिर, चेहरे, हाथ एवं पैर को भी उपयुक्त गर्म कपड़े से ढँक लें।
- समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन के माध्यम से मौसम की जानकारी लेते रहें।
- शरीर में उष्मा का प्रवाह बनाये रखने के लिए पौष्टिक आहार एवं गर्मपेय पदार्थ का सेवन करें।
- बन्द कमरों में जलती हुई लालटेन, दीया, कोयले की अंगीठी का प्रयोग करते समय धुएँ के निकास का उचित प्रबंध करें। प्रयोग के बाद इन्हें अच्छी तरह से बुझा दें।
- हीटर, ब्लोअर आदि का प्रयोग करने के बाद स्विच ऑफ करना न भूलें अन्यथा यह जानलेवा हो सकता है।
- राज्य सरकार शीतलहर के समय रात्रि में सार्वजनिक स्थानों पर अलाव की व्यवस्था करती है, जिसका लाभ उठा कर शीतलहर से बचा जा सकता है।
- उच्च रक्तचाप एवं मधुमेह के मरीज तथा हृदय के रोगी चिकित्सक की सलाह जरूर लेते रहें तथा सामान्यता धूप उगने पर ही घर से बाहर निकलें।
- विशेष परिस्थिति में नजदीकी सरकारी अस्पताल से अविलम्ब चिकित्सा परामर्श लें।

विद्यालय के लिए–

- विद्यालय में पठन–पाठन का संचालन सुबह के सत्र में न किया जाय।
- शीतलहर के दिनों में विद्यालयों को बंद कर दिया जाए।
- विद्यालय के किसी बच्चे की तबीयत अचानक खराब होने पर तत्काल अभिभावक को सूचना किया जाये।
- विद्यालय यह सुनिश्चित करे की छात्र मफलर, स्वेटर एवं गर्म कपड़े पहनकर आयें।
- लंच के समय बच्चे को बाहर बहुत समय तक खेलने की अनुमति न दें।
- पशुओं को गर्म रखने की व्यवस्था करें।
- पशुओं को ठंढ लगने पर पशु अस्पताल/पशु चिकित्सक की सलाह लें।
- मौसम विभाग द्वारा दी जाने वाली चेतावनी/सूचना पर ध्यान दें।
- जिला प्रशासन/राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली आदेश का पालन करें।

दूसरा शनिवार :

रेल/सड़क सुरक्षा के उपाय

1. वाहन हमेशा सड़क के बायीं ओर निर्धारित गति सीमा में चलायें।
2. दोपहिया वाहन चालक और उनके पीछे बैठने वाली सवारी हमेशा हेलमेट पहन कर चलें।
3. कार या अन्य चार पहिया वाहन या उससे बड़े वाहन चालक हमेशा सीट बेल्ट बांध कर गाड़ी चलायें। कार एवं अन्य चार पहिया वाहन की अगली सीट पर बैठे यात्री भी सीट बेल्ट बांध लिया करें।
4. नशा न करें तथा नशे के हालत में गाड़ी कदापि न चलायें। नशे में गाड़ी चलाना अपनी मृत्यु को निमंत्रण देने जैसा है।
5. ट्रैफिक नियमों और संकेतों का पालन करें।
6. गाड़ी दायें या बायें मुड़ते समय, गाड़ी रोकते समय और गाड़ी धीमी करते समय संकेत (Indicator) अवश्य दें।
7. अनावश्यक हॉर्न न बजायें।
8. शांत दिमाग से एवं धैर्यपूर्वक सामान्य गति से गाड़ी चलायें।
9. दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की मदद करें।
10. सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति का पहले एक घंटे में किया गया उपचार जिन्दगी बचाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, उसे तुरंत निकटवर्ती अस्पताल में ले जाएं।
11. एम्बुलेंस सेवा के लिए 108 या 102 पर संपर्क करें।
12. याद रखें – सड़क पर पहला अधिकार पैदल यात्रियों का है।
13. बच्चों, वृद्धों एवं निःशक्तों को सड़क पार करने में मदद करें। यदि कोई बच्चा, वृद्ध अथवा दिव्यांग/निःशक्त व्यक्ति सड़क पार कर रहा हो तो वाहन की गति धीमी अथवा रोक कर उन्हें सड़क पार करने दें।
14. वाहन सवार एवं पैदल यात्री एम्बुलेंस एवं फायर ब्रिग्रेड की गाड़ियों के जाने के लिए रास्ता छोड़ दें।
15. दरवाजा खोलते समय सावधानी बरतें।
16. गाड़ी चलाते समय सेल्फी न लें। गाड़ी चलाते समय मोबाइल पर बात न करें।
17. गंतव्य स्थान की दूरी एवं ट्रैफिक के हिसाब से समय लेकर चलें।

विद्यालय वाहन

1. विद्यालय में चलाये जा रहे वाहन का रजिस्ट्रेशन डी.टी.ओ. ऑफीस में जरूर हो।
2. स्कूल बसों के स्टॉप निर्धारित किये जायें और इसका सख्ती से पालन करें।
3. बस रूकने पर पार्किंग लाइट जलती रखें।
4. चालक एवं सहायक अपने ड्रेस में हों तथा उनके लिये फ्लोरोसेन्ट कलर के ड्रेस निर्धारित किये जाएं।
5. स्कूल बसों पर '**सावधान बच्चे हैं**' का स्लोगन फलोरोसेण्ट कलर में लिखा जाए।
6. विद्यालय वाहन का ड्राइवर प्रशिक्षित तथा न्युनतम पाँच वर्षों के अनुभव वाला हो।
7. विद्यालय वाहन के आगे–पीछे विद्यालय का नाम, पता व संपर्क न0 लिखा हो।
8. विद्यालय वाहन में सीट से अधिक बच्चों को न बैठाया जाए।
9. स्कूल बसों का रंग गहरा पीला होना चाहिये।
10. विद्यालय के गेट के पास स्पीड ब्रेकर अवश्य बनवायें।

सडक सुरक्षा नियमों को अपनाएं–

बच्चों को सिखायें की जब वे सड़क पार करें तो–

1. सड़क पार करते समय हमेशा बायें, दायें और फिर बायें देखकर पार करें।
2. सड़क के बांये चलें एवं सड़क चिन्हों का अनुसरण करें।
3. सड़क पर चलते समय या सड़क पार करते समय कान में इयरफोन लगा कर न चलें।
4. ट्रैफिक नियमों और संकेतों का पालन करें।
5. जेब्रा लाइन से ही सड़क पार करें, जहाँ Road Divider हो वहां से सड़क पार न करें।
6. यदि कोई तेज वाहन आ रहा हो, तो उस समय सड़क पार न करें।

बच्चों को सिखायें की जब वे स्कूल बस में चढ़ें तो–

1. जल्दीबाजी न करें, बस के रूकने का इंतजार करें।
2. एक कतार में रहकर बस में प्रवेश करें।
3. देख लें कि आपका बैग या कपड़े आदि कहीं भी बस में न फसें।
4. रेलिंग पकड़कर बस में प्रवेश करें।
5. सीट पर सुरक्षित ढ़ंग से बैठें और चेहरा सामने रखें।
6. अपने शरीर का कोई भी अंग बस से बाहर न निकालें।
7. पायदान पर यात्रा न करें।
8. बस का गलियारा खाली रखें।
9. शोरगुल न करें और ड्राइवर का ध्यान न बटायें।
10. ड्राइवर और कंडक्टर के निर्देशों का पालन करें।

बच्चों को सिखायें की...

1. सड़क पर न खेलें।
2. बीच सड़क पर न चलें।
3. सड़क पर अनावश्यक रस्सी, ब्रेकर न बनायें और न ही ईंट–पत्थर आदि रखें।
4. दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की मदद करें। 102 या 108 पर कॉल कर एम्बुलेंस को बुलायें।
5. सड़क के संकेतों का पालन करें।

रेल में यात्रा करते समय ध्यान दें...

1. रेल विभाग द्वारा स्टेशन पर या रेलगाड़ी में दी जाने वाली सूचनाओं का पालन करें।
2. रेल फाटक पार करते समय रेलवे लाइन के दोनों ओर देखें।
3. उचित रेल टिकट लेकर ही यात्रा करें।
4. ट्रेन में यात्रा करते समय बच्चों का विशेष ध्यान रखें।
5. अपने निर्धारित स्थान पर ही बैठें।
6. ट्रेन के रूकने पर ही चढ़े अथवा उतरें।
7. यात्रा टिकट सदैव रेलवे काउंटर या अधिकृत रेल ट्रेवल एजेंट से ही खरीदें।
8. गाड़ी में बैठने से पहले यह सुनिश्चित कर लें कि कोई लावारिस सामान/पदार्थ गाड़ी में सीट के नीचे या रैक पर रखा तो नहीं रह गया है।
9. ऐसे संदिग्ध व्यक्ति पर पैनी निगाह रखें जो अपना सामान छोड़ कर चले जाते हैं।
10. किसी भी लावारिस या संदिग्ध वस्तु के बारे में रेलवे पुलिस, टी.टी.ई, गार्ड, ड्राईवर अथवा रेल कर्मचारी को तुरंत सूचना दें।
11. किसी प्रकार की दुर्घटना होने पर तुरंत निकटतम रेलवे स्टेशन या जिला प्रशासन को सूचना दें।
12. ट्रेन के दरवाजों से ना लटकें।
13. ट्रेन में किसी प्रकार का ज्वलनशील या विस्फोटक पदार्थ ले कर यात्रा न करें।
14. अनजान अथवा संदिग्ध वस्तुओं को न छूएं।

पतंगबाजी करते समय ध्यान दें:

1. पतंगबाजी खुले मैदानों में ही करें।
2. पतंगबाजी कभी भी छतों, सड़कों या पहाड़ों पर खड़े होकर न करें।
3. पतंगबाजी करने के पहले यह सुनिश्चित कर लें कि आस–पास कोई बिजली का खंभा, हाईवोल्टेज तार इत्यादि न हो।
4. बादलों वाले दिनों में या ऊँचे पर्वतीय स्थानों पर पतंगबाजी न करें। ये बादलों के आवेश को आकर्षित कर सकते हैं।
5. पतंग को लुटने के चक्कर में बेहवास न दौड़ें। इससे दुर्घटना हो सकती है।

तीसरा शनिवार :

भूकंप के दौरान क्या करें?

बिहार में भूकम्प का जोखिम

बिहार औसत से लेकर उच्च भूकंपीय खतरा वाले जोन III, IV और V में पड़ता है। अररिया, दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी और सुपौल जैसे जिले जोन V में आते हैं, जहाँ जान–माल की क्षति होने की ज्यादा संभावना होती है। दक्षिण–पश्चिम जिले औरंगाबाद, भोजपुर, बक्सर, गया, जहानाबाद, कैमूर, नवादा और रोहतास जोन III में हैं। राजधानी पटना समेत बिहार के बाकी सारे जिले भूकम्पीय जोन IV में आते हैं।

भूकंप के दौरान

1. भूकंप के दौरान घरों, विद्यालयों से बाहर निकलकर सुरक्षित खुले जगह पर जाएं, जहाँ पर पेड़, बिजली के पोल, मोबाइल टावर, इत्यादि ना हो।

विद्यालय अथवा घर के अंदर हैं तोः

1. फर्श की ओर झुक जाएं। किसी मजबूत टेबल या कोई और फर्नीचर के नीचे छुप जाएं। जब तक कंपन बंद ना हो जाए, उसे पकड़कर वही बने रहें। अगर आपके पास टेबल– डेस्क आदि एक नहीं हो तो अपने चेहरे और सिर को अपनी बांहों से ढँक लें और कमरे के अंदर किसी कोने में दुबक कर बैठ जाएं। कंपन शांत होने के उपरांत पंक्ति बंद होकर खुले मैदान में चले जाएं।
2. शीशे की खिड़की, बाहर के दरवाजे और दीवार या बिजली से जुड़े उपकरणों या फर्नीचर जैसे सामानों जिसे गिरने का डर हो, उससे दूर रहें।
3. अगर दरवाजे का चौखट आपके नजदीक हो और आप उसकी मजबूती को लेकर आश्वस्त हो तो चौखट के पास शरण लें।
4. जब तक कंपन बंद नहीं हो जाता और बाहर निकाल निकलना सुरक्षित नहीं हो जाता तब तक अंदर ही रहे। भूकंप के दौरान एलिवेटर (बिजली से चालित सीढ़ी) अथवा लिफ्ट का इस्तेमाल नहीं करें।
5. यदि कंप्यूटर रूम अथवा लैब में हो तो तुरंत बिजली के मेन स्विच बंद कर बाहर चले जायें।

अगर बाहर हो तो

1. जहाँ हैं वहीं बने रहें। मकानों स्ट्रीट लाइट बिजली के तार से दूर चले जाएं।
2. अगर चलते हुए वाहन में हैं तो यथासंभव जल्द से जल्द रुक जाएं एवं वाहन में बैठे रहे। किसी मकान के पास, रास्ता पार करने वाली जगह, या बिजली के तार के नजदीक या उसके नीचे रुकने से बचें।

याद रखेंः झुको, ढँको, पकड़ो

चौथा शनिवार :

बाल–शोषण एवं छेड़छाड़

1. सुरक्षित एवं असुरक्षित स्पर्श को पहचानें।
2. कोई किसी भी प्रकार के शारीरिक या मानसिक उत्पीड़न करे तो उसकी शिकायत विश्वासपात्र शिक्षक/शिक्षिका/ सहेली/ मीनामंच/बालसंसद/पुलिस /परिवार के सदस्य आदि से करें।
3. यदि आपके किसी साथी के साथ दुव्यर्वहार होता है तो तुरंत चाइल्ड हेल्पलाइन न0 **1098** पर संपर्क करें और इसकी सूचना स्थानीय पुलिस को देकर पीड़िता की सहायता करें।
4. अश्लील कृत्यों या पुस्तकों को न पढ़ें।
5. सोशल मीडिया का उपयोग सावधानीपूर्वक करें।

पाँचवां शनिवार :

स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

1. प्रत्येक दिन दाँतों की सफाई करें।
2. प्रत्येक दिन स्नान करने के बाद स्वच्छ कपड़े पहनें तथा बालों को कंघी करें।
3. अंडरगारमेंट्स को प्रतिदिन साबुन से धोना चाहिए तथा सप्ताह में कम से कम एक बार अंडरगारमेंट्स को डिटॉल घुले पानी में धोकर धूप में अच्छी तरह सूखाना चाहिए।
4. हाथ हमेशा साफ रखें। नाखून कटा होना चाहिए।
5. कूड़े को हमेशा कूड़ादान में डालें।
6. घर और विद्यालय परिसर को स्वच्छ रखने में सहयोग करें।
7. खुले में शौच नहीं करें। इससे बीमारियां फैलती है। शौच के बाद हाथ साबुन से धोयें।
8. भोजन करने के पहले और बाद में हाथ साबुन से धोयें।
9. फास्ट फूड या जंक फूड ना खायें। ये मोटापे और बीमारियों को जन्म देता है।
10. पैकेट या बंद खाद्य पदार्थ खरीदने से पहले उसके उत्पादन की तिथि तथा वैधता की जाँच कर लें।
11. भोजन में दाल, हरी पत्तेदार सब्जियों ओर मौसमी फलों को प्राथमिकता दें।
12. भोजन में पौष्टिक पदार्थों को लें। संतुलित आहार जरूरी है।
13. खुले तथा बासी भोजन न करें।
14. भोजन या पेय पदार्थ को ढँक कर रखें।
15. भंडार गृह में चुहे, कॉकरोच, फफूँद आदि न पनपने दें। उसे साफ–सुथरा रखें।
16. अपने विद्यालय, रसोईघर के आस–पास गंदगी न जमा होने दें।
17. विद्यालय, घरों में कहीं भी वर्षा का पानी या नाली का पानी जमा न होने दें।
18. यत्र–तत्र न थुकें तथा दूसरों को भी ऐसा करने से मना करें।

कोविड –19 से बचाव

1. किसी वस्तु को छूने के उपरांत हाथों को साबुन से धोयें अथवा सेनेटाइजर से हाथों को सेनेटाइज करें।
2. साफ और सुरक्षित मास्क का नियमित उपयोग करें।
3. मास्क को प्रतिदिन साबुन से धोयें।
4. दूसरे व्यक्ति से 3–4 फीट की दुरी बना कर रहें।
5. भीड़–भाड़ वाले स्थानों, सार्वजनिक स्थानों पर जाने से बचें।
6. सार्वजनिक वाहन के स्थान पर निजी वाहन का प्रयोग करें।
7. बुखार, खांसी, तबीयत खराब होने पर अथवा किसी प्रकार की संदेह की स्थिति में डॉक्टर को कॉल करें।
8. ऑनलाइन कार्य/ऑनलाइन पठन कार्य को बढ़ावा दें।
9. सरकार द्वारा जारी गाइडलाइन का पालन करें।
10. कोविड–19 से बचाव के लिए टीकाकरण अवश्य करवायें।
11. यत्र–तत्र न थुकें।
12. कोविड–19 के रोगियों से दुरी बनाकर रहें तथा रोगियों को आइसोलेशन में रखें।
13. शारीरिक इम्युनिटी बढ़ाने के लिए तुलसी, अदरक, गिलोय आदि का काढ़ा पियें।
14. गर्म पेय पदार्थ (गर्म पानी, गर्म काढ़ा, चाय आदि) का सेवन करें।
15. अपने घर को कीटाणु मुक्त रखने के लिए सेनेटाइज करते रहें।

Teachers of Bihar

The Change Makers

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और शैक्षिक बेहतरी के लिए शिक्षक, सरकार और शिक्षा से जुड़े तमाम हिताधिकारियों के द्वारा अनेकानेक प्रयास किये जा रहे हैं। विशेष रूप से शिक्षकों के द्वारा अनेक पहल, हस्तक्षेप और नवाचार किये जा रहे हैं। **Teachers of Bihar** एक ऐसा मंच है जो शिक्षकों एवं शिक्षा से जुड़े सभी लोगों के द्वारा किये जा रहे शैक्षिक प्रयासों को साझा करने, नवाचारों से सीखने और लागू करने का अवसर और पहचान प्रदान करता है। **Teachers of Bihar** शिक्षको द्वारा, शिक्षकों के लिए, शिक्षकों का एक ऐसा अभिनव मंच है जो आपके सार्थक प्रयासों को पहचान और दिशा प्रदान करते हुए आपको और सभी को गौरवान्वित होने का अनेकानेक अवसर उपलब्ध कराने हेतु कृत संकल्पित है।

दिवस ज्ञान

'दिवस ज्ञान' पत्रिका की औपचारिक शुरूआत 1 जनवरी, 2020 को 'टीचर्स ऑफ बिहार' के माध्यम से की गई थी। तब से नियमित रूप से प्रतिमाह इसका प्रकाशन किया जा रहा है। इसके संकलनकर्ता श्री शशिधर उज्ज्वल, रा0 मध्य विद्यालय, ग्राम–सहसपुर, प्रखंड– बारूण, जिला– औरंगाबाद (बिहार) हैं। श्री उज्ज्वल पूर्व में अपने विद्यालय में रंगीन चॉक के माध्यम से प्रतिदिन किसी खास महापुरूष या जयंती के बारे में बच्चों को बताया करते थे। उनके इस कार्य की जानकारी 'टीचर्स ऑफ बिहार' के संस्थापक को होते ही उन्होंने इनकी प्रतिभा का सम्मान करते हुए इसे एक मासिक संग्रह प्रकाशन का स्वरूप प्रदान करने का विचार रखा। तब से श्री उज्ज्वल जी अपने दिवस ज्ञान संग्रह का लाभ बच्चों को प्रदान करने के लिये कृत संकल्पित हैं।

टीचर्स ऑफ़ बिहार से जुडिए और एक बेहतर, समृद्ध और शैक्षिक रूप से समुन्नत बिहार के नव निर्माण में अपना योगदान दीजिये। टीचर्स ऑफ़ बिहार के विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से जुड़ने के लिए नीचे देखें

टीचर्स ऑफ बिहार वेबसाइट
www.teachersofbihar.org
टीचर्स ऑफ बिहार फेसबुक पेज
http://www.facebook.com/teachersofbihar
टीचर्स ऑफ बिहार फेसबुक ग्रुप
https://www.facebook.com/groups/1907206889337788/
टीचर्स ऑफ बिहार ट्विटर
https://twitter.com/teachersofbihar
टीचर्स ऑफ़ बिहार इंस्टाग्राम
https://instagram.com/teachersofbihar
टीचर्स ऑफ बिहार ब्लॉग
https://teachersofbihar.blogspot.com
टीचर्स ऑफ बिहार **Pininterest**
https://in.pinterest.com/Teachersofbihar/
टीचर्स ऑफ बिहार **LinkedIn**
https://www.linkedin.com/company/teachersofbihar
टीचर्स ऑफ बिहार **Telegram group**
https://t.me/TeachersofBiharofficial
ToB कुटुम्ब ऐप
https://kutumb.app/teachers-of-bihar?ref=RUC1I
ToB Koo ऐप
https://www.kooapp.com/profile/teachersofbihar
टीचर्स ऑफ बिहार यूट्यूब चैनल
https://www.youtube.com/c/teachersofbihar
टीचर्स ऑफ़ बिहार फ्री मेंबरशिप
https://goo.gl/forms/NXvJIfBizTHcL4Vr1
टीचर्स ऑफ बिहार कम्युनिटी फोरम
https://forum.teachersofbihar.org
ToB School on mobile ग्रुप
https://www.facebook.com/groups/238842044593684/
ToB शिक्षाश्रुति पॉडकास्ट चैनल
https://anchor.fm/teachers-of-bihar

Teachers of Bihar

The Change Makers

टीचर्स ऑफ बिहार के वेबसाइट्स पर जरूर पढ़ें:

दिवस ज्ञान :
https://www.teachersofbihar.org/publication/diwasgyan/

ज्ञान दृष्टि :
https://teachersofbihar.org/publication/gyandrishti

दिवस विशेष :
https://teachersofbihar.org/publication/divas-vishesh

बाल मंच :
https://teachersofbihar.org/publication/balmanch

ई-मैग्जीन :
https://teachersofbihar.org/publication/emagazine

टीचर्स ऑफ बिहार के स्कूल ऑन मोबाइल (SoM) वेबसाइट :
https://som.teachersofbihar.org

ToB कॉन्टेस्ट :
https://Contest.teachersofbihar.org

ToB क्विज :
https://quiz.teachersofbihar.org/

पद्य पंकज वेबसाइट (कविताओं का संसार) :
https://padyapankaj.teachersofbihar.org/

गद्य गुंजन वेबसाइट (कहानियों की दुनिया) :
https://gadyagunjan.teachersofbihar.org/

ToB योगदूत वेबसाइट :
https://yogdoot.teachersofbihar.org/